श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

अगस्त : 97

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

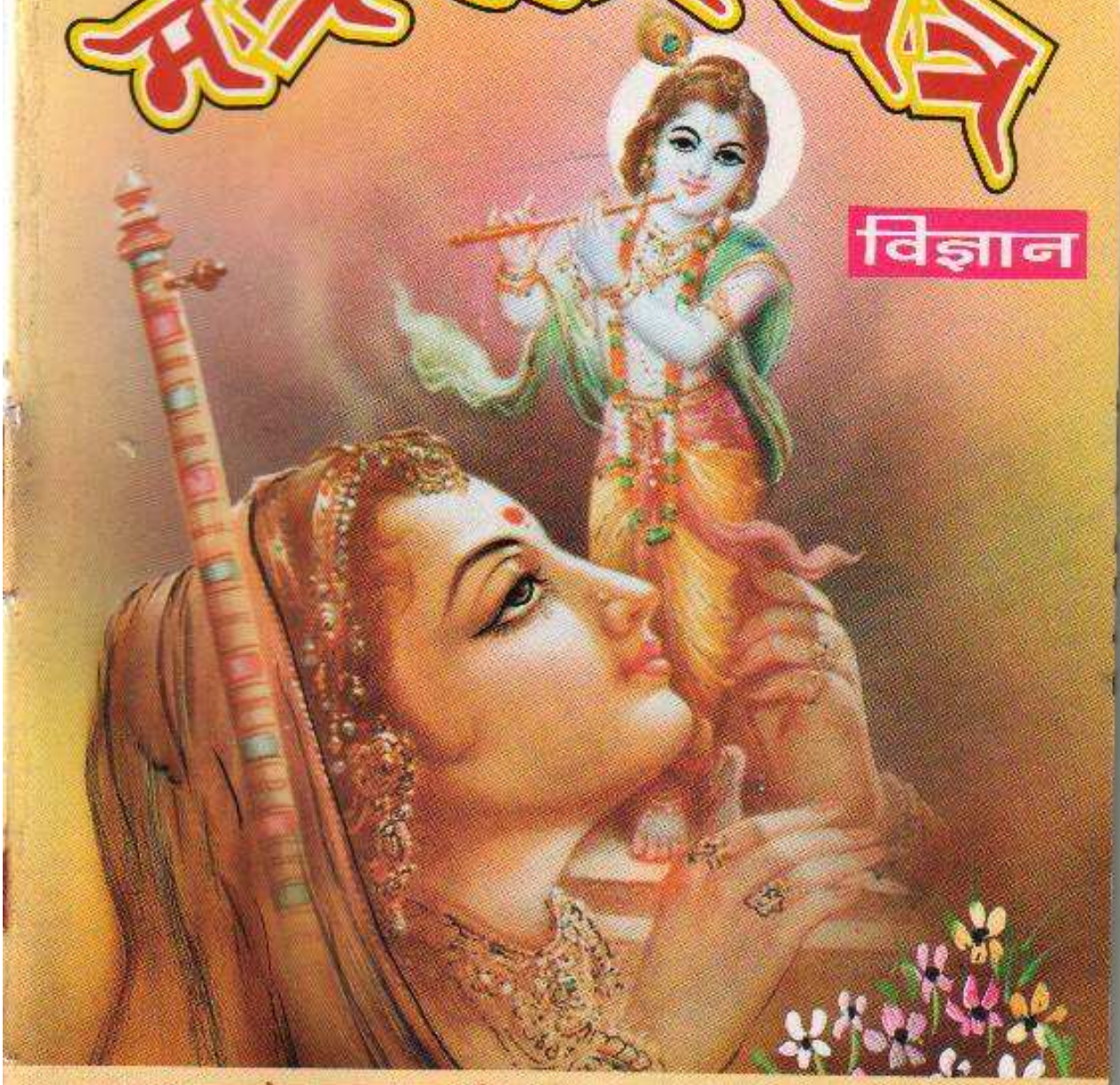

- शास्त्रोक्त कृष्ण पूजन विधान
- धन त्रयोदशी
- मातंगी महाविद्या दीक्षा
- शारदीय नवरात्रि
- यंत्रों में सुखी जीवन का रहस्य

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वत:
मानव जीवन की सर्वांगीणमुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गुह्य विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

वर्ष 17 अंक 8
अगस्त 1997 पृष्ठ 84

सद्गुरुदेव

श्री सार्थक्यं नारायण: 3
गुरु मेरी आस्था 46

दीक्षा

मातंगी महाविद्या दीक्षा 53

स्तम्भ

एक दृष्टि में 23
मैं समय हूं 29
काल चक्र 31
पाठकों के पत्र 32
नक्षत्रों की वाणी 58
इस मास में विशेष 64
वराहमिहिर ने कहा 68
साधक साक्षी हैं 76

तथ्य

हम जब जायेंगे 25

साधना

धन त्रयोदशी 14
जब अघोरी ने 19
सिद्धि 27
शारदीय नवरात्रि 30
दीपावली पर्व पर 35
पापांकुशा एकादशी 48
यंत्रों में सुखी जीवन 60
इबोपी 69
दीपावली 72
चन्द्रज्योत्सना अप्सरा 77

पूजन

शास्त्रोक्त श्रीकृष्ण पूजन 44

विशेष

राधा-कृष्ण के चरण 16
पारद शिवलिंग 65
कृष्णस्तु भगवान स्वयं 81

चिकित्सा

एनीमिया 74

प्रधान सम्पादक
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक एवं संयोजक
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

सम्पादक मण्डल
डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, श्री गणेश बटाणी, श्री गुरु सेवक, श्री वसन्त पाटिल, श्री अनिल जोशी, श्री प्रवीण जोशी, श्री रोजन जेम्स, श्री एस. सी. कालरा, श्री एम. आर. वशिष्ठ

वित्तीय सलाहकार
श्री अरविन्द श्रीमाली

वर्किंग सेक्शन
श्रीमती कनक पाण्डेय, श्री अजय कुमार मिश्रा, सुश्री विजयलक्ष्मी, श्री जय सिंह

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम,
306 कोहाट एनक्लेव,
पीतमपुरा, दिल्ली 110034,
फोन : 011-7182248,
फैक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-342001 (राज०)
फोन : 0291-32209,
फैक्स : 0291-32010

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 195/-

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा विभा पब्लिकेशन्स प्रा. लिमिटेड D-160 II, सेक्टर VII, नोएडा से मुद्रित तथा मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक पुस्तकें साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में '95/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है, यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बंद करना पड़े, तो आजीवन सदस्यता भी उस दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि लाभ की जिम्मेवारी साधक को स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

प्रेमाञ्जनच्छुरित भक्तिविलोचनेन,
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपम्;
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

— ब्रह्म संहिता 5-38

प्रेम रूपी अञ्जन से सुशोभित, भक्ति रूपी नेत्र से संत जन अपने हृदय में दिव्य गुण तथा स्वरूप वाले जिस श्याम सुन्दर का दर्शन किया करते हैं, उस आदि पुरुष गोविन्द का मैं भाव पूर्ण हृदय से नमन करता हूं।

आखिरी सत्य

एक बार सुकरात अपने शिष्यों को ज्ञान दे रहे थे और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी कर रहे थे। जब वे अपनी बात समाप्त कर चुके, तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा — यदि किसी के मन में अब भी कोई संशय या प्रश्न शेष हो, तो वह पूछ सकता है।

यह सुन कर एक शिष्य ने, जो उनके पास काफी समय से रह रहा था और अपने आपको काफी ज्ञानवान भी समझने लग गया था, उसने कहा — गुरुजी! आप मुझे बताइये, कि चांद में धब्बा क्यों है? मैं यह भी जानना चाहता हूं, कि दीपक के नीचे अंधेरा क्यों होता है?

जब सुकरात ने इन दोनों प्रश्नों को सुना, तो वे अत्यन्त व्यथित हो गए और दुःखी मन से कहा — तुम्हें मेरे पास रहते इतना समय हो गया, लेकिन अभी भी तुम ज्ञान की पहली सीढ़ी पर अटके हुए हो।

यह सुन कर वह शिष्य अत्यन्त दुःखी हुआ, उसे ऐसी किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं थी। वह अपने आपको काफी ज्ञानवान मानता था, अतः इससे उसके अहं को भी ठेस पहुंची।

उसने सुकरात से कहा — मैं इतने समय से आपसे ज्ञान अर्जित कर रहा हूं, फिर भी आपने यह क्यों कहा, कि मैं अभी ज्ञान की पहली सीढ़ी पर अटका हुआ हूं। आपके इन शब्दों से मुझे अत्यन्त दुःख पहुंचा है।

सुकरात ने जवाब दिया — मुझे भी तुम्हारे सवाल से बहुत दुःख पहुंचा है। काश! कि तुमने पूछा होता, कि चांद में चांदनी क्यों है? दीपक में इतनी रोशनी क्यों है?

— फिर मैं तुम्हें जीवन के अनन्त रहस्यों में से कुछ मोती चुन कर देता, फिर मैं तुम्हें बताता, कि जीवन क्या होता है? जीवन का अर्थ क्या है?

— क्योंकि जब तुम किसी की बुराइयों पर ध्यान देते हो, बुराइयों पर चिन्तन करते हो, तो जाने-अनजाने में ही उन बुराइयों के कुछ अंश अपने अन्दर उतार लेते हो और फलस्वरूप तुम्हारे अन्दर बुराइयां बढ़ती जाती हैं . . . और जब तुम किसी की अच्छाइयों पर ध्यान देते हो, अच्छाइयों का चिन्तन करते हो, तो फिर तुम्हारे अन्दर भी अच्छाइयों में वृद्धि होती जाती है।

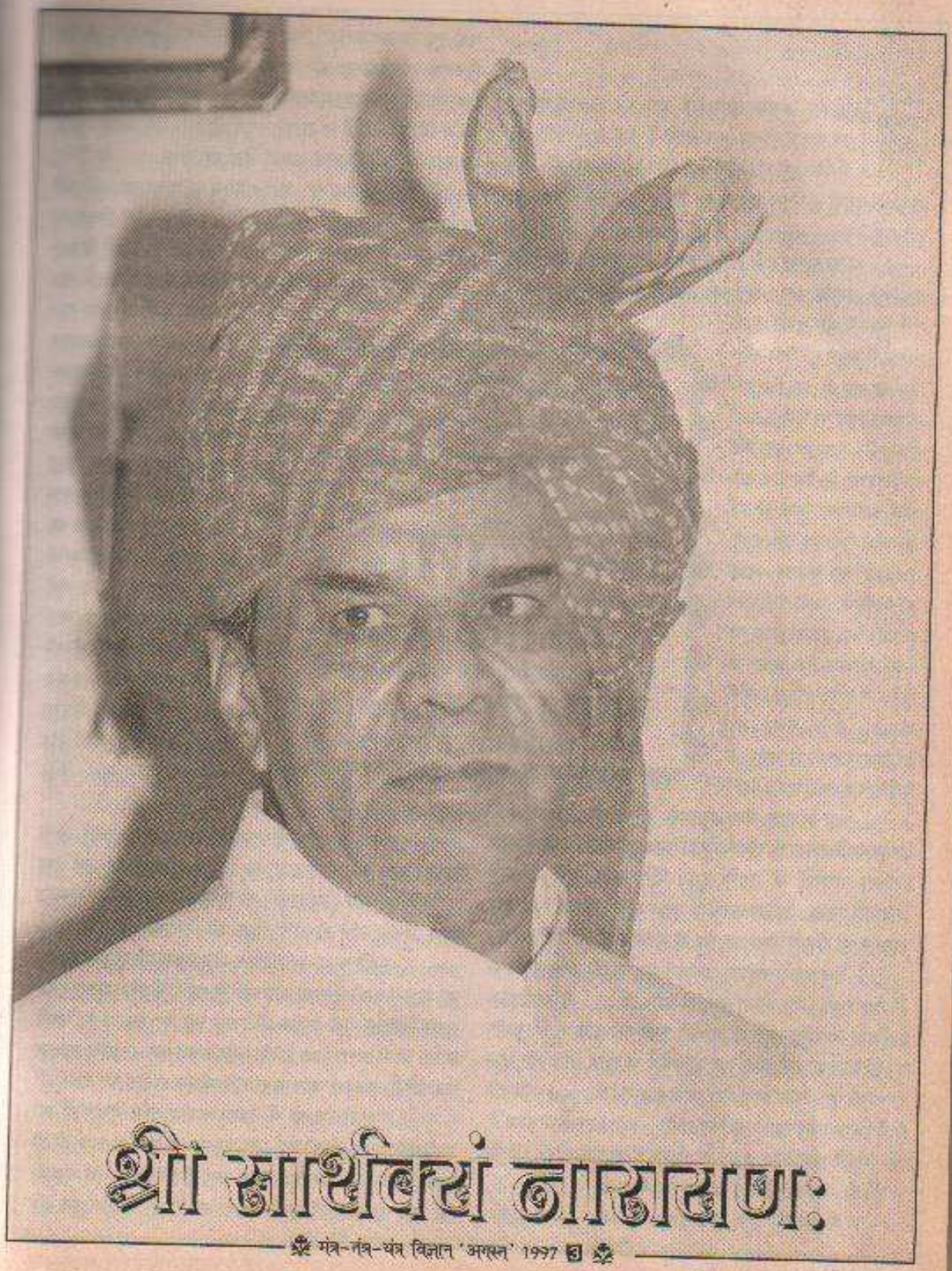

श्री सार्थक्यं नारायणः

नए-नए साधक के मन में कुछ संशयात्मक प्रश्न, जो सहज ही घर कर बैठते हैं, वह है –

मैं किस मंत्र को साधूं? कौन सी साधना मेरे लिए अनुकूल रहेगी? किस देवता को मैं अपने हृदय में इष्ट का स्थान दूं?

ये प्रश्न सहज हैं, परन्तु इनके उत्तर इतने सहज प्रतीत नहीं होते, क्योंकि प्रथम तो इनके उत्तर कहीं भी स्पष्ट भाषा में नहीं मिलते और दूसरे आज विश्व में बहुत ही कम लोग शेष रह गए हैं, जो कि इस गम्भीर विषय पर रोशनी डाल सकते हैं। साथ ही यह बात भी निश्चित है, कि जब तक आप अत्यधिक व्यग्र हो कर जी-जान से चेष्टा नहीं करते, तब तक ऐसे पारंगत व्यक्ति का सान्निध्य प्राप्त नहीं कर सकते। क्या इसका अर्थ यह निकाला जाय, कि अज्ञान के तिमिर में जीना ही हम सबका प्रारब्ध है? क्या इस दुविधाजनक स्थिति से निकलने का कोई उपाय नहीं?

ॐ

परम

तत्त्वाय

नारायणाय

गुरुभ्यो नमः।।

यह शायद मेरा सुनहरा सौभाग्य ही था, कि हिमालय विचरण के दौरान मुझे विश्व प्रसिद्ध तंत्र शिरोमणि त्रिजटा अघोरी के दर्शन हुए। मैंने उनके बारे में कई आश्चर्यजनक, अविश्वसनीय तथ्य सुन रखे थे और इस बात से भी मैं परिचित था, कि वे गुरुदेव के प्रिय शिष्य हैं।

उस पहाड़ स्वरूप देहधारी मनुष्य के प्रथम दर्शन से ही मेरा सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा था . . . मैं हर्षातिरेक एवं एक अवर्णित भय से थरथरा उठा, मेरे पांव मानों जमीन पर कीलित हो गए, मेरा मुंह आश्चर्य से खुल गया और एक क्षण मुझे ऐसा लगा मानों मेरी सांस रुक गई है . . . इस स्थिति में मैं कितनी देर रहा, मुझे याद नहीं . . . हां! इतना अवश्य है, कि जब मैं प्रकृतिस्थ हुआ, तो वे मुस्कुराहट बिखेरते हुए मेरे सामने थे, जबकि मैं एक चट्टान पर बैठा था . . .

मैं दावे के साथ कह सकता हूं, कि कोई भी व्यक्ति, यहां तक कि तथाकथित 'सिंह के समान निडर' पुरुष भी अकेले में उनके सामने प्रस्तुत होने में संकोच करेगा . . . इतना अधिक तेजस्वी एवं भयावह स्वरूप है उनका। शायद मैं यह जानता था, कि वे मेरे गुरु भाई हैं या शायद उनके चेहरे पर उस समय ममत्व के भाव थे, जो मैं उनके सामने बैठा रह सका . . . थोड़ी देर उनसे बात हुई, तो मेरा रहा-सहा संकोच भी जाता रहा . . . उन्हें गुरुदेव द्वारा 'टेलीपैथी' से मुझसे मिलने का आदेश मिला था (इस भ्रमण के दौरान यह मेरी आंतरिक इच्छा थी, कि मैं त्रिजटा से मिलूं और शायद गुरुदेव ने इसे जान लिया था) और उन्हें मेरा मार्गदर्शन करने को कहा था।

उस समय मेरा मन भी इस प्रकार के संशयात्मक प्रश्नों से ग्रस्त था और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए मैं उनसे जूझता रहता था। पर मुझे जल्दी ही इस बात का एहसास हो गया था, कि मैं एक हारती हुई बाजी खेल रहा हूं और मेरे मस्तिष्क-पटल पर कई नवीन प्रश्न दस्तक देने लगे – मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मुझे क्या करना चाहिए? मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ पथ कौन सा है? आदि-आदि।

जब मैंने अपनी दुविधा त्रिजटा के समक्ष रखी, तो वे ठहाका लगा कर हंसने लगे, मानों मेरी अज्ञानता पर उन्हें दया आई हो . . . और फिर उन्होंने जो कुछ भी तथ्य मेरे आगे स्पष्ट किये, उनके आगे तो तीनों लोक की निधियां भी तुच्छ हैं।

उन्होंने कहा – ''प्रत्येक मनुष्य इस प्रकार की समस्या का सामना कभी न कभी करता ही है, परन्तु केवल प्रज्ञावान एवं सूक्ष्म विवेचन युक्त व्यक्ति ही इससे पार जा सकता है; बाकी व्यक्ति इसमें उलझ जाते हैं और जीवन का एक स्वर्णिम अवसर गंवा देते हैं, अत्यन्त सामान्य रूप से जीवन व्यतीत कर देते हैं।''

''हमारे शास्त्रों में तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं की उपस्थिति स्वीकार की गई और उन सबके एकत्व रूप को ही 'परम सत्य' या 'परब्रह्म' कहा गया है। इसका अर्थ यह है, कि यदि साधक को पूर्णता प्राप्त करनी है, तो उसे इन 33

करोड़ देवी-देवताओं को सिद्ध करना पड़ेगा; परन्तु यह तभी सम्भव है, जब व्यक्ति लगातार पृथ्वी पर अपने पूर्व जन्मों की स्मृति के साथ हजारों जन्म ले अथवा वह हमेशा-हमेशा के लिए अजर-अमर हो जाये . . .''

''परन्तु ये दोनों ही रास्ते बड़े पेचीदा और असम्भव सी लगने वाली कठिनाइयों से युक्त हैं। इसके अलावा तुम्हें ज्ञान नहीं होता, कि कब तुम्हारी छोटी सी त्रुटि की वजह से तुम्हारी वर्षों की तपस्या नष्ट हो जायेगी और तुम ऊंचाई से वापस साधारण स्थिति पर आ गिरोगे।''

''मैं अत्यधिक लम्बे समय से हिमालय में तपस्यारत हूं और असम्भव कही जाने वाली साधनाएं भी सिद्ध कर चुका हूं। इतने वर्षों के अनुभव के बाद यह मेरी धारणा है, कि सभी मंत्रों में 'गुरु मंत्र' सर्वश्रेष्ठ मंत्र है, सभी साधनाओं में 'गुरु साधना' अद्वितीय है और गुरु ही सभी देवताओं के सिरमौर हैं। वे इस समस्त ब्रह्माण्ड को गतिशील रखने वाली आदि शक्ति हैं और कुछ शब्दों में कहा जाय, तो वे 'साकार ब्रह्म' हैं।''

मैं अत्यधिक लम्बे समय से हिमालय में तपस्यारत हूं और असम्भव कही जाने वाली साधनाएं भी सिद्ध कर चुका हूं। इतने वर्षों के अनुभव के बाद यह मेरी धारणा है, कि सभी मंत्रों में 'गुरु मंत्र' सर्वश्रेष्ठ मंत्र है, सभी साधनाओं में 'गुरु साधना' अद्वितीय है और गुरु ही सभी देवताओं के सिरमौर हैं। वे इस समस्त ब्रह्माण्ड को गतिशील रखने वाली आदि शक्ति हैं और कुछ शब्दों में कहा जाय, तो वे 'साकार ब्रह्म' हैं।

मेरे चेहरे पर आश्चर्य की लकीरें उभर आईं, जिसे देख कर उन्होंने कहा — ''तुम्हें यों अवाक् होने की जरूरत नहीं, मुझे इस बात का पूरा ज्ञान है, कि मैं क्या कह रहा हूं। भ्रमित तो तुम लोग हुए हो, तुम हर चीज को बिना गूढ़ता से निरीक्षण किये ही मान लेते हो, तभी तो आज विभिन्न देवी-देवताओं की साधनाएं तुम्हारे मन-मस्तिष्क को इतना लुभाती हैं। तुम्हारी स्थिति उस मछली की तरह है, जो कि नदी को ही सक्षम और अनन्त समझती है, क्योंकि सागर की विशालता से अनभिज्ञ होती है।''

''भगवान शिव के अनुसार सभी देवी-देवता, पवित्र नदियां एवं तीर्थ गुरु के दक्षिण चरण के अंगुष्ठ में स्थित हैं, वे ही अध्यात्म के आदि, मध्य एवं अंत हैं, वे ही निर्माण, पालन, संहार एवं दर्शन, योग, तंत्र-मंत्र आदि के स्रोत हैं, उनकी अनन्तता जानी नहीं जा सकती। वे सभी प्रकार की उपमाओं से परे हैं . . . इसलिए यदि कोई पूर्णता प्राप्त करने का इच्छुक है, यदि कोई ईमानदारी से 'दिव्य बोध' प्राप्त करने का इच्छुक है, तो उसे एक क्षण भी गंवाये बिना सद्गुरु के चरण कमलों की शरण ग्रहण कर लेनी चाहिए और उनकी साधना एवं मंत्र को जीवन में उतारने की चेष्टा करनी चाहिए।''

''गुरु मंत्र शब्दों का समूह मात्र न हो कर समस्त ब्रह्माण्ड के विभिन्न आयामों से युक्त उसका मूल तत्त्व होता है। अतः गुरु साधना में प्रवृत्त होने से पहले यह उपयुक्त होगा, कि हम गुरु मंत्र का बाह्य और गुह्य दोनों ही अर्थ भली प्रकार से समझ लें।''

''पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त गुरु मंत्र का क्या अर्थ है?'' — मैंने बीच में ही टोकते हुए पूछा।

एक लम्बी खामोशी . . . जो इतनी लम्बी हो गई थी, कि खलने लगी थी . . . उनके चेहरे के भावों से मुझे अनुभव हुआ, कि वे निश्चय और अनिश्चय के बीच झूल रहे हैं। अंततः उनका चेहरा कुछ कठोर हुआ, मानों कोई निर्णय ले लिया हो। अगले ही क्षण उन्होंने अपने नेत्र मूंद लिये, शायद वे टेलीपैथी के माध्यम से गुरुदेव से सम्पर्क कर रहे थे; लगभग दो मिनट के उपरान्त मुस्कुराते हुए उन्होंने आंखें खोल दीं।

''इस मंत्र के मूल तत्त्व की तुम्हारे लिये उपयोगिता ही क्या है? मंत्र तो तुम जानते ही हो, इसके मूल तत्त्व को छोड़ कर इसकी अपेक्षा मुझसे आकाश गमन सिद्धि, संजीवनी विद्या अथवा अटूट लक्ष्मी ले लो, अनन्त सम्पदा ले लो, जिससे तुम सम्पूर्ण जीवन में भोग और विलास प्राप्त करते रहोगे . . . ऐसी सिद्धि ले लो, जिससे किसी भी नर अथवा नारी को वश में कर सकोगे।''

एक क्षण तो मुझे लगा, कि उनके दिमाग का कोई पेंच ढीला है, पर मेरा अगला विचार इससे बेहतर था। मैंने सुना था, कि उच्चकोटि के योगी या तांत्रिक साधक को श्रेष्ठ, उच्चकोटि का ज्ञान देने से पूर्व उसकी परीक्षा लेने हेतु कई

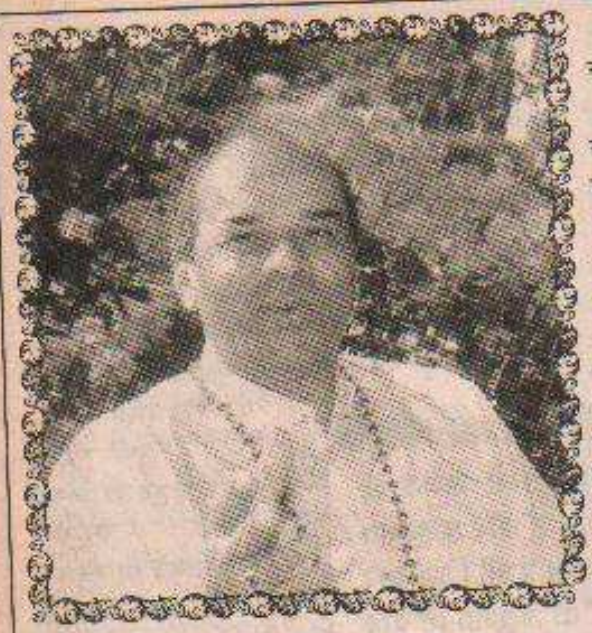

प्रकार के प्रलोभन देते हैं, कई प्रकार के चकमे देते हैं . . . वे भी अपना कर्त्तव्य बड़ी खूबसूरती से निभा रहे थे . . .

करीब पांच मिनट तक उनकी मुझे बहकाने की चेष्टा पर भी मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा, तो उन्होंने एक लम्बी श्वास ली और कहा –

''अच्छा ठीक है। बोलो क्या जानना चाहते हो?''

''सब कुछ'' – मैं चहक उठा – ''सब कुछ अपने गुरु मंत्र एवं उसके मूल तत्त्व के बारे में। मेरा नम्र निवेदन है, कि आप कुछ भी छिपाइयेगा नहीं।''

आखिर में उन्होंने आश्वस्त हो कर निम्न बातें बताईं –

''हमारा गुरु मंत्र 'ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः' का बाह्य अर्थ है, कि – 'हे नारायण! आप सभी तत्त्वों के भी मूल तत्त्व हैं और सभी साकार और निर्विकार शक्तियों से भी परे हैं, हम आपको गुरु रूप में श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।' . . . यह मंत्र किसी के द्वारा रचित नहीं है, जब गुरुदेव के चरण पहली बार दिव्य भूमि सिद्धाश्रम में पड़े, तो स्वतः ही दसों दिशाएं और सारा ब्रह्माण्ड इस तेजस्वी मंत्र की ध्वनि से गुञ्जरित हो उठा था, ऐसा लग रहा था, मानों सारा ब्रह्माण्ड उस अद्वितीय अनिवर्चनीय विभूति का अभिनन्दन कर रहा हो . . .''

''उसी दिन से गुरुदेव अपने शिष्यों को दीक्षा देते समय यही मंत्र प्रदान करते हैं, जो कि वास्तव में ब्रह्माण्ड द्वारा गुरुदेव के वास्तविक स्वरूप का प्रकटीकरण है।''

''तो क्या वे . . . '' – मैं अपने आपको रोक न सका।

''श ऽ ऽ ऽ . . . '' उन्होंने ने अपने मुंह पर उंगली रखते हुए मुझे आलोचनात्मक दृष्टि से देखा – ''बीच में मत बोलो, बस ध्यानपूर्वक सुनते रहो''

मुझे आंखें नीचे किये सिर हिलाते देख कर वे आगे बोले – ''यह सोलह बीजाक्षरों से युक्त मंत्र उन षोडश दिव्य कलाओं को दर्शाता है, जिसमें गुरुदेव परिपूर्ण हैं। ये ब्रह्माण्ड की सर्वश्रेष्ठ अनिवर्चनीय सिद्धियों के भी प्रतीक हैं। अब मैं एक-एक करके इस मंत्र के हर बीज को तुम्हारे सामने स्पष्ट करूंगा और उसमें निहित शक्तियों के बारे में बताऊंगा। अच्छा, जरा तुम गुरु मंत्र बोलो तो!''

''ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।''

''बहुत खूब!'' उन्होंने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा – ''अच्छा, तो सबसे पहले हम **पहला बीज 'प'** लेते हैं। क्या तुम इसके बारे में बता सकते हो? नहीं, तो मैं ही बताता हूं। **इसका अर्थ है – 'पराकाष्ठा'**, अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में, हर आयाम में सर्वश्रेष्ठ सफलता, ऐसी सफलता जो और किसी के पास न हो। इस बीज मंत्र के जपने मात्र से एक सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन को सफलता की अनछुई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है, चाहे वह भौतिक जीवन हो अथवा आध्यात्मिक। ऐसे व्यक्ति को स्वतः ही अटूट धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, मान, सम्मान प्राप्त हो जाता है। वह भीड़ में भी 'नायक' ही रहता है, वह मानव जाति का 'मार्गदर्शक' कहलाता है और आने वाली पीढ़ियां उसे 'युगपुरुष' कह कर पूजती हैं।''

''इसके द्वारा व्यक्ति को सूक्ष्म एवं दिव्य दृष्टि भी प्राप्त हो जाती है और वह 'काल ज्ञान' में भी पारंगत हो जाता है। अतः वह आसानी से किसी भी व्यक्ति, सभ्यता अथवा देश के भूत, भविष्य और वर्तमान को आसानी से देख लेता है।''

''वाह!'' – मेरे मुंह से सहज ही निकल पड़ा।

''हां, पर . . . पर क्या तुम और भी जानना चाहोगे या तुम इतने से ही खुश हो'' – उनकी आंखों में शरारत झलक रही थी।

''नहीं! रुकिये मत! मैं सब कुछ जानना चाहता हूं।''

वे मेरी परेशानी में प्रसन्नता महसूस कर रहे थे और मेरी व्यग्रता उन्हें एक संतोष सा प्रदान कर रही थी।

''तो अब हम **दूसरे बीज 'र'** को लेते हैं। वह **शरीर में स्थित 'अग्नि'** को दर्शाता है, जिसका कार्य व्यक्ति को रोग, दुष्प्रभावों आदि से बचाना है। इसके अलावा वह इच्छित

व्यक्तियों को 'रति सुख' (काम) प्रदान करता है, जो मानव जीवन की एक आवश्यकता है।''

''यह सूक्ष्म अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो कि ऊपर बताई गई अग्नि से भिन्न होती है। इसका कार्य व्यक्ति के चित्त से उसकी सारी कमियों और विकारों को जला कर पवित्र करना है। ये विकार 'पंच विकारों' के नाम से जाने जाते हैं। अच्छा जरा बताओ तो, वे कौन-कौन से हैं?''

''काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार।''

''बिल्कुल सही। इन पांच मुख्य व्याधियों अथवा विकारों को नष्ट करने से मानव चेतना का पवित्रीकरण हो जाता है, उसमें दिव्यता आ जाती है और सबसे बड़ी बात यह है, कि सारे ब्रह्माण्ड का ज्ञान उसके मस्तिष्क में स्थित हो जाता है।''

''ऐसा व्यक्ति सबके द्वारा पूजनीय 'अग्नि विद्या' में पारंगत हो जाता है और यदि वह पूर्ण विधि-विधान के साथ सही ढंग से इस बीज मंत्र का अनुष्ठान सम्पन्न कर लेता है, तो वह किसी भी इच्छित अवधि तक जीवित रह सकता है। सरल शब्दों में कहें, तो भीष्म की तरह वह इच्छा मृत्यु की स्थिति प्राप्त कर लेता है।''

''तीसरा बीज है 'म', जो कि 'माधुर्य' को इंगित करता है। माधुर्य का तात्पर्य है – शरीर के अन्दर छिपा हुआ सत् चित् आनन्द, आत्मिक शांति। इस बीज को साध लेने से व्यक्ति के जीवन में, चाहे वह पारिवारिक हो अथवा सामाजिक, एक पूर्ण सामञ्जस्य प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन की सभी बाधाएं एवं परेशानियां समाप्त हो जाती हैं। परिणाम स्वरूप उसे अवर्णित आनन्द की प्राप्ति होती है और वह हर चीज को एक रचनात्मक दृष्टि से देखता है। उसकी संतान उसे आदर प्रदान करती है, उसके सेवक और परिचित उसे श्रद्धा से देखते हैं एवं उसकी पत्नी उसे सम्मान देती है और आजीवन वफादार रहती है। बेशक वह स्वयं भी एक दृढ़ एवं पवित्र चरित्र का स्वामी बन जाता है।''

''चौथा बीज 'त' 'तत्त्वमसि' का प्रतिनिधित्व है, जिसका अर्थ है वह दिव्य स्थिति, जो कि उच्चतम योगी भी प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। तत्त्वमसि का अर्थ है – 'मैं तत्त्व हूं' या 'मैं ही वह हूं'। यह वास्तव में ही एक आध्यात्मिक चैतन्य स्थिति है, जब साधक पहली बार यह एहसास करता है, कि वह ही सर्वव्याप्त, सर्वकालीन एवं सर्वशक्तिशाली आत्मा है और उसमें और परमात्मा (ब्रह्म) में लेश मात्र भी अंतर नहीं है।''

''इस बीज का अनुष्ठान सफलता पूर्वक करने पर

भगवान शिव के अनुसार सभी देवी-देवता, पवित्र नदियां एवं तीर्थ गुरु के दक्षिण चरण के अंगुष्ठ में स्थित हैं, वे ही अध्यात्म के आदि, मध्य एवं अंत हैं, वे ही निर्माण, पालन, संहार एवं दर्शन योग, तंत्र-मंत्र आदि के स्रोत हैं, उनकी अनन्तता जानी नहीं जा सकती। वे सभी प्रकार की उपमाओं से परे हैं . . . इसलिए यदि कोई पूर्णता व 'दिव्य बोध' प्राप्त करने का इच्छुक है, तो उसे एक क्षण भी गंवाये बिना सद्गुरु के चरण-कमलों की शरण ग्रहण कर लेनी चाहिए और उनकी साधना एवं मंत्र को जीवन में उतारने की चेष्टा करनी चाहिए।

व्यक्ति स्वतः ही अध्यात्म की उच्चतम स्थिति पर अवस्थित हो जाता है, यहां तक कि आधिदैविक स्थितियां भी उसके सामने स्पष्ट हो जाती हैं और वह इस बात से अनभिज्ञ नहीं रह जाता, कि वह पूर्ण 'ब्रह्ममय' है। उसे जो उपलब्धियां और सिद्धियां प्राप्त होती हैं, उसका तुम अनुमान भी नहीं कर सकते और न ही उन्हें शब्दों में ढालना सम्भव है। क्या अव्यक्त को व्यक्त किया जा सकता है? उसको तो केवल स्वयं ऐसी स्थिति प्राप्त कर अनुभव किया जा सकता है। बस तुम्हारे लिए इतना समझना काफी है, कि उससे असीमित शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। अच्छा, पांचवां बीज बोलना तो जरा।''

''पांचवां बीज . . . ॐ परम तत्त्वा . . . **'वा'** . . . ''

''हां, यह मानव शरीर में व्याप्त पांच प्रकार की वायु को दर्शाता है, वे हैं – प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान। इन पांचों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर ही व्यक्ति क्रिया योग में पारंगत हो पाता है। 'क्रिया' का अर्थ उस तकनीक से है, जिसे इस्तेमाल कर व्यक्ति इच्छित परिणाम प्राप्त कर लेता है। क्रिया में मुद्राओं, बंधों एवं आसनों का अभ्यास शामिल है, परन्तु यह एक लम्बी और दुस्साध्य प्रक्रिया है, जिसमें कोई ठोस परिणाम प्राप्त करने में कई वर्ष लग सकते हैं।''

''परन्तु इस गुरु मंत्र के उच्चारण से, जिसमें क्रिया योग का तत्त्व निहित है, व्यक्ति इस दिशा में महारत हासिल कर सकता है और अपनी इच्छानुसार कितने ही दिनों की समाधि ले सकता है।''

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

एक वर्ष के लिए पत्रिका सदस्य बनने पर
आपको प्राप्त होगा अत्यन्त दुर्लभ एवं अति

विशिष्ट उपहार

धूमाक्षी गुटिका

जिसे प्राप्त कर आप स्वतः इसकी महिमा का गुणगान करने लगेंगे,
क्योंकि यह आपके समस्त शत्रुओं का मान-मर्दन करने व
आपको अदालती मुकदमों में सफलता दिलाने में सक्षम है। इस
अति विशिष्ट उपहार द्वारा पत्रिका ने तो आपके लिए सौभाग्य का द्वार खोल दिया है
(इस गुटिका को सवा महीने तक स्थापित कर धूप-दीप
दिखायें, मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है, फिर नदी में विसर्जित कर दें।),

यह सौभाग्य आपको प्राप्त होगा पत्रिका सदस्यता प्राप्त कर; यदि आप सदस्य हैं, तो अपने किसी मित्र, सम्बन्धी, रिश्तेदार या स्वजन को सदस्य बनावें और प्राप्त करें यह अद्वितीय उपहार।

अब निश्चय आपको करना है, हम तो
सिर्फ इतना ही परामर्श दे सकते हैं,
कि अपने आपको वञ्चित न करें
इस घर आये सौभाग्य से।

आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड स्पष्ट अक्षरों में भर कर हमारे पास भेज दें . . . शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

यह योजना मात्र 30 दिनों के लिए है	वार्षिक सदस्यता शुल्क – 195/- डाक खर्च अतिरिक्त

सम्पर्क इस पते पर करें

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीपाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

यदि व्यक्ति नित्य गुरु मंत्र का जप करे, तो वह माया जाल को काटने में सफल हो सकता है, जिसमें कि वह जकड़ा हुआ है। स्वतः ही उसके समस्त पाश नष्ट हो जाते हैं और वह 'दिव्य बोध' को उपलब्ध हो जाता है, एक जाग्रत अवस्था प्राप्त कर लेता है। फिर वह समाज में रह कर एवं नाना प्रकार के लोगों में मिल कर भी अपनी आंतरिक पवित्रता एवं चेतना बनाये रखने में सफल होता है, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार एक कमल कीचड़ में खिल कर भी उससे अछूता रहता है।

''इस बीज को साध लेने से व्यक्ति 'लोकानुलोक गमन' की सिद्धि प्राप्त कर लेता है और पलक झपकते ही ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में जा कर वापिस आ सकता है। दूसरी उपलब्धि जो उसे प्राप्त होती है, वह है – 'वर', अर्थात् वह जो कुछ भी कहता है, वह निकट भविष्य में सत्य होता ही है। सरल शब्दों में वह किसी को वरदान या श्राप दे सकता है।''

''परन्तु यह तो एक खतरनाक स्थिति है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता? मेरा मतलब है, कि व्यक्ति किसी का भी अवर्णनीय नुकसान पहुंचा सकता है।''

''अरे बिल्कुल नहीं! क्योंकि इस स्थिति पर पहुंचने पर साधक दया, ममता और मानवीयता के उच्चतम सोपान पर पहुंच जाता है। ऐसे व्यक्ति बिल्कुल लापरवाह नहीं होते और स्वार्थ से कोसों दूर होते हैं। अतः दूसरों को नुकसान पहुंचाने की कल्पना वे स्वप्न में भी नहीं कर सकते। ठीक है न! अब मैं आगे बोलूं?

मैंने हां में सिर हिलाया।

''**अगला बीज है 'य', जिससे बनता है 'यम' (यम-नियम), अर्थात् जीवन को एक सही, पवित्र एवं लय के साथ जीने का तरीका**। इसके द्वारा व्यक्ति को एक अद्वितीय, आकर्षक शरीर प्राप्त हो जाता है और उसका व्यक्तित्व कई गुणा निखर जाता है। जो कोई भी उसके सम्पर्क में आता है, वह स्वतः ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है और उसकी हर एक बात मानने को तैयार हो जाता है।''

''एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि ऐसा व्यक्ति 'यम' (जो यहां यमराज को इंगित करता है) पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है और शाश्वत हो जाता है, साधारण शब्दों में वह मृत्युञ्जय हो जाता है, अमर हो जाता है, मृत्यु कभी उसका स्पर्श नहीं कर सकती . . . मुझे एक बेवकूफ की भांति घूरने की जरूरत नहीं (शायद उसने मेरी आंखों में उभरती संशय की लकीरों को देख लिया था)। गोरखनाथ, वशिष्ठ, हनुमान आदि ने इस उपलब्धि को प्राचीन काल में प्राप्त किया है, यह कोई नवीन स्थिति नहीं।''

वे सत्य ही कह रहे थे।

''**फिर आता है 'ना' यानि 'नाद', 'अनहद नाद' अर्थात् दिव्य संगीत**, एक आनन्दमय, शक्तिप्रद गुञ्जरण, जो कि ऐसे व्यक्ति के आत्म में, जो नित्य गुरु मंत्र का जप करता है, गुञ्जरित होता रहता है। यह नाद वास्तव में व्यक्ति की वास्तविकता पर बहुत निर्भर करता है। उदाहरणतः जो व्यक्ति भक्ति के पथ का कायल हो, उसे साधारणतः बांसुरी जैसी ध्वनि सुनाई देती है, जो भगवान श्रीकृष्ण का प्रिय वाद्य है। इसके अतिरिक्त ज्ञान मार्ग पर अग्रसर होने वाले (ज्ञानी) को अधिकतर ज्ञान स्वरूप भगवान शिव के डमरू का शाश्वत् नाद सुनाई पड़ता है।''

''अद्भुत!'' – मैंने कहा – ''परन्तु क्या यही दो ध्वनियां हैं, जो साधक के समक्ष उपस्थित होती हैं?''

''नहीं ऐसा तो कोई निश्चित मापदण्ड नहीं है, फिर भी ये दो प्रकार के नाद ही मुख्य हैं और अधिकांश सुनाई पड़ते हैं। जो व्यक्ति इस स्थिति पर पहुंच जाता है, वह स्वतः ही संगीत में पारंगत हो जाता है, उसकी आवाज अपने आप सुरीली, मधुरता युक्त और एक आकर्षण लिये हुए हो जाती है। जो कोई भी उसे सुनता है, वह एक अद्वितीय आनन्द वर्षा से सराबोर हो जाता है और सभी परेशानियों से मुक्त होता हुआ असीम शांति अनुभव करता है।''

''**अगला बीज है 'रा' यानि 'रास', जिसका अर्थ है, एक दिव्य उत्सव**, एक अनिवर्चनीय मस्ती, जो कि मानव जीवन की असली पहिचान है। क्या तुम बिना उत्साह, खुशी और जीवन्तता के जीने की कल्पना कर सकते हो? क्या तुम बिना उत्सव और प्रसन्नता के जीवन के विषय में विचार कर सकते हो? नहीं। इसलिए इस बीज मंत्र की मदद से व्यक्ति अपने जीवन में उस तत्त्व को उतार पाने में सफल होता है, जिसके द्वारा उसका सम्पूर्ण जीवन परिवर्तित हो जाता है, दरिद्रता सम्पन्नता में बदल जाती है, दुःख खुशियों में परिवर्तित हो जाते

हैं, शत्रु मित्र बन जाते हैं और असफलताएं सफलताओं में परिवर्तित हो जाती हैं।''

''यदि इसका सूक्ष्म विवेचन किया जाय, तो यह उस गुप्त प्रक्रिया को दर्शाता है, जो द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों पर की गई थी। वास्तव में महारास एक ऐसी प्रक्रिया थी, जिसके द्वारा कुण्डलिनी शक्ति को मूलाधार में स्पन्दित कर ऊपर की ओर अग्रसर किया जाता है। इस बीज के अनवरत जप से व्यक्ति सहज ही भाव समाधि में पहुंच जाता है, वह गुरु में लीन हो जाता है और उसकी कुण्डलिनी पूर्णतः जाग्रत हो जाती है, फलस्वरूप सहगामिनी सिद्धियां जैसे कि परकाया प्रवेश, जलगमन, अटूट लक्ष्मी एवं असीमित शक्ति व्यक्ति को सहज ही प्राप्त हो जाती है।''

ऐसा कहते कहते उन्होंने अपना दाहिना हाथ हवा में उठाया और दूसरे ही क्षण उसमें एक केतली और दो गिलास आ गए। केतली में से वाष्प निकल रही थी। आश्चर्य से मेरा मुंह खुला का खुला रह गया और मैं एक विस्मय से उनकी ओर देखता रह गया। उन्होंने केतली में से कोई तरल पदार्थ गिलासों में डाला और एक गिलास मेरी ओर बढ़ा दिया। वह पेरिस की मशहूर 'क्रीम्ड कॉफी' थी।

''हां, मैं जानता हूं, कि तुम क्या सोच रहे हो?'' — त्रिजटा ने एक चुस्की लेते हुए कहा — ''पर विश्वास करो, यह कोई असामान्य घटना नहीं है, क्योंकि हर व्यक्ति के अन्दर ऐसी शक्तियां निहित हैं, जरूरत है मात्र उनको उभारने की।''

उन्होंने फिर एक चुस्की भरी और तरोताजा हो उन्होंने अपना प्रवचन प्रारम्भ किया — ''**अगला बीज है 'य' और इसका तात्पर्य है 'यथार्थ', अर्थात् वास्तविकता**, सच्चाई, परम सत्य। इस बीज पर मनन करने से व्यक्ति को अपनी न्यूनताओं का भान होता है और वह पहली बार इसके कारण अर्थात् 'माया' के स्वरूप को देखता है और जान पाता है।''

''यदि व्यक्ति नित्य गुरु मंत्र का जप करे, तो वह माया जाल को काटने में सफल हो सकता है, जिसमें कि वह जकड़ा हुआ है। स्वतः ही उसके समस्त पाश नष्ट हो जाते हैं और वह 'दिव्य बोध' को उपलब्ध हो जाता है, एक जाग्रत अवस्था प्राप्त कर लेता है। फिर वह समाज में रह कर एवं नाना प्रकार के लोगों से मिल कर भी अपनी आंतरिक पवित्रता एवं चेतना बनाये रखने में सफल होता है, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार एक कमल कीचड़ में खिल कर भी उससे अछूता रहता है।''

''जनक की तरह . . . !'' — स्वतः ही मेरे मुंह से निकला।

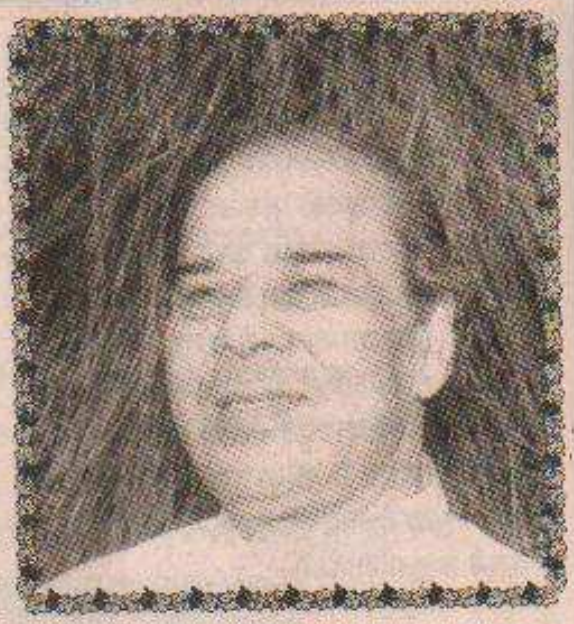

''हां, जनक की तरह, राम, कृष्ण और नानक की तरह . . . !''

''**इसके उपरान्त आता है बीज मंत्र 'ण', जो कि 'अणु' या 'ब्रह्म' की शक्ति अपने में निहित किये हुए है।** ब्रह्म के विषय में एक जगह कहा गया है — '**अणोरणीयाम्**' अर्थात् सूक्ष्मतम पदार्थ अणु से भी हजारों गुणा सूक्ष्म, क्योंकि वह तो अणुओं में भी व्याप्त है।

''तो इस बीज के नित्य उच्चारण से व्यक्ति ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। वह हर पदार्थ में खुद को ही देखता है, हर स्वरूप में खुद के ही दर्शन करता है, चाहे वह पशु हो, व्यक्ति हो अथवा पत्थर। दया, ममता उसकी प्रकृति बन जाते हैं और वह समस्त विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दृष्टि से देखता है। वह किसी की मदद अथवा सेवा करने का कोई भी अवसर नहीं गंवाता और . . .''

''और?''

''और वह स्वतः उन गोपनीय अष्ट सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है, जो कि ग्रंथों में वर्णित हैं। अणिमा, महिमा, गरिमा इत्यादि उसे प्राप्त हो जाती हैं, हालांकि यह अलग बात है, कि वह उनका उपयोग नहीं करता और एक अति सामान्य मनुष्य की भांति ही प्रतीत होता है।''

''**इसके बाद आता है 'य' अर्थात् 'यज्ञ' और इस बीज को निरन्तर जपने से व्यक्ति स्वतः ही 'यज्ञ शास्त्र' एवं 'यज्ञ विज्ञान' में पारंगत हो जाता है**, उसे प्राचीन गोपनीय

कर्मों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और वह विद्वत् समाज द्वारा पूजित होता है। धन एवं वैभव की देवी महालक्ष्मी उसके गृह में निरन्तर स्थापित रहती है और वह धनवान, ऐश्वर्यवान हो संतोष पूर्वक एवं शांति पूर्वक अपना जीवन निर्वाह करता है।''

''यज्ञ शब्द का गूढ़ अर्थ है — अपने समस्त शुभ एवं अशुभ कर्मों की आहुति को 'ज्ञान की अग्नि' के द्वारा गुरु के चरणों में समर्पित करना। यही वास्तविक यज्ञ है और व्यक्ति इस स्थिति को इस बीज मंत्र के जप मात्र से शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है, जिससे कि वह कर्मों के कठोर बंधन से मुक्त हो जन्म-मृत्यु के आवागमन चक्र से भी छूट जाता है।''

''अगला बीज है 'गु' अर्थात् 'गुञ्जरण' और वह व्यक्ति के आंतरिक शरीरों — भू, भुवः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्यम् — से उसके चित्त के योग को दर्शाता है। यह अत्यन्त ही उच्च एवं भव्य स्थिति है, जिसे प्राप्त कर योगी योगियों में श्रेष्ठ कहलाता है और 'योगीराज' की उपाधि से विभूषित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की देवता एवं श्रेष्ठ ऋषि भी पूजा करते हैं और उसकी झलक मात्र के लिए लालायित रहते हैं।''

''चूंकि 'गु' गुरु का भी बीज मंत्र है, अतः इसको जपने से व्यक्ति स्वतः ही गुरुमय हो जाता है और गुरु का सारा ज्ञान, शक्तियां एवं तेजस्विता उसके शरीर में उतर जाती हैं। वह समस्त विश्व में पूजनीय हो जाता है और इच्छानुसार किसी भी लोक अथवा ग्रह में आ-जा सकता है।''

''परा जगत के लोक एवं ग्रह . . . तो क्या पृथ्वी के अलावा भी जीवन की स्थिति है?''

''कैसा मूर्खों का प्रश्न है?'' — त्रिजटा कुछ उत्तेजित हो कर बोले — ''क्या तुम सोचते हो, कि मात्र पृथ्वी पर ही जीवन है? तुम लोग अहं से इतने पीड़ित हो, कि अपने आपको ही 'भगवान द्वारा चुने गए' समझते हो'' — वे व्यंग्य से मुस्कुराये।

''परन्तु एक बार तुम इस बीज को साध लो, तो तुम कई अद्भुत और अनसुनी घटनाओं के साक्षी बन जाओगे। बेशक देर से ही सही, अब तो विज्ञान ने भी अन्य लोकों पर जीवन के तथ्य को स्वीकार कर लिया है।''

''फिर आता है 'रु' अर्थात् 'रुद्र', जो कि इस ब्रह्माण्ड का मुख्य पुरुष तत्त्व है, उसे चाहे गुणात्मक शक्ति कहो या शिव अथवा कुछ और। इस बीज को सिद्ध करने पर व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होता, न ही वह काल-कवलित होता है और न ही उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है। वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञाता एवं सर्वशक्तिशाली हो जाता है।''

''वह चाहे, तो विश्वामित्र की भांति एक नवीन सृष्टि रच सकता है और शिव की तरह उसे नष्ट भी कर सकता है। सम्पूर्ण प्रकृति उसके इशारों पर नृत्य करती प्रतीत होती है। उसे भोजन, जल, निद्रा आदि की आवश्यकता नहीं होती, परिणाम स्वरूप उसे मल-मूत्र विसर्जन भी नहीं करना पड़ता। एक स्वर्णिम, दिव्य आभा मण्डल उसके चतुर्दिक बन जाता है और प्रत्येक व्यक्ति, जो उसके समीप आता है, उससे प्रभावित होता है और उसका भी आध्यात्मिक उत्थान हो जाता है, उसकी सारी इच्छाएं स्वतः पूर्ण हो जाती हैं।''

वह चाहे, तो विश्वामित्र की भांति एक नवीन सृष्टि रच सकता है और चाहे तो शिव की तरह उसे नष्ट भी कर सकता है। सम्पूर्ण प्रकृति उसके इशारों पर नृत्य करती प्रतीत होती है। उसे भोजन, जल, निद्रा आदि की आवश्यकता नहीं होती, परिणाम स्वरूप उसे मल-मूत्र विसर्जन भी नहीं करना पड़ता। एक स्वर्णिम, दिव्य आभा मण्डल उसके चतुर्दिक बन जाता है और प्रत्येक व्यक्ति, जो उसके समीप आता है, उससे प्रभावित होता है और उसका भी आध्यात्मिक उत्थान हो जाता है, उसकी सारी इच्छाएं स्वतः पूर्ण हो जाती हैं।

''अगले बीज 'यो' का अर्थ है — 'योनि'। मानव जन्म के विषय में कहा जाता है, कि यह तभी प्राप्त होता है, जब जीव विभिन्न चौरासी लाख योनियों में विचरण कर लेता है। परन्तु इस बीज के दिव्य प्रभाव से व्यक्ति अपनी समस्त पाप राशि को भस्म करने में सफल हो जाता है और फिर उसे पुनः निम्न योनियों में जन्म नहीं लेना पड़ता।''

''योनि का एक दूसरा मुख्य अर्थ है — शिव की शिवा (शक्ति), ब्रह्माण्ड का मुख्य स्त्री तत्त्व, ऋणात्मक शक्ति। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इसी शक्ति के फलस्वरूप गतिशील

है और जो साधक इस बीज को सिद्ध कर लेता है, उसके शरीर में हजारों अणु बमों की शक्ति उतर आती है।''

मैं उनकी ओर भाव शून्य आंखों से ताक रहा था। मेरे संशय युक्त चेहरे को देख उन्होंने मुझे आश्वस्त करने के लिए एक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि कुछ ऐसा किया, जो इससे लाख गुणा बेहतर था। उन्होंने अपनी दृष्टि एक विशाल चट्टान पर स्थिर की, जो कि मेरी दाहिनी तरफ लगभग 15 मीटर की दूरी पर स्थित था . . . और दूसरे ही क्षण एक भयंकर विस्फोट के साथ उसका नामोनिशान मिट गया।

भय और विस्मय एक साथ मेरे चेहरे पर क्रीड़ा कर रहे थे, साथ ही मेरे रक्तहीन चेहरे पर विश्वास की किरणें भी उभर रही थीं। उन्होंने अपनी 'कथनी' को 'करनी' में बदल दिया था, इससे अधिक और क्या हो सकता था . . .

''इसके अलावा'' — उन्होंने सामान्य ढंग से बात आगे बढ़ाई, मानों कुछ हुआ ही न हो — **''ऐसा व्यक्ति अपने दिव्य व्यक्तित्व को छुपाने के लिए दूसरों पर माया का एक आवरण डाल सकता है। अद्वितीय एवं सर्वोत्तम व्यक्तित्व होने पर भी वह इस तरह बर्ताव करता है, कि आसपास के सभी लोग उसे सामान्य व्यक्ति समझने की भयंकर भूल कर बैठते हैं। वह सामान्य लोगों की तरह ही उठता-बैठता है, खाता-पीता है, हंसता-रोता है, अतः लोग उसके वास्तविक स्वरूप को न तो देख पाते हैं और न ही पहिचान पाते हैं।''**

सूर्य पश्चिमी क्षितिज पर अपने मंद प्रकाश को छटा बिखेरता हुआ अस्ताचल की ओर खिसक रहा था, पशु-पक्षी अपने-अपने घरों की ओर विश्राम के लिए जा रहे थे। मैं उसी मुद्रा में बुत सा विस्मय के साथ त्रिजटा के द्वारा इन रहस्यों को उजागर होते सुन रहा था। हम कॉफी पी चुके थे और उसकी सामग्री शून्य में उसी रहस्यमय ढंग से विलुप्त हो गई थी, जिस प्रकार से आई थी। मैं सोच रहा था, कि गुरु मंत्र में कितनी सारी गूढ़ सम्भावनाएं छुपी हुई हैं और मैं अज्ञानियों की भांति द्वितीय श्रेणी की छोटी-मोटी साधनाओं के पीछे पड़ा हूं। मैं यही सब सोच रहा था, जब त्रिजटा की किञ्चित् तेज आवाज ने मेरे विचार-क्रम को भंग कर दिया।

''मैं देख रहा हूं, कि तुम ध्यान पूर्वक नहीं सुन रहे हो'' — त्रिजटा कह रहे थे, उनके शब्द क्रोधयुक्त थे — ''और यदि यही तुम्हारा व्यवहार है, तो मैं आगे एक शब्द भी नहीं कहूंगा।''

''ओह! नहीं . . . मैं तो स्वप्न में भी आपकी या आपके प्रवचन की उपेक्षा करने की नहीं सोच सकता . . . मैं तो अपनी और दूसरे अन्य साधकों की न्यून मानसिकता पर तरस खा रहा हूं, जो कि गुरु मंत्र रूपी 'कौस्तुभ मणि' प्राप्त कर भी दूसरी अन्य साधनाओं के कंकड़-पत्थरों के पीछे पागल हैं . . .''

एक अनिवर्चनीय मुस्कुराहट उनके होठों पर फैल गई और उनकी आंखों में संतोष की किरणें झलक उठीं। वे समझ गए, कि मैंने उनकी हर बात बखूबी हृदयंगम कर ली है, अतः वे अत्यधिक प्रसन्न प्रतीत हो रहे थे।

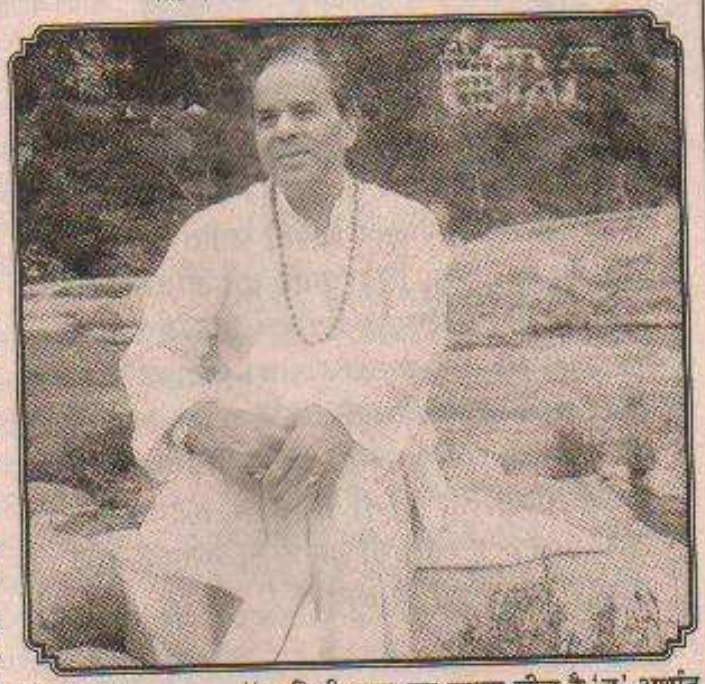

''आखिरी शब्द का पहला बीज है 'न' अर्थात् 'नवीनता', जिसका अर्थ है — एक नयापन, एक नूतनता और एक ऐसी अद्वितीय क्षमता, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आपको अथवा दूसरों को भी समय की मांग के अनुसार ढाल सकता है, बदल सकता है या चाहे तो ठीक इसके विपरीत भी कर सकता है अर्थात् समय को अपनी मांगों के अनुकूल बना सकता है। जो व्यक्ति इस बीज को पूर्णता के साथ आत्मसात कर लेता है, वह किसी भी समाज में जाए, वहां उसे सम्मान प्राप्त होता है, फलस्वरूप वह हर कार्य में सफल होता हुआ शीघ्रातिशीघ्र शीर्षस्थ स्थान पर पहुंच जाता है, जीवन में उसे किसी भी प्रकार की कोई कमी महसूस नहीं होती।''

"वह किसी भी व्यवसाय में हाथ डाले, हमेशा सफल होता है और समय-समय पर वह अपने बाह्य व्यक्तित्व को बदलने में सक्षम होता है, उदाहरण के तौर पर अपना कद, रंग-रूप, आंखों का रंग आदि। जब कोई व्यक्ति उससे मिलता है, हर बार वह एक नवीन स्वरूप में दिखाई देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छानुसार हर क्षण परिवर्तित हो सकता है और अपने आसपास के लोगों को आश्चर्यचकित कर सकता है।"

"इसका सूक्ष्म अर्थ यह है, कि उसका कोई भी व्यक्तित्व इतनी देर तक ही रहता, कि वह इच्छाओं एवं विभिन्न पर्दों में जकड़ा जाये। हर क्षण पुराना व्यक्तित्व नष्ट हो कर एक नवीन, पवित्र, व्यक्तित्व में परिवर्तित होता रहता है। इसी को नवीनता कहते हैं। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार के कर्म करता हुआ भी उनसे और उनके परिणामों से अछूता रहता है।"

"आखिरी बीज 'म' 'मातृत्व' का बोधक है, जिसका अर्थ है असीमित ममता, दया और व्यक्ति को उत्थान की ओर अग्रसर करने की शक्ति, जो मात्र मां अथवा मातृ स्वरूपा प्रकृति में ही मिलती है। मां कभी भी क्रूर एवं प्रेम रहित नहीं हो सकती, यही सत्य है। शंकराचार्य ने इसी विषय पर एक भावात्मक पंक्ति कही है –

'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।'

अर्थात् "पुत्र तो कुमार्गी एवं कुपुत्र हो सकता है, परन्तु माता कभी कुमाता नहीं हो सकती। वह हमेशा ही अपनी संतान को अपने जीवन से ज्यादा महत्त्व देती है।"

"इस बीज को साथ लेने से व्यक्ति स्वयं एक दया और मातृत्व का सागर बन जाता है। फिर वह जगज्जननी मां की भांति ही हर किसी के दुःख और परेशानियों को अपने ऊपर लेने को तत्पर हो, उनको सुख पहुंचाने की चेष्टा करता रहता है। वह अपनी सिद्धियों और शक्तियों का उपयोग केवल और केवल दूसरों की एवं मानव जाति की भलाई के लिए ही करता है। बुद्ध और महावीर इस स्थिति के अच्छे उदाहरण हैं।"

त्रिजटा अचानक चुप हो गए थे और अब वे अपने आपमें ही खोये हुए मौन बैठे थे। मर्यादानुकूल मुझे उनके विचारों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था, परन्तु मैं तो गुरु मंत्र के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानने को व्यग्र था।

मैंने जान-बूझ कर कई बार खांसा और अन्ततः उनकी आंखें एक बार फिर मेरी ओर घूम गईं . . . वे गीली थीं . . .

"जो कुछ भी मैंने गुरु मंत्र के बारे में उजागर किया है" . . . उन्होंने कहा – "यह वास्तविकता का शतांश भी नहीं है और सही कहूं, तो यदि कोई इसकी दस ग्रंथों में भी विवेचना करना चाहे, तो यह सम्भव नहीं है, परन्तु . . . " – उनकी आंखों का भाव सहसा बदल गया था – "परन्तु **मैं सौ से ऊपर उच्चकोटि के योगियों, संन्यासियों, यतियों को जानता हूं, जिनके सामने आज सारा सिद्धाश्रम नतमस्तक है और उन्होंने इसी षोडशाक्षर मंत्र द्वारा ही पूर्णता प्राप्त की है . . .**"

"कई गृहस्थों ने इसी के द्वारा जीवन में सफलता और सम्पन्नता की ऊंचाइयों को छुआ है। औरों की क्या कहूं, स्वयं मैंने भी 'परकाया प्रवेश सिद्धि' और 'ब्रह्माण्ड स्वरूप सिद्धि' इसी मंत्र के द्वारा प्राप्त की है . . ."

उनकी विशाल देह में भावों के आवेग उमड़ रहे थे। वे किसी खोये हुए बालक की भांति प्रतीत हो रहे थे, जो अपनी मां को पुकार रहा हो, प्रेमाश्रु उनके चेहरे पर अनवरत बह रहे थे, जबकि उनके नेत्र उगते हुए चन्द्र की ज्योत्सना पर लगे हुए थे।

"तुम इस व्यक्तित्व की अमूल्यता की कल्पना भी नहीं कर सकते, जिसका मंत्र तुम सबको देवताओं की श्रेणी में पहुंचाने में सक्षम है।"

'श्री सार्थक्यं नारायणः'

– "वे तुम्हें सब कुछ खेल-खेल में प्रदान कर सकते हैं। अभी भी समय है, कंकड़-पत्थरों को छोड़ो और सीधे जगमगाते हीरक खण्ड को प्राप्त कर लो।"

ऐसा कहते-कहते उन्होंने मेरी ओर एक छटा युक्त रुद्राक्ष एवं स्फटिक की माला उछाली और तीव्र गति से एक चट्टान के पीछे पूर्ण भक्ति भाव से उच्चरित करते हुए चले गए –

नमस्ते पुरुषाध्यक्ष नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्तेऽस्तु ऋषीकेश नारायण नमोऽस्तुते।।

बिजली की तीव्रता के साथ मैं उठा और त्रिजटा के पीछे भागा . . . परन्तु चट्टान के पीछे कोई भी न था . . . केवल शीतल पवन तीव्र वेग से बहता हुआ मेरे केश उड़ा रहा था। वे वायु में ही विलीन हो गए थे। मैंने मन ही मन उस निष्काम दिव्य मानव को श्रद्धा से प्रणिपात किया, जिसने गुरु मंत्र के विषय में गूढ़तम रहस्य मेरे सामने स्पष्ट कर दिये थे।

. . . तभी अचानक मेरी दृष्टि नीचे अंधकार से ग्रसित घाटी पर गई, ऊपर शून्य में 'निखिल' (संस्कृत में पूर्ण चन्द्र को 'निखिल' भी कहते हैं) अपने पूर्ण यौवन के साथ जगमगा कर चतुर्दिक प्रकाश फैला रहा था और ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों सारा वायुमण्डल, सारी प्रकृति उस दिव्य श्लोक के नाद से गुञ्जरित हो रही हो –

नमस्ते पुरुषाध्यक्ष नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्तेऽस्तु ऋषीकेश नारायण नमोऽस्तुते।।

28.10.97

आप मात्र ग्यारह दिनों में सम्पन्नता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकते हैं . . .

धन त्रयोदशी

कभी आजमा कर तो देख लीजिये . . .

मानव जीवन में स्वच्छ वायु, उत्तम भोजन और शीतल जल का जितना महत्त्व है, शायद उससे भी ज्यादा महत्त्व धन का है, क्योंकि प्रथमतः भोजन आदि की व्यवस्था धन पर ही निर्भर है और उसके अभाव में मनुष्य को न तो स्वच्छ हवा और न शीतल जल ही सुहाता है। निर्धन व्यक्ति का जीवन तो उस पुष्प की भांति है, जिसमें सुवास न हो ।

निर्धन व्यक्ति हर जगह प्रताड़ित होता है, उसको कहीं भी सम्मान नहीं मिलता और कोई भी उससे मित्रता नहीं रखना चाहता . . . उसका जीवन उसके लिए एक बोझ स्वरूप ही होता है . . .

हमारे पुरातन ऋषियों ने जब मानव को अध्यात्म की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया, तो उन्होंने यह कभी नहीं कहा, कि धन कमाना ही नहीं चाहिए। इसके विपरीत उन्होंने तो चार पुरुषार्थों — धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को स्थापित किया, जिसमें धन को भी उतनी ही महत्ता दी, जितनी की धर्म एवं मोक्ष को। इसी से पता चलता है, कि आदि काल से ही भारत अध्यात्म में श्रेष्ठ होने के साथ-साथ पूर्ण सम्पन्नता युक्त देश रहा है।

मार्कण्डेय ने अपने ग्रंथ '**मार्कण्डेय स्मृति**' में लिखा है, कि धन ही वह वस्तु है, जिसके द्वारा व्यक्ति आध्यात्मिक या भौतिक, कोई भी चीज प्राप्त कर सकता है . . .

भर्तृहरि अपने आपमें पूर्ण सम्पन्नता युक्त सम्राट थे, परन्तु बाद में उन्होंने गोरखनाथ से दीक्षा ग्रहण कर संन्यास ले लिया था। जहां वे राज्यकाल में पूर्ण प्रतापी अद्वितीय राजा थे, वहीं योगी के रूप में भी वे पूर्ण बने . . .

उन्होंने इस बात को भलीभांति जान लिया था, कि यह सारा संसार केवल धन पर ही आश्रित है। धन होने पर ही कोई माननीय एवं सम्मान के योग्य माना जाता है। यदि धन है, तो न जाने कहां-कहां से नए मित्र भी आ जुड़ते हैं, परन्तु यदि व्यक्ति धनहीन है, तो पुराने मित्र भी आंखें फेर लेते हैं . . .

भर्तृहरि बाद में बहुत ही उच्चकोटि के नाथ योगी बने और उन्होंने आकस्मिक धन एवं धन प्राप्ति हेतु विभिन्न साधनाएं सम्पादित कीं। वे सभी साधनाएं आज भी नाथ पन्थ में प्रचलित हैं और उनकी अद्वितीयता और श्रेष्ठता इसी बात से पता चलती है, कि किसी भी नाथ योगी का जीवन दरिद्रता पूर्ण नहीं रहा, उनकी उन्हीं साधनाओं के बल पर आज भी नाथ मठ पूर्ण वैभव एवं सम्पन्नता से युक्त हैं।

ये दो प्रयोग, जो नीचे दिए जा रहे हैं, अपने आपमें ही अचूक एवं बेजोड़ हैं, इनका कोई मुकाबला नहीं। स्वयं भर्तृहरि ने इनकी रचना की थी और उच्चकोटि के नाथ योगियों से ये प्राप्त हुए हैं। ये साधनाएं असफल हो जाएं, ऐसा कदापि नहीं

[illegible] क्योंकि ये पूर्ण प्रामाणिक हैं और प्रत्येक बार इन्हें [illegible] गया है। वास्तव में ही ये सभी साधनाएं अनुभव [illegible] और आज तक कभी भी असफल होती नहीं देखी गई। ये प्रयोग धन त्रयोदशी को ही आरम्भ किये जाते हैं।

श्री लक्ष्मी प्रयोग

श्री का अर्थ है धन, ऐश्वर्य। यह साधना अत्यधिक [illegible] है और इसे सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति के जीवन में [illegible] ही ऐसी स्थितियां बनने लगती हैं, जिससे धन का प्रवाह [illegible] घर में लगातार होता ही रहता है। वह यदि दोनों हाथ से [illegible] धन लुटाता है, तो भी उसकी समृद्धि उत्तरोत्तर बढ़ती ही [illegible] है और वह हर प्रकार के धन, धान्य, मान, सम्मान, यश [illegible] वैभव से युक्त हो जाता है। समाज में उस व्यक्ति का नाम चन्दन की सुगन्ध की भांति फैलने लगता है और जिस किसी कार्य में वह हाथ डालता है, सफल होता ही है।

यह प्रयोग एक दिवसीय है। साबर साधनाओं का [illegible] यह होता है, कि वे अत्यन्त सरल होते हुए भी अत्यधिक [illegible] एवं प्रभावशाली होती हैं और शत-प्रतिशत फल देने वाली [illegible] हैं। **यह साधना धन त्रयोदशी (28.10.97) के अलावा किसी भी बुधवार को भी आरम्भ की जा सकती है।**

इस साधना में निम्न सामग्रियों की विशेष आवश्यकता होती है –

1. श्री लक्ष्मी यंत्र
2. श्री लक्ष्मी माला

ये सामग्रियां प्राण प्रतिष्ठित एवं चैतन्य होनी आवश्यक हैं। साधक धन त्रयोदशी के दिन सवेरे ब्रह्म मुहूर्त में स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख होकर बैठें। फिर अपने सामने सफेद वस्त्र से ढके बाजोट पर **'श्री लक्ष्मी यंत्र'** स्थापित कर उसका लघु पूजन सम्पन्न करें और दीप प्रज्जवलित करें।

'लक्ष्मी' का ध्यान करें –

ध्यान

नमामि लक्ष्मीं परमार्थसत्यां।
भवतापहन्त्रीं व्यवहारभाजां।।
सम्पादयित्रीं सर्वार्थमध्यांसां।
जननीं प्रणौमि सततं जगदात्मरूपम्।।

इसके बाद **'श्री लक्ष्मी माला'** से नित्य ग्यारह दिन तक निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप सम्पन्न करें –

मंत्र

// ॐ नमो लक्ष्मि किलि किलि हिलि हिलि स्वाहा//

OM NAMO LAKSHMI KILI KILI HILI HILI SWAHA

साधना समाप्ति के बाद यंत्र तथा माला को किसी नदी या जलाशय में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से साधना सफल होती है और बताई गई सभी स्थितियां व्यक्ति को जीवन में स्थायी रूप से प्राप्त होती हैं। न्यौछावर – 260/-

आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

इस प्रयोग के बारे में यह कहा गया है, कि जो इस प्रयोग को भली-भांति सम्पन्न कर लेता है, उसकी सात पीढ़ियों तक फिर कोई दरिद्र नहीं रहता . . . उसके घर में आकस्मिक धन प्राप्ति की स्थितियां बनती ही रहती हैं, लॉटरी, सट्टे आदि से उसे धन प्राप्त होता रहता है और वह जीवन की सभी इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हो पाता है।

यह प्रयोग भी ग्यारह दिवसीय है और धन त्रयोदशी या किसी भी शनिवार के दिन ही इसे आरम्भ करना चाहिए। इसके लिए निम्न सामग्रियों की विशेष आवश्यकता होती है –

1. आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
2. धन आकर्षण माला

यह प्रयोग रात्रि को दस बजे के उपरान्त प्रारम्भ करना चाहिए। साधक को चाहिए, कि स्नान आदि करके स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठें और अपने समक्ष पीले वस्त्र से ढके एक बाजोट पर **'आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र'** स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें। इसके बाद **'धन आकर्षण माला'** से निम्न मंत्र का निम्य 21 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

// ॐ ह्रीं श्रीं स्वर्ण लक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं फट्//

OM HREEM SHREEM SWARN LAKSHMYAI SHREEM HREEM PHAT

सरधना पूर्ण होने पर यंत्र व माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

ऐसा करने से यह प्रयोग सिद्ध होता है और व्यक्ति को आकस्मिक धन का लाभ होता ही है। न्यौछावर – 260/-

वास्तव में ही ऊपर वर्णित दोनों प्रयोग बेजोड़ हैं, और यदि आप चाहें तो धन त्रयोदशी को ये दोनों प्रयोग प्रारम्भ कर सकते हैं। चूंकि ये साबर मंत्र है, जो कलियुग में विशेष फलदायी हैं और कोई भी व्यक्ति इन्हें आसानी से सम्पन्न कर सकता है।

एक गोपनीय कथ्य . . . आप स्वयं जांच कर लीजिये कि

राधा-कृष्ण के चरण-चिह्न

इन चिन्हों में कितने चिन्ह आपकी हथेली में हैं

— विश्वनाथ यादव —

प्रत्येक मनुष्य के हाथ व पैर के नीचे नाना प्रकार की रेखाएं व चिह्न होते हैं, जिन्हें देखकर हस्तरेखाविद् एवं ज्योतिषी गण उसके भूत-भविष्य का आकलन करते हैं।

समस्त अवतार श्री कृष्ण के ही अन्तर्युक्त हैं, माधुर्य, भक्ति, रस तत्त्व आदि तथा जितनी भी लीलाएं हैं, वे श्री कृष्ण में वर्तमान हैं। वे ही परमेश्वर हैं।

श्री कृष्ण जब मनुष्य शरीर धारण कर इस पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए, उस समय उनके शरीर की आकृति कैसी थी, यह प्राचीन धर्म ग्रन्थों व चित्रों में उधृत है।

'मत्स्य पुराण' के अनुसार श्री कृष्ण के चरण चौदह अंगुल परिमित दीर्घ व छः अंगुल परिमित विस्तृत था। राधा और श्री कृष्ण दोनों के चरणों में उन्नीस चिह्न थे। कृष्ण के दक्षिण चरण व राधा के वाम चरण में ग्यारह चिह्न थे, और कृष्ण के वाम चरण व राधा के दक्षिण चरण में आठ चिह्न थे।

श्री कृष्ण के दक्षिण चरण के नीचे निम्न चिह्न थें —

1. यव, 2. चक्र, 3. पद्म, 4. उर्ध्व रेखा, 5. अंकुश, 6. छत्र, 7. ध्वज, 8. वज्र, 9. स्वस्तिक, 10. जम्बू फल, 11. अष्टकोण।

श्री कृष्ण के वाम चरण के नीचे चिह्न इस प्रकार थे —

1. शंख, 2. अम्बर, 3. धनु, 4. गोस्पद, 5. कलश, 6. त्रिकोण, 7. अर्द्धचन्द्र, 8. मत्स्य।

राधा के दक्षिण चरण के नीचे निम्न चिह्न थे —

1. शंख, 2. पर्वत 3. गदा, 4. वेदी, 5. रथ, 6. कुंतल, 7. शक्ति, 8.मत्स्य।

राधा के वाम चरण के नीचे निम्न चिह्न थे —

1. यव, 2. चक्र, 3. कमल, 4. उर्ध्व रेखा, 5. अंकुश, 6. ध्वज, 7. छत्र, 8. वलय, 9. वल्ली, 10. पुष्प, 11. अर्द्धचन्द्र।

श्री कृष्ण के चरण के नीचे कहां कौन सा चिह्न था, यह '**पद्म पुराण**' में लिखा हुआ है। उनके दक्षिण चरण के मध्य में है ध्वजा। शरणागत भक्तों को अभय दान करने के लिए उन्होंने अपने चरण में राष्ट्र शक्ति नियंता लक्षण स्वरूप ध्वजा चिह्न धारण किया। बीच के अंगुल के अग्रभाग से तीन अंगुल नीचे ध्वजा के ठीक ऊपर है पद्म। पद के नीचे पद्म रूपी सौभाग्य सूचक चिह्न रहने से व्यक्ति बहुत ही धनी होता है। भक्त गण के मन रूपी भ्रमर को मोहने के लिए भगवान ने अपने चरण में पद्म चिह्न धारण किया। 'पद्म पुराण' में उल्लेख है —

मध्ये ध्वजा तु विज्ञेया पद्म यवे गुल यानतः।
वज्र हे दक्षिणे पार्श्वे अकुंशवे तरग्रतः।।

पद्म के दक्षिण में है वज्र तथा उसके ऊपर में है अंकुश। पाप रूपी पर्वत को चूर्ण करने के लिए वज्र, अंकुश चिह्न भगवान ने भक्तों के मदान्मल इन्द्रिय रूपी हाथी को वशीकरण करने के लिए धारण किया।

इसके बाद अंगूठे के नीचे है 'यव' और पीछे है 'स्वस्तिक' चिह्न। सर्वसम्पदा लाभ प्राप्ति के लिए यव चिह्न एवं शरणागतों के शुभ सूचक स्वस्तिक उन्हें मंगल प्रदान करने लिए भगवान ने धारण किया।

स्वस्तिक के सम्बन्ध में '**स्कन्द पुराण**' के कार्तिक प्रसंग में लिखा है— 'जो भगवान केशव के सामने मिट्टी अथवा विविध धातु द्वारा किञ्चित मात्र सर्वतोभद्र प्रभृत्ति मण्डल रचना करते हैं, वे एक शत कल्प काल तक स्वर्गवास करते हैं। जो शालिग्राम विग्रह के सामने विशेषकर कार्तिक महीने में

पुण्य अधिक की रचना करते हैं, वे सात पुश्त तक कुल पवित्र करते हैं। जो नारी प्रतिदिन भगवान केशव के सामने इसकी रचना करती है, वह सात जन्म तक कभी भी वैधव्य प्राप्त नहीं पाती, वह कभी भी पति, पुत्र व धन नहीं खोती।

इस स्वस्तिक चिह्न के निर्माण का नियम है; विष्णु मन्दिर के मध्य ईशान, वायु, नैर्ऋत्य व अग्नि इन चार कोणों के चार चतुष्कोण को सोलह भाग कर सादा, पीत, रक्त व कृष्ण रंग के चूर्ण द्वारा लेपन करें।

अंगूठे व बीच के अंगुल के मध्य भाग से चरण के मध्य तक भक्तों के उर्ध्व लोक प्राप्ति की सूचना करने के लिए भगवान ने उर्ध्व रेखा धारण की।

भक्तों को पूर्व, ईशान, उत्तर, वायु, पश्चिम, नैऋत्य, दक्षिण, अग्नि आदि आठ दिशाओं से कोई विपदा नहीं आए तथा शरणागतों को अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व इन अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति हो, इसके लिए भगवान ने अष्टकोण चिह्न धारण किया।

अणु के समान लघु होने से नाम अणिमा हुआ, अणिमा के द्वारा शरीर इतना छोटा हो जाता है, कि उसे पत्थर के अंदर प्रवेश कराया जा सकता है। अत्यन्त हल्का होने से नाम लघिमा हुआ, लघिमा सिद्धि प्राप्त मनुष्य इतना हल्का हो जाता है, कि सूर्य किरण धारण कर ऊपर उठ सकता है। अत्यन्त विशाल होने की सिद्धि का नाम है महिमा, महिमा सिद्ध व्यक्ति अपने शरीर को पहाड़ के समान अत्यन्त विशाल बना सकता है।

जिस सिद्धि के अनुसार इच्छानुसार जो चाहे, प्राप्त किया जा सके, उसका नाम है प्राप्ति। जिस सिद्धि द्वारा भूत-भौतिक की सृष्टि आदि किया जाय, उसका नाम ईशित्व है।

जिस सिद्धि द्वारा भूत-भौतिक को वशीभूत किया जा सकता है, उसका नाम वशित्व है। जिस सिद्धि द्वारा समस्त इच्छाओं को पूर्ण किया जाय, उसका नाम प्रकाम्य है।

जिस सिद्धि द्वारा संकल्प अनुसार उसी समान कार्य किया जाय, उसे गरिमा कहते है, गरिमा सिद्ध व्यक्ति दग्ध बीज से भी अंकुर उत्पादन कर सकता है।

अपने शरणागत भक्तों की रक्षा के लिए उन्होंने छत्र चिह्न धारण किया। उनकी छत्रछाया के नीचे रहने पर जीव सब तरह के क्लेश व दुःख से मुक्ति प्राप्त करते हैं। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश – ये पंच क्लेश हैं।

छत्र के ऊपर है चक्र और नीचे है जम्बू फल। चक्र का कार्य है छेदन, विनाश, भ्रमण व धराशायी करना। यह चक्र प्राचीन भारत का एक युद्ध अस्त्र था।

भगवान अपने चरण में जम्बू फल चिह्न धारण कर दर्शाते हैं, कि उनका चरण जम्बू द्वीप वासी के लिए एक मात्र उपास्य है। जम्बू द्वीप सप्त द्वीपों में अन्यतम है, भारतवर्ष। नील पर्वत के दक्षिण व निषध के उत्तर अवस्थित सुदर्शन नामक जम्बू वृक्ष से द्वीप का नाम हुआ जम्बू द्वीप। प्रक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर – ये सप्तद्वीप हैं।

श्री कृष्ण के वाम चरण की अंगुलियों के अग्रभाग

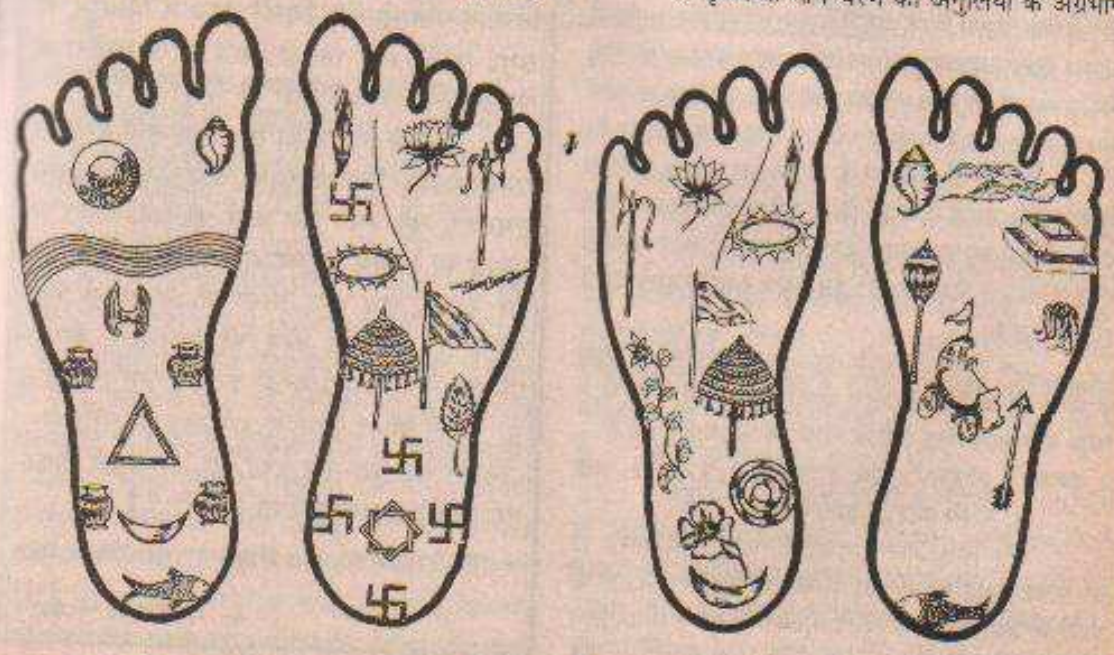

से चार अंगुल नीचे इन्द्रधनुष है अर्थात् शत्रु धनु तथा उसके अधोभाग में द्विखुर युक्त गोस्पद चिह्न है। उनके चरण में शरणागतों का भवसागर गोस्पद तुल्य है।

चरण के उपयुक्त शोभा बढ़ाने के लिए उपयुक्त स्थान पर कलश चिह्न है। उनका चरण त्रिगुण प्रकृति का है। उर्ध्व, मध्य और अध — ये त्रिलोक के आश्रय हैं। विविध जीव, देव और नर के लिए उनके चरण ही एक मात्र आराध्य हैं। इसलिए उन्होंने अपने चरण के तल में त्रिकोण चिह्न धारण किया। उनके चरण से अमृत पाने का उपाय बतलाने के लिए उन्होंने पद के नीचे अमृत कलश चिह्न धारण किया।

इन सभी चिह्नों के ऊपर अम्बर चिह्न तथा बिल्कुल नीचे मत्स्य चिह्न है। अम्बर चिह्न में एक बाह्य मण्डल और एक अन्तर्मण्डल चिह्न रहता है। अम्बर अर्थात् आकाश के समान उनका चरण सर्वव्यापी होने पर भी निर्लिप्त है। कामध्वज मत्स्य चिह्न से मालूम होता है, कि उनके चरण ही सब तरह की कामना पूर्ण करने में समर्थ हैं। अंगूठे के नीचे शंख चिह्न धारण करने का अर्थ है, कि वे ही अपने भक्तों का सदा सर्वदा मंगल करते हैं।

राधा का पूजन छोड़कर श्री कृष्ण की अर्चना करने का अधिकार नहीं है। राधा श्री कृष्ण की प्राण अधिष्ठात्री देवी हैं। उन्हें छोड़कर श्री कृष्ण क्षण भर के लिए भी जीवन धारण नहीं कर सकते। '**श्री राधायै स्वाहा**' मंत्र की ब्रह्मा, विष्णु आदि भी उपासना करते रहे हैं।

राधा के वाम चरण के अंगुष्ठ मूल में यव, उसके निम्न भाग में चक्र, उसके निम्न भाग में वलय; तर्जनी और अंगुष्ठ से आरम्भ होकर अर्द्धचरण पर्यन्त उर्ध्व रेखा; मध्यमा के नीचे कमल, कमल के नीचे पताका, सहध्वज; कनिष्ठा के नीचे अंकुश; अर्द्ध चन्द्र के ऊपर वल्ली एवं फूल — ये 11 चिह्न हैं।

राधा के दक्षिण चरण के अंगुष्ठ मूल में शंख, कनिष्ठा के नीचे वेदी, उसके नीचे कुन्तल, तर्जनी तथा मध्यमा के नीचे पर्वत, नीचे मत्स्य उपविभाग में रथ एवं रथ के उभय पार्श्व में शक्ति व गदा — ये 8 चिह्न हैं। इस प्रकार राधा के दोनों चरणों के चिह्न 19 हैं।

राधा-कृष्ण के बायें और दक्षिण चरण के 11 चिह्नों के मध्य 6 चिह्न और उन दोनों के दक्षिण व वाम चरण के 8 चिह्नों के मध्य 2 चिह्न दोनों के चरणों में विद्यमान हैं। ये हैं —

1. ध्वजा, 2. अंकुश, 3. यव, 4. उर्ध्व रेखा, 5. छत्र, 6. चक्र

1. मत्स्य और 2. शंख।

सत्-चित्-आनन्द, इस विविध गुण के कारण ही श्री कृष्ण विग्रह को आनन्द स्वरूप माना गया। परमार्थिक उन्नति के लिए श्रवण व कीर्तन के माध्यम से भी राधा-कृष्ण की पूजा की जाती है।

निखिलेश्वरानन्द चिन्तन

"साधना-क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक है, कि व्यक्ति मनसा, वाचा, कर्मणा से शुद्ध एवं पवित्र हो। जब तक उसका आन्तरिक मैल (असत्य, सन्देह, परनिन्दा) समाप्त नहीं होगा, तब तक वह साधना-क्षेत्र मे प्रवृत्त होने का अधिकारी नहीं माना जाता। इसी प्रकार उसका बाह्य रूप एवं अन्तर भी शुद्ध होना चाहिए। उसका आसन पवित्र हो, उसके वस्त्र शुद्ध, पवित्र, एवं सहज हों; न तो वे ज्यादा कसे हुए हों और न ही ज्यादा आंखों को चकाचौंध करने वाले हों।

साधना-क्षेत्र में वही व्यक्ति सफल हो सकता है, जो कि एकाग्र रूप से अपना सम्पूर्ण जीवन गुरु को समर्पित कर दे। जब तक शिष्य के मन में तर्क है तब तक उसकी बुद्धि निर्मल नहीं कही जा सकती। साधना का आधार विश्वास होता है और जिसके हृदय में विश्वास का समुद्र हिलोरें मार रहा हो, वही व्यक्ति साधना के क्षेत्र मे पूर्णतः सफल होता है।

मानव-जीवन की सार्थकता तभी कही जा सकती है, कि जिस कार्य के निमित्त उसका जन्म हुआ हो, वह अपने उस कार्य को सही प्रकार से सम्पन्न कर दे। जब तक वह अपने कार्य को पूर्ण नहीं कर सकता, तब तक उसका जीवन अपूर्ण कहा जाता है, और इस कार्य की सम्पूर्णता, इसको पहिचानने और पूर्ण कराने का उत्तरदायित्व श्रेष्ठ गुरु पर ही निर्भर करता है। इसीलिए लोकोक्ति है— "जिसने श्रेष्ठ गुरु प्राप्त कर लिया, उसने पूर्ण जीवन एवं उसकी सार्थकता प्राप्त कर ली।"

— "निखिलेश्वरानन्द चिन्तन" ग्रंथ से साभार

✦ **न्यौछावर — 40/-**

जब अघोरी ने महाकाली को बिल्ला कर दिया

एवं मातंगी का यही विहार स्थल है एवं परम सिद्धा महाकाली यहीं पर ही अपने पूर्ण स्वरूप के साथ महाकाल का सायुज्य किये हुए अनुभव होती है।

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीम्।
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूव।।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

वास्तव में श्मशान की माया भी विचित्र है, जब समस्त संसार जागता है, तो यह सुप्त सा पड़ा रहता है, परन्तु रात्रि होते ही, जब सारा संसार मीठी नींद में निमग्न हो जाता है, तो यह जीवित हो उठता है . . .ऐसा लगता है, मानो अभी बोल उठेगा . . . और श्मशान के साथ एक व्यक्ति और जागता है . . . अघोरी, तांत्रिक।

वास्तव में श्मशान की माया भी विचित्र है, जब समस्त संसार जागता है, तो यह सुप्त सा पड़ा रहता है, परन्तु रात्रि होते ही, जब सारा संसार मीठी नींद में निमग्न हो जाता है, तो यह जीवित हो उठता है . . .ऐसा लगता है, मानों अभी बोल उठेगा . . . और श्मशान के साथ एक व्यक्ति और जागता है . . . अघोरी, तांत्रिक।

कहीं दूर, हवा के शीतल झोंकों के साथ एक ध्वनि तैरती हुई, सारे वातावरण को चैतन्य करती हुई प्रतीत हो रही थी . . .

जगन्मोहिनीयं तु वाग्वादिनीयम्।
सुहृत्पोषिणीं शत्रुसंहारणीयम्।।
वचस्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयम्।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

यह ध्वनि, यह आवाज कहीं श्मशान के मध्य से उठ रही है। एक तांत्रिक श्मशान के बीचों बीच वाली चिता के आगे पद्मासन में बैठा काली की स्तुति कर रहा है . . . देखने में अघोरी मालूम होता है, . . . पर उसके व्यक्तित्व में एक स्पष्ट कठोरता एवं दृढ़ता के साथ-साथ एक अनिवर्चनीय कोमलता भी दृष्टिगोचर हो रही है . . . यह कैसा अघोरी है . . . कैसा तांत्रिक है . . .

थोड़ा और पास जाने पर स्पष्ट होता है — अरे! यह तो विख्यात 'कपाल शंकर' है, अघोरियों में सर्वश्रेष्ठ, कापालिकों का पूजनीय, महान कपाल शंकर . . . तो वह यहां किसी महान साधना हेतु ही आया होगा, इसमें संशय नहीं। निश्चय ही वह यहां '**अष्ट काली**' की सिद्धि हेतु आया है।

श्मशान उद्दाम यौवन की तरह अंगड़ाई लेता हुआ जाग्रत हो गया था। अमावस्या की भयावह रात, चतुर्दिक तिमिर फैला हुआ, मानो सभी को लीलने की चेष्टा कर रहा था। यह था बाणगंगा का बहुचर्चित महाश्मशान, जो अघोरियों एवं कापालिकों का प्रिय क्रीड़ास्थली है। यही वह मोहक उपवन है, जहां पर दसों महाविद्याएं रात्रि को मदमस्त हो विचरती रहती हैं। तारा यहीं पर मुण्डमालाएं धारण करती है, षोडशी यहीं अपनी बाल क्रीड़ाओं में निमग्न रहती है, जगज्जननी भुवनेश्वरी का यही सिद्ध पीठ है, छिन्नमस्ता मस्त होकर यहीं अपना नृत्य प्रस्तुत करती है; धूमावती, बगला

काली की कई साधनाएं प्रचलित हैं, सभी की सभी तीक्ष्ण . . . क्योंकि काल स्वरूपा काली को अपने सामने प्रकट करना साक्षात् मृत्यु से पंजा लड़ाना है; काली को उसकी इच्छा के विपरीत जाग्रत करना मानो भूखे सिंह के मुख में गर्दन डालना है, पर फिर भी कोई न कोई पौरुषवान साधक ऐसा करने में सफल हो ही जाता है . . . परन्तु यह कपाल शंकर . . . यह तो अष्ट काली, अर्थात् काली के आठों स्वरूपों को एक साथ सिद्ध करने को संकल्पबद्ध हो उठा है . . कहीं इसकी मति तो नहीं मारी गई? यह अपने होश में है भी? क्या यह इस बात से अनभिज्ञ है, कि अष्ट काली को एक साथ अपने समक्ष बुलाना मृत्यु को न्यौता देना है? क्या उसे अपने चारों तरफ यम पाश दिखाई नहीं दे रहा?

रात के समय अचानक ही वे अति मनोहर, कामोत्तेजक रूप में कपाल शंकर के समक्ष प्रस्तुत हुई थीं और नाना प्रकार की नृत्य मुद्राओं से उसे उत्तेजित करने का प्रयत्न कर रही थीं . . .

निश्चय ही बड़ा जीवटवान एवं दृढ़ संकल्पी है यह अघोरी . . . पर इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं, कि आग से खेला जाये . . . अभी कुछ ही दिन पहले तो इसी साधना के दौरान कापालिक ब्रजेश्वर ने अपने प्राण गंवाए थे . . . वह हठ पूर्वक काली को अपने समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था . . .

'तू क्या तेरा बाप भी आयेगा, बहुत घूम ली तू इधर-उधर, अब आ! महाकाल तुझे बुला रहा है' . . . क्यों था तू इतना अंहकारी रे ब्रजेश्वर, जो तुझे इतनी कम उम्र में ही अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। क्षण भर में उस कापालिक के हजारों-हजारों टुकड़े होकर चिता के चारों ओर बिखर गए थे और उसका शव स्वतः ही कटे पेड़ की तरह चिता पर धम्म से गिर पड़ा था . . . उसके मुण्ड को काली ने अपनी माला में जोड़ लिया था और वह मदमस्त हो, ठहाका मारकर हंस पड़ी थी . . . ह ह ह ह ह ह

'इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली।
मनोजास्तु कामान्यथार्थं प्रकुर्यात्।।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

कपाल शंकर तन्मयता के साथ 'कालिकाष्टक' गा रहा है। आज साधना का अन्तिम दिवस है, क्योंकि अमावस्या से आरम्भ हो कर यह साधना अमावस्या को ही खत्म होती है . . . पूरी एक मास की कठोर साधना . . . और क्या-क्या बाधाएं और परीक्षाएं नहीं आई थीं उसकी राह पर . . . पर कपाल शंकर तो कपाल शंकर ही ठहरा . . . जैसा नाम वैसे ही उज्ज्वल कर्म, वह तो जैसे समस्त अघोरियों का शिरोमणि है . . . 'हुं' कापालिक बज्र का तीसरा, हृदय को भेदने वाला व्यंग्य स्मरण कर कपाल शंकर श्मशान में चिता के समक्ष बैठा-बैठा तिलमिला उठा और उसके मुख से दसों दिशाओं को गुञ्जाने वाली हुंकार प्रस्फुटित हो गई। परन्तु अब वह संयत है और पुनः साधना में लीन दिखाई पड़ रहा है . . .

साधना के पंद्रहवें दिन भूत, पिशाच, राक्षसों ने उसकी साधना में विघ्न डालने का भरसक प्रयत्न किया था . . . पर उस अवधूत को भूत, प्रेतों एवं ब्रह्म राक्षसों से क्या भय . . . उन्होंने नाना प्रकार से उसको भयभीत करने की चेष्टा की थी, उसे डराने की कोशिश की थी . . .परन्तु कपाल शंकर तो बड़ी ही मुश्किल से अपनी हंसी दबाए बैठा था . . . यदि अपनी ही धुन में मस्त गजराज को कुत्तों का समूह भयभीत करने की चेष्टा करे, तो यह बात हास्यास्पद ही है . . . इसमें दो राय नहीं . . . कुछ क्षण तो वह मग्न हो इन इतर योनियों की वीभत्स क्रीड़ा देखता रहा . . . पर फिर कुछ जल हाथ में लिया और '**ॐ अंजनी समुदाय प्रकट विक्रम बीर . . .**' कहते-कहते उसने वह जल चारों ओर छिड़क दिया . . . भय की चीखों के साथ कुछ ही क्षण में वह सारा त्रिवर्गात्मक समूह कहीं विलुप्त हो गया था . . .

चिदानन्द कन्दं हसन्मन्द मन्दं।
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

एक अद्वितीय लय के साथ ये शब्द कपाल शंकर के मुख से निकल रहे हैं और वह भी पूर्ण रूप से इसमें डूबा हुआ है . . . फिर तो हर दिन साधना के दौरान कोई न कोई बाधा अथवा कठिनाई प्रस्तुत होती . . . कपाल शंकर भी एक पहुंचे हुए सिद्ध की भांति इन सब परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता गया और समस्त बाधाओं को सरलता से लांघता गया . . . पर जो अभी पिछली रात थी, वह तो अति विचित्र थी, उससे निकल पाना तो नंगी तलवार पर चलने से भी अधिक कठिन था . . . पर चूंकि आज तीसवां दिन है और कपाल शंकर हमारे समक्ष है, इसका अर्थ तो यही निकलता है, कि उसने सफलता पूर्वक उस मुख्य बाधा को भी पार कर लिया है।

वह बाला थी चौसठ योगिनियों के रूप में, जो कि [illegible] महाकाली की दासियां हैं . . . रात के समय अचानक ही वे अति मनोहर, कामोत्तेजक रूप में कपाल शंकर के समक्ष प्रस्तुत हुई थीं और नाना प्रकार की नृत्य मुद्राओं से उसे उत्तेजित करने का प्रयत्न कर रही थीं . . .

'शंकर! क्यों अपने यौवन को इस तपती भट्ठी में जला रहा है, छोड़ दे यह सब कुछ और आ कर देह का सुख भोग . . . ' —एक ने कहा।

'कपाल! तू कहे, तो तुझे अद्वितीय सुन्दर बना दूं, अजर-अमर कर दूं, फिर हम हमेशा के लिए प्रेम का अमृत का पान कर सकेंगे' —दूसरी बोली।

तीसरी ने कहा— 'तू अटूट सम्पत्ति मांग ले, यश, वैभव, सब कुछ . . . हमको अंगीकार कर और निश्चिन्तता के साथ जीवन व्यतीत कर। क्यों अकारण मृत्यु को दावत दे रहा है? जो कुछ भी तुझे चाहिए, हमें कहो, हम भी तुझे वह सब प्रदान करने में समर्थ हैं।'

परन्तु यह कपाल शंकर की ही तेजस्विता थी, कि वह इतने प्रलोभनों एवं मोहक निमंत्रणों के बीच भी संयत रह सका। काम तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी डिगा देता है, पर यह साधक तो अद्भुत है, इसमें कोई और ही बात है . . . यह एक चिंगारी लिये हुए है। इसके बाद योगिनियों ने विभिन्न प्रकार से माया रची और कपाल शंकर को डिगाने के लिए 'साम, दाम, दण्ड, भेद' का उपयोग किया। अंततः अब उन्हें इस बात का एहसास हो गया, कि उसको विचलित करना सम्भव नहीं, तो वे 'साधु कपाल शंकर, साधु!' कहती हुई शून्य में विलीन हो गईं . . .

महामेघ काली सुरक्तापि शुभ्रा।
कदाचिद्विचित्रा कृतियोगमाया।।
न बाला न वृद्धा न कामातुरापि।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

यह आखिरी दिवस है और वह दृढ़ साधक तीव्र गति के साथ सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है— तभी एक तीव्र विस्फोट हुआ और चतुर्दिक धुंआ ही धुंआ फैल गया . . हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा . . . गंध भी बड़ी विचित्र सी उठ रही है . . .

'मूढ़मते!' — तभी एक स्त्री का स्वर गूंजा — 'क्यों तू हठ कर रहा है, क्या तुझे अपनी जान की जरा भी परवाह नहीं . . . हठ छोड़ और भाग जा, मुझे क्रोध मत दिला . . .'

कपाल शंकर तुरन्त समझ गया, कि न तो यह किसी योगिनी की आवाज है, न भैरवी की, यह तो कुछ और ही है, यह तो मात्र उसी की मधुर आवाज हो सकती है . . . उसने तुरन्त हाथ जोड़ लिए और बोला —

'मां! हठ तो शिशु का मूल धर्म होता है, वह हठ छोड़ दे, तो मां उसकी ओर ध्यान ही न दे . . . मेरे हठ से आपको क्रोध आ रहा है, इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं . . . पर अब और नहीं रहा जाता . . . हे मां! हे जगज्जननी अपने सुन्दर अष्ट स्वरूप को मुझे दिखलाइए . . . '

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं।
मयलोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

उसकी आखों से प्रेम की अश्रुधार बहती हुई आसपास की जमीन सिक्त कर रही है . . .

'इसी क्षण रुक जा दुष्ट, नहीं तो मैं तेरी भी बलि ले लूंगी और तेरे मुण्ड को अपनी माला में पिरो लूंगी . . . एक मौका और देती हूं, भाग जा, नहीं तो मैं तुझे भी भक्ष्य लूंगी . . . ह . . . ह . . . ह . . . ह . . . ह . . . '

कपाल शंकर बालक की तरह रुदन कर रहा है, उसकी हिचकियां बंधी हुई हैं — 'यदि आप मुझे भक्ष्य ही लें, तो इससे बड़े सौभाग्य की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है। पर मां आप क्यों कष्ट करती हैं? मैं स्वयं ही अपने हाथों से अपना मस्तक काट कर आपके चरणों में समर्पित कर देता हूं . . . '

'तो बोल क्या रहा है, काटता क्यों नहीं . . . ' — उस स्त्री ने कहा और तभी अचानक एक प्रचण्ड खड्ग कपाल शंकर के सम्मुख पृथ्वी पर आ गिरा . . .

कपाल शंकर ने खड्ग की तरफ हाथ बढ़ा दिया, उसे उठा लिया . . . उफ्! सही कहते थे सभी अघोरी और कापालिक वज्र, कि अब उसे फिर उसे देख सकने की आशा नहीं है . . . अलविदा कपाल शंकर! निश्चय ही तू अद्वितीय है . . . महान है . . . पर यह क्या! घोर आश्चर्य! इससे पहले खड्ग गर्दन को छुए, एक विकराल, श्याम वर्ण की स्त्री ने प्रकट हो उसका हाथ झटक दिया . . . और खड्ग छिटक कर दूर जा गिरा . . . उस स्त्री के स्वरूप से आठ स्वरूप प्रकट हुए — दक्षिण काली, स्पर्शमणि काली, संततिप्रदा काली, सिद्धि काली, चिन्तामणि काली, कामकला काली, हंस काली, गुह्य काली . . . और पुनः उसमें विलीन हो गए। जो देवी अब कपाल शंकर के समक्ष है, वही है श्मशान की अधिष्ठात्री देवी महाकाली।

कपाल शंकर इस दिव्य छटा को देखकर आत्मविभोर हो गया और 'मां! मां!' पुकारता हुआ उसके चरणों में गिर गया, काली का ममतामय हाथ उसके केशों में घूम रहा है . . . 'आह! . . . कितनी सुन्दर है मेरी मां! मेरी काली मां . . . कितनी ममतामय, कितनी कोमल . . .'

'अरे पगले! जिस दिन मां अपने पुत्र को बलि ले लेगी, उस दिन तो समस्त ब्रह्माण्ड प्रलय से नष्ट हो जाएगा . . . बज्रेश्वर तो खुद अपने निन्दित कर्मों द्वारा मारा गया, उसके संकल्प तुच्छ थे . . . खैर वह भी अगले जन्म में मुझे प्राप्त कर पाएगा . . . '

'कपाल शंकर! पुत्र! मैं तुझसे अति प्रसन्न हूं, तूने तो मुझे विवश कर दिया . . . मां को पुत्र की तरह ही जीता जा सकता है . . . और कोई तरीका नहीं। मैं हमेशा तेरे पास रहूंगी, जब भी तू पुकारेगा, मैं चली आऊंगी . . . निश्चय ही तू धन्य है कपाल शंकर! . . . और यह तेरे गुरु का ही प्रताप है, कि तुझे मेरे वह दर्शन प्राप्त हुए, जो कि अति दुर्लभ एवं गोपनीय हैं।'

'जा, अब तू जा रे और निर्भय हो विचरण कर . . . और जाते-जाते भी महादेवी का हास्य सुनाई पड़ रहा है . . .

ह . . . ह . . . ह . . . ह . . . ह . . .

कपाल शंकर ने हाथ जोड़ लिए हैं, वह अपने आप में खोया हुआ कुछ बुदबुदा रहा है . . .

यदि ध्यान युक्तं पठेद् यो मनुष्यः।
तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।।
गृहे चाष्ट सिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

अगर समस्त ब्रह्माण्ड को मुट्ठी में बांधना है और शत्रुओं पर इन्द्र वज्र की तरह गिर कर उन्हें नेस्तानाबूद करना है . . . तो इस साधना को तो कर ही डालिये

साधना विधान

अघोरी कपाल शंकर ने जिस विधि से महाकाली के अष्ट स्वरूप को सिद्ध किया था, उसने उसकी एक तीव्र तथा लघु विधि को मेरे समक्ष रख कर मुझे सिद्ध कराया। महाकाली साधना सम्पन्न करने के पश्चात् साधक की समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं, जिनकी उसे इच्छा होती हैं। वह अपने जीवन में अपूर्ण नहीं रह जाता। उसको सभी प्रकार की कामनाएं पूर्ण होती है। महाकाली की यह साधना **6.10.97 को** आरम्भ करें या फिर इसे **किसी भी शनिवार** से आरम्भ करें। यह साधना रात्रि में ही सम्पन्न करें।

⇨ साधक रात्रि में स्नान कर काले रंग के वस्त्र धारण करें। जिस स्थान पर साधना करें उस स्थान पर अन्य किसी की उपस्थित वर्जित है।

⇨ साधक अपने सामने बाजोट पर काले रंग का वस्त्र बिछाएं, उसपर '**अष्टकाली यंत्र**' को स्थपित कर '**महाकाली साधना**' पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार महाकाली पूजन करें।

⇨ पुस्तक के अनुसार पवित्रीकरण, आचमन, दिग् बन्धन, गणपति स्मरण, गुरु पूजन, ध्यान, कुंकुम, सिन्दूर, अक्षत, पुष्पमाला, धूप, दीप, फल तथा नैवेद्य अर्पित करें।

⇨ इसके पश्चात '**काली हकीक माला**' से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

।। ॐ क्रीं क्रीं महा कालिके क्रीं क्रीं फट्।।

OM KREEM KREEM MAHA KALIKE KREEM KREEM PHAT

⇨ मंत्र जप के पश्चात उपरोक्त का 11 बार उच्चारण करते हुए यंत्र पर काली मिर्च के दाने चढ़ाएं। इससे आपके जीवन में आने वाली बाधाएं, चाहे वे शत्रु रूप में हों या तनाव या मानसिक क्लेश के रूप में हों, समाप्त होंगी और निर्भयता की प्राप्ति होगी।

⇨ इसके पश्चात् आप समस्त सामग्री को एकत्र कर नदी में विसर्जित कर दें।

यह साधना आपके जीवन में एक अमूल्य धरोहर के रूप में हमेशा आपके पास रहेगी। न्यौछावर–260/-

एक दृष्टि में :
साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

3.8.97 **मुम्बई**

शिविर स्थल : हिन्दुजा हॉल, रोड नं0 — 9, दौलत नगर बोरीवली (पूर्व), मुम्बई

श्री गणेश चट्टाणी (फोन : 022-8057110, 8625254)

17-18 अगस्त **बाबा वैद्यनाथ धाम, देवघर**

शिविर स्थल : ख्वाला कम्पाउण्ड, देवघर पुलिस स्टेशन और टॉवर के समीप, देवघर, बिहार

श्री एस.एल. ओझा, रांची (फोन : 0651-204938)
श्री मनोज पासवान, रांची (फोन : 0651-204566)
श्री वेदानन्द झा, देवघर (फोन : 06432-22886, 22538)
श्री राजेश कुमार सिंह, जमुई (फोन : 06345-8202)
श्री नारायण सिंह, जमुई (फोन : 06345-2069 PP)
श्री आर.ई. तिवारी, धनबाद (फोन : 0326-203949)
श्री यू.पी. सिंह, धनबाद, श्री मोहन, बोकारो

24.8.97 **शिमला, हिमाचल प्रदेश**

शिविर स्थल : पंचायत भवन, नजदीक बस स्टेण्ड, शिमला

श्री एम.आर. वशिष्ठ, पण्डोह (फोन : 1905-82221)
डॉ0 सुरेन्द्र निखिल गुप्ता, औट (फोन : 01905-79212)
श्री कमलदत्त शर्मा, मण्डी (फोन : 01905-35655)
श्री शरद कुमार श्रीवास्तव, अमृत सोबती विला, रूक 'स हेवन, शिमला-1 (मो0 नं0 : 098-160-28998, पी.पी. : 0177-222724)
श्री राजू, विकास नगर, शिमला (पी.पी. : 0177-225684)
श्री चेत राम, शिमला (फोन : 0177-230675)
श्री अजय भारद्वाज, धर्मशाला (फोन : 01892-24137)

1.9.97 **सोमनाथ (गुजरात)**

शिव शक्ति महालक्ष्मी साधना शिविर (सोमवती अमावस्या)

शिविर स्थल : नटराज गेस्ट हाउस, प्रभास पाटन, सोमनाथ, जिला-जूनागढ़, सौराष्ट्र, गुजरात

श्री चन्द्रेश जी0 पाण्डया, वाटर टैंक कम्पाउण्ड, वेरावल, सोमनाथ, गुजरात (फोन: 02876-2021801., 41817 PP)
श्री गोजूभाई रावल, पुलिस लाइन, प्रभास पाटल, सोमनाथ
श्री महेश चन्द्र पण्ड्या, धारी, अमरेली (02797-21336)
श्री किशोर भाई एन0 सोजित्रा, राजकोट (451504, 368197)
श्री परेश भाई जी. पटेल, राजकोट (368283, 229549)
श्री रामाराव एन0 गायकवाड़, महुवा (0364290-24299)
श्री विपिन चन्द्र बी0 गांधी, राजकोट (236469)
श्री रमेश पाटिल, नवसारी (02637-53188)

स्थानीय आयोजकों द्वारा आयोजित साधना शिविर

अधिकतर शिविर पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी के निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

कम्प्यूटर हार्डवेयर /सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स व इस क्षेत्र के विशेषज्ञ ध्यान दें

आप पत्रिका के पाठक व सक्रिय सदस्य हैं . . . और यह पत्रिका आवाज दे रही है इस बार कम्प्यूटर विज्ञान के हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर इंजिनीयर्स व अन्य विशेषज्ञों को . . .

1. नाम : .....
2. आयु : .....
3. पूरा पता : .....
.....
.....
4. फोन : ..... (घर)
..... (कार्यालय)
5. आप किस क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं —
.....
6. किस प्रकार का कार्य करते हैं?
.....
.....
7. अनुभव —
ऑपरेटर : .....
टीचर : .....
क्षेत्र विशेष : .....
8. पारिवारिक पृष्ठभूमि : .....
9. परिवार के सदस्यों के नाम —
.....
.....
.....
.....
10. आप किस प्रकार से पत्रिका और पत्रिका के सदस्यों की सहायता कर सकते हैं?
.....
11. हम आपके लिए सहायक होंगे? किस प्रकार से?
.....
12. अन्य —
.....

कृपया इस प्रपत्र को फाड़ कर लिफाफे में डाल कर उसे भली प्रकार से बंद कर दें और उस पर एक रुपये का टिकट चिपका कर नीचे लिखा पता काट कर चिपका दें —

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34

और इसे आज ही पोस्ट ऑफिस में डाल दें।

मई माह में आई. यू. एस. अधिकारी बन्धुओं के लिए यह कॉलम प्रकाशित किया गया था, जिसे बहुसंख्यक लोगों ने भर कर भेजा है। उन सभी को पत्रिका कार्यालय की ओर से धन्यवाद। उन सभी को विशेष समाचार भेजे जा रहे हैं तथा उन्होंने जो सहयोग प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की है, उसे पूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है।

नि:शुल्क!

सर्वथा मुफ्त!!

गुरु दूरस्थ वार्तालाप वार्ताली कीलक

प्रत्येक शिष्य या साधक जब साधनात्मक क्षेत्र में उतरता है, तब उसके मानस में अनेक जिज्ञासाएं होती हैं, प्रतिक्षण, प्रति पल सैकड़ों प्रश्न उसके मानस में उठते रहते हैं और वह उनके उत्तर अपने गुरु से पाने के लिए व्यग्र रहता है . . . क्योंकि एकमात्र उनको ही सम्पूर्ण ज्ञान होता है और मात्र वे ही इन जिज्ञासाओं का पूर्ण समाधान करने में सक्षम होते हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है, कि उसे गुरु का साहचर्य सहज रूप में प्राप्त हो या वह अपनी इच्छानुसार गुरु से सम्पर्क स्थापित कर उनसे अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सके . . . क्योंकि भौतिक जगत में रहते हुए गुरु और शिष्य दोनों को कुछ निश्चित मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है, कुछ निश्चित सीमाओं को मानना पड़ता है।

तो फिर ऐसे समय में वह शिष्य क्या करे?

ऐसी परिस्थितियों में किसी ऐसे उपाय की आवश्यकता होती है, जो सभी सीमाओं से परे हो . . . और यह कीलक ऐसा ही सुगम उपाय है, जिसके माध्यम से गुरुदेव चाहे कहीं पर भी हों, उनसे मानसिक तरंगों के द्वारा सम्पर्क स्थापित कर वार्तालाप करना सम्भव हो पाता है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान — ज्ञान दान

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। आप भी 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मन्दिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वञ्चित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड) भेज दें, कि **"मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप नि:शुल्क 'गुरु दूरस्थ वार्तालाप वार्ताली कीलक' 330/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 30/-) की वी0पी0पी0 से भिजवा दें, वी0पी0पी0 आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि देकर छुड़ा लूंगा। वी0पी0पी0 छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।"**

आपका पत्र आने पर तथा 300/- + डाक व्यय 30/- = 330/- की वी0पी0पी0 से **'गुरु दूरस्थ वार्तालाप वार्ताली कीलक'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

:: सम्पर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-342001, फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

इस विश्व में माया के प्रकोप और अंधकार से बचाव का रास्ता केवल गुरु सेवा है, गुरु का सामीप्य है; क्योंकि सेवा द्वारा ही हम समीप हो सकते हैं।

सही रास्ता एवं उसके महत्व का दिग्दर्शन कराने वाले केवल वही हैं . . .

सारा संसार माया के विविध रूपों से घिरा हुआ है। हमारे चिन्तन का स्वरूप भी माया के जालों से बुना हुआ है। जब भी कोई लेखक सामान्य से सामान्य विषयों पर भी कोई लेख लिखता है, तो रामायण और महाभारत जैसे विशेष धार्मिक एवं ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थों एवं शास्त्रों के माध्यम से समझाने की कोशिश करता है, क्योंकि इन ग्रन्थों में सद्गुणों एवं दुर्भावनाओं के साथ-साथ धर्म-कर्म, अध्यात्म, दर्शन आदि अन्य विषयों का भी ज्ञान मिलता है।

इतना सब

कुछ

जानने के बाद भी

हम अंधकार में डूबे ही रहते हैं। फलस्वरूप हम अपनी मनो-भावनाओं का परित्याग करने में असफल ही रहते हैं।

माया, जिसे रामायण में निशाचर कहा गया है, एक ऐसी दीवार है, जिसको गिराना समान्य व्यक्तियों के लिए सम्भव नहीं है। हम अपने ही बनाये हुए जालों में उलझकर रह जाते हैं और हम चाहकर भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते हैं। मनुष्य मकड़े की तरह भौतिक साधनों को जुटाने में ही जालों का निर्माण करता रहता है।

सभी मनुष्यों में एक ही चेतना व्याप्त है, जो कि उसके अन्तस में निहित है। इसका विकास तथा इसकी पहचान ही मनुष्य का लक्ष्य है, उद्देश्य है।

यह माया ही हमारे विकास के मार्ग में एक बाधा है, माया का जाल जिन्दगी के हर दौर में अपनी करामात दिखाता ही रहता है। साधु-सन्त ही इस निशाचरी माया की दीवार को तोड़ने में सक्षम होते हैं। माया शब्द कुछ अटपटा सा लगता है, किन्तु इसको तोड़ पाना अंधकार से प्रकाश में जाना है। इसकी पकड़ बड़ी मजबूत है।

यदि राह चलते समय किसी गिरे पथिक को घायल अवस्था में देखें, तो सम्भवतः हमारे मन में एक दया-भाव उत्पन्न हो, ऐसा भी सम्भव है, कि हम उसकी कुछ सहायता भी कर दें, किन्तु दिल में उतनी तड़प पैदा नहीं हो सकती, जितनी कि उसी अवस्था में अपने किसी स्वजन को या परिवार के किसी सदस्य को या किसी आत्मीय को देखकर होगी। उस अपरिचित राही को हम प्रायः थोड़े ही समय में भूल जायेंगे, किन्तु अपने आत्मीय को भुलाना सम्भव नहीं होगा। बार-बार हमारा ध्यान उसी तरफ जायेगा, भले ही हम किसी अन्य स्थान में, उससे दूर हों, जहां से कुछ करना भी सम्भव न हो। इसे ही माया, महामाया का पर्दा कहा जा सकता है। यही वह बन्धन है, जिससे मनुष्य छुटकारा नहीं पाता है। ऐसे समय हम यह कहकर छुटकारा पा लेते हैं, कि वह अपना नहीं था। हम क्यों किसी के लिए अपना समय बर्बाद करें।

— लेकिन क्या आपने इस विषय में कभी गहराई से सोचा, कि अपना कौन है, कौन पराया . . ?

इन्सान की मृत्यु के समय उसकी पत्नी, पुत्र, भाई, माता-पिता या अन्य कौन परिजन उसका साथ देता है? कौन होता है उस समय अपना?

पूजा-पाठ हमारी मनोभावना का साकार रूप है। प्रार्थना भी हम अपनी निजी भावना से करते हैं। शान्ति के लिए यह एक पंथ है, रास्ता है। यह हमारी एक साकार अभिव्यक्ति है, जो कि मानसिक एवं भावात्मक है। अपने मन को, अपने अन्तर्मन को जाग्रत करने का एक मार्ग है, एक साधन है।

संसार के सभी जीवों की जीवन-शैली एक दूसरे से भिन्न है, मगर निशाचरों से अर्थात् माया से सभी घिरे हुए हैं, चाहे इंसान हो या पशु-पक्षी।

इन सभी विषयों पर प्रकाश डालने के लिए समय-समय पर साधु-सन्तों, गुरुओं तथा महापुरुषों का आगमन होता रहता है। ऐसे लोग माया के बन्धन को तोड़ सके तथा

हम जब जागेंगे तब करीब हो जायेंगे . . .

हमें शिष्य नहीं, 'उपनिषद' बनना है . . .

मेरा सांई मुझ में ज्यों पुहुपन में बास

सुबोध दयाल

समाज एवं देश-काल के भाल पर ज्योति जगा सके। आज भी हम जिनका अनुसरण एवं स्मरण करते हैं। शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, तुलसी, कबीर, सूर, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, गोरखनाथ आदि ऐसे अनेकों महापुरुष हुए, जो कि इस मायाजाल को तोड़कर अपना नाम अमर कर सके।

हमारे धर्म ग्रन्थों में माया के अनेक रूप बताये गये हैं — बिना समझे किसी को वचन देना या किसी प्रश्न का उत्तर देना, दुश्मनों पर विश्वास कर लेना, बिना सोचे कुछ देना या लेना, इसी प्रकार अनजाने में कार्य का होना भी माया के रूप हैं।

सामान्य मनुष्यों को माया ने किसी न किसी रूप में जकड़ रखा है। वह साकार रूप में भी तथा निराकार रूप में भी सबको अपने जाल में उलझाये हुए है। बड़े-बड़े संत-संन्यासी, सिद्ध, ऋषि-मुनि भी, यहां तक कि देवगण भी इस जाल में उलझ जाते हैं।

महाभारत के युद्ध में अर्जुन माया से ही घिरा था। आस्था से अधिक दान भी कर्ण के लिए माया ही थी, जिसके कारण उसे भी हार का मुंह देखना पड़ा, अन्यथा कर्ण को मारने के लिए भगवान कृष्ण को भी सोचना पड़ जाता।

हमारे धर्म ग्रन्थों में माया के अनेक रूप बताये गये हैं — बिना समझे किसी को वचन देना या किसी प्रश्न का उत्तर देना, दुश्मनों पर विश्वास कर लेना, बिना सोचे कुछ देना या लेना, इसी प्रकार अनजाने में कार्य का होना भी माया के रूप हैं।

माया के रूपों का वर्णन करना सम्भव ही नहीं है। विनाश के कार्य में लगे रहना, अंधकार या अज्ञान में रहना भी माया के रूप हैं और जब तक हम माया के जाल से बाहर नहीं आते, तब तक मानसिक चेतना का विकास सम्भव नहीं है। जब तक यह विकास नहीं होगा तब तक हम स्वयं को पहचान नहीं सकते। दोस्त-दुश्मन, अपना-पराया ये सभी रिश्ते माया के बन्धन ही हैं।

विनाश की जड़ '**क्रोध**' है। क्रोध तो ज्ञानियों को भी भ्रमित करके मायाजाल में उलझा देता है।

महाराजा दशरथ को '**प्रेम**' (राम के प्रति) ने मृत्यु का ग्रास बना लिया, कैकेयी तथा मन्थरा ने भी इस जाल को नहीं समझा। सामान्यतः इसे कोई समझ ही नहीं पाता है। दशरथ के हाथों अनजाने में श्रवण कुमार की मृत्यु तथा उसके माता-पिता का श्राप — ये सब माया के ही स्वरूप हैं।

महाभारत के युद्ध से पहले, अर्जुन को भी जब माया ने घेरा, तो उस माया के जाल से श्री कृष्ण ने उसे उबारा। काफी समझाने पर भी अर्जुन का संशय नहीं गया, तो भगवान कृष्ण को अपना विराट स्वरूप दिखाना पड़ा।

सामान्य मनुष्यों को माया ने किसी न किसी रूप में जकड़ रखा है। वह साकार रूप में भी तथा निराकार रूप में भी सबको अपने जाल में उलझाये हुए है। बड़े-बड़े संत-संन्यासी, सिद्ध, ऋषि-मुनि भी, यहां तक कि देवगण भी इस जाल में उलझ जाते हैं।

इस बन्धन को तोड़ने का, इससे उबरने का केवल एक ही मार्ग है, एक ही विकल्प है — गुरु चरणों में अपने को पूर्णरूप से विसर्जित कर देना। गुरु के समीप जाते ही ये बन्धन ढीले पड़ जाते हैं, इसे तोड़ने के लिए गुरु सेवा ही एक साधन है, गुरु कृपा ही मार्ग है।

क्योंकि सही रास्ते पर चलाना, रास्ते का महत्व एवं मार्ग प्रशस्त करने वाले केवल गुरु ही हैं और गुरु-शिष्य का सम्बन्ध तो युगों-युगों का है, क्योंकि यह सम्बन्ध शरीर का नहीं बल्कि आत्मा का सम्बन्ध है।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध तो पिता-पुत्र की हो तरह है या उससे भी ऊंचा है।

गुरु इस संसार में आते हैं, तो केवल इसीलिए, कि वह अपने शिष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकें, उसे वह मार्ग बता सकें, उसे उसका लक्ष्य बता सकें।

उसे माया के बन्धनों से मुक्त करके उस प्रकाश के दर्शन करा सकें।

उस आनन्द रस से उसे सराबोर कर सकें और शिष्य अपने आप को पहचान सके।

सिद्धि

'सिद्धि' स्तम्भ का आरम्भ उन सफलता प्राप्त साधकों के पत्रों द्वारा हुआ, जिन्हें गुरुदेव ने अक्षिगत रूप से प्रयोग बताये। उन प्रयोगों के माध्यम से अनेक पाठकों तथा साधकों को भी लाभ प्राप्त हुआ है। पत्रिका कार्यालय में निरन्तर आपके पत्रों की बढ़ती संख्या इस बात की साक्षी है। कुछ पत्र ऐसे भी प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने सफलता का जिक्र तो किया है, परन्तु वे संतुष्ट नहीं हैं। ऐसे साधकों तथा पाठकों से हम यही कहना चाहेंगे, कि यदि वे अपने मन से संशयात्मक भाव निकाल दें, तो निश्चय ही सफलता मिलेगी ही।

आपके द्वारा सम्पन्न किये गए प्रत्येक प्रयोग आपके भाग्य की बाधाओं को दूर करने में सहायक होते हैं।

क्या आपको चश्मा लगाना पड़ता है?

आपको पास या दूर की वस्तु को देखने के लिए चश्मा का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है अथवा डॉक्टर ने नेत्र पर अनावश्यक दबाव न पड़े, इस कारण भी आपको चश्मा लगाने की सलाह दे दी है और आप समझते हैं, कि चश्मा लगाना आपकी पर्सनॉलिटी के लिए उपयुक्त नहीं है। आप इससे शीघ्रातिशीघ्र छुटकारा पाना चाहते हैं, परन्तु मजबूरीवश आप ऐसा नहीं कर पा रहे हैं, तो इसे अपनाइए।

'चाक्षुष' को पूर्वाभिमुख हो कर एक स्वच्छ पात्र में स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करते हुए **'चाक्षुष'** पर जल चढ़ाएं –

मंत्र

।।ॐ ह्रं ह्रीं सः।।

OM HRAM HREEM SAH

मंत्र जप समाप्त करने के उपरान्त उस जल से अपने दोनों नेत्र धो लें। यह प्रयोग आप 9 दिन तक करें। इस प्रयोग को आप सूर्योदय के समय ही करें तथा इसे किसी भी दिन से आरम्भ किया जा सकता है।

न्यौछावर – 100/-

क्या आप जिस कार्य को कर रहे हैं, उसमें हतोत्साहित हो रहे हैं?

जब कोई व्यक्ति अपना कार्य आरम्भ करता है, तो निश्चय ही वह उत्साह और उमंग से परिपूर्ण होता है, लेकिन कुछ समय उपरान्त जब उस कार्य में निरन्तरता आ जाती है, तो उसकी एकरसता के फलस्वरूप वह व्यक्ति ज्यादा दिन तक स्वयं को उत्साहित नहीं रख पाता है और धीरे-धीरे निराश होता रहता है। यद्यपि कभी-कभी वह स्वयं भी समझ नहीं पाता, कि उसके साथ ऐसा क्यों घटित हो रहा है और उसकी इस निराशाजनक स्थिति के कारण कई बार उसे सुअवसरों से भी वञ्चित होना पड़ता है। यदि आप भी इसी प्रकार की मानसिकता से ग्रस्त हो रहे हैं, तो उसे समाप्त करने के लिए निम्न उपाय अपनाइए –

किसी कागज पर कुंकुम से निम्न मंत्र लिख कर उस पर दो पुष्प रख कर उसे अपने पास रख लें –

मंत्र

।।ॐ हुं हुं फट्।।

OM HUM HUM PHAT

फिर उपरोक्त मंत्र का प्रातः कार्य पर जाने से पूर्व सात बार जप करके जावें। यह प्रयोग आप पांच दिन तक करें। नित्य घर वापिस आते समय कागज को किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।

क्या आप पर अन्य लोग जल्दी हावी हो जाते हैं?

चुम्बकीय व्यक्तित्व का होना व्यक्ति के लिए प्रसन्नता की बात होती है। यदि आपका व्यक्तित्व ऐसा नहीं है और उस पर शीघ्रता से किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव पड़ता है तथा आप उसके प्रभाव में आकर किसी भी कार्य को अपने अनुरूप अंजाम नहीं दे पाते हैं, तो यह निश्चय ही अत्यन्त दु:ख का विषय है।

यदि आपके साथ ऐसा है, तो आप अपने व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने के लिए '**सौराहव**' (न्यौछावर - 120/-) को किसी सफेद वस्त्र में बांध कर, उस पर पांच पुष्प रखते हुए उसके समक्ष निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करें–

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ग्लौं नमः ॐ।।

OM HREEM GLOUM NAMAH OM

'**सौराहव**' को पुष्प समेत किसी चौराहे पर रख दें।

आप अपनी शारीरिक क्षमताओं को द्विगुणित करिए।

क्या आपको महसूस होता है, कि आपमें कार्य करने की क्षमता कम होती जा रही है या आप जितने उत्साहपूर्वक कार्य के आरम्भ को सोचते हैं, कार्य के क्रियाशील होने पर उतनी क्षमता से कार्य नहीं कर पाते? यदि ऐसा है, तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर आप अपनी वास्तविक कार्य क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग करें।

किसी भी सोमवार के दिन से इस प्रयोग को आरम्भ करें। प्रात:काल किसी निश्चित समय पर पद्मासन या सुखासन में बैठ जायें और गुरु पूजन कर '**निखिलेश्वरानन्द स्तवन**' के 10 श्लोक का अर्थ सहित उच्चारण करें।

आसन ऊनी प्रयुक्त करें तथा वातावरण सुगन्धित बना कर रखें। आप स्वयं में परिवर्तन अनुभव करेंगे।

क्या आपको अक्सर सिर दर्द की शिकायत रहती है?

लगातार सिर दर्द बना रहना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नहीं है। यदि आपको सरदर्द लगातार बना रहता है, तो आप प्रात: काल ही उठकर अपने दाहिने हाथ में '**रोगमुक्ति गुटिका**' को लेकर उसे देखते हुए निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें –

मंत्र

।।ॐ ऐं ग्लौं ठं ठं ॐ।।

OM AYEIM GLOUM THAM THAM OM

ऐसा सात दिन तक करें। सात दिन बाद गुटिका को दक्षिण दिशा में फेंक दें।

न्यौछावर –120/-

में समय है

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय के वे सभी रूप यहां प्रस्तुत हैं, जो कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति या अवनति के कारण होते हैं तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नीचे दी गई सारणी में समय को तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है — श्रेष्ठ, मध्यम और निकृष्ट। श्रेष्ठ समय जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी सम्पन्न करने पर कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निकृष्ट समय का उपयोग तो सदा से निषिद्ध है, क्योंकि यदि बनते हुए कार्य का प्रारम्भ भी भूल वश निकृष्ट समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि निकृष्ट समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे। यहां पर यह बात ध्यान रखने योग्य है, कि यदि आपने कोई कार्य श्रेष्ठ अथवा मध्यम समय में प्रारम्भ किया है और उसका समापन का समय निकृष्ट भाव से प्रभावित हो, तो मन में संशय का भाव नहीं लाना चाहिए। किन्तु यदि आपने दीक्षा ले रखी है, तो सदैव गुरु मंत्र का जप करें; यदि नहीं ले रखी है, तो इष्ट स्मरण कर कार्य की पूर्णता करें।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (3, 10, 17, 24 और 31 अगस्त)	ब्रह्म मुहूर्त 4.24 से 10.00 तक शाम 6.48 से 7.36 तक शाम 8.24 से 10.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	दिन में 10.00 से 2.00 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	दिन में 2.00 से 6.48 तक शाम 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.00 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक
सोमवार (4, 11, 18 और 25 अगस्त)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 7.30 तक दिन में 10.48 से 1.12 तक दिन में 3.36 से 5.12 तक शाम 7.36 से रात्रि 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	सुबह 9.00 से 10.48 तक दिन में 1.12 से 3.36 तक शाम 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक	सुबह 7.30 से 9.00 तक शाम 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
मंगलवार (5, 12, 19 और 26 अगस्त)	ब्रह्म मुहूर्त 4.24 से 8.24 तक दिन में 10.00 से 12.24 तक दिन में 4.30 से 5.12 तक शाम 7.36 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	सुबह 9.12 से 10.00 तक शाम 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	सुबह 8.24 से 9.12 तक दिन में 12.24 से 4.30 तक शाम 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
बुधवार (6, 13, 20 और 27 अगस्त)	ब्रह्म मुहूर्त 4.24 से 6.00 तक सुबह 7.36 से 9.12 तक दिन में 11.36 से 12.00 तक दिन में 3.36 से 6.00 तक शाम 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	सुबह 6.00 से 7.36 तक सुबह 9.12 से 11.36 तक दिन में 2.00 से 3.36 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	दिन में 12.00 से 2.00 तक शाम 6.00 से 6.48 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक
गुरुवार (7, 14, 21 और 28 अगस्त)	ब्रह्म मुहूर्त 4.24 से 8.24 तक दिन में 10.48 से 1.12 तक दिन में 4.24 से 6.00 तक शाम 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	सुबह 9.12 से 10.48 तक दिन में 1.12 से 1.30 तक दिन में 3.00 से 4.24 तक शाम 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक	सुबह 8.24 से 9.12 तक दिन में 1.30 से 3.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शुक्रवार (1, 8, 15, 22 और 29 अगस्त)	ब्रह्म मुहूर्त 4.24 से 6.00 तक सुबह 6.48 से 10.30 तक दिन में 12.00 से 1.12 तक दिन में 4.24 से 5.12 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक	दिन में 1.12 से 4.24 तक शाम 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	सुबह 6.00 से 6.48 तक दिन में 10.30 से 12.00 तक शाम 5.12 से 6.00 तक शाम 7.36 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
शनिवार (2, 9, 16, 23 और 30 अगस्त)	ब्रह्म मुहूर्त 4.24 से 6.00 तक दिन में 10.30 से 12.24 तक दिन में 3.36 से 5.12 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	सुबह 7.36 से 8.24 तक दिन में 1.12 से 2.00 तक शाम 6.00 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	सुबह 6.00 से 7.36 तक सुबह 8.24 से 10.30 तक दिन में 12.24 से 1.12 तक दिन में 2.00 से 3.36 तक शाम 5.12 से 6.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक

पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित ग्रंथ 'ज्योतिष और काल निर्णय' पर आधारित

नमस्तेऽस्तु भगवति! मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥

शारदीय नवरात्रि

भारतीय अध्यात्म में '**शक्ति**' को विशेष स्थान दिया गया है, यहां तक कि उसकी अनुपस्थिति में शिव को भी '**शव**' के समान ही माना गया है। भगवत्पाद शंकराचार्य ने '**सौन्दर्य लहरी**' में भगवती की स्तुति करते हुए कहा है, कि यदि शिव शक्ति से युक्त न हों, तो उनमें सामान्य रूप से हलचल भी सम्भव नहीं है। शक्ति ही शिव की आत्मा है। बिना आत्मा के प्राण जिस प्रकार निर्जीव पड़ा रहता है, उसी प्रकार से शिव भी शक्ति के बिना निर्जीव रहते हैं।

फिर भी कभी-कभी साधक इस बात को विस्मृत कर बैठते हैं और किसी भी साधना के मूल में न जाकर, उसके तात्त्विक अर्थ को न समझ कर, उथली बातों में ही उलझे रह जाते हैं एवं इस प्रकार वास्तविकता से कोसों दूर रहते हैं। यही उनकी असफलता का कारण भी बन जाता है।

यदि सही अर्थों में देख जाय, तो सृष्टि का प्रत्येक कण ही शक्ति तत्त्व से आपूरित है। शक्ति तत्त्व की आराधना-उपासना करने का यों तो कोई विशेष काल या क्षण नहीं है, क्योंकि जब भी बालक किसी आपदा में फंसता है, तो वह काल तथा क्षण का निर्णय किए बगैर ही मां का आह्वान कर लेता है और मां को उसके समक्ष प्रस्तुत होना पड़ता ही है। परन्तु फिर भी कुछ क्षण विशेष प्रकृति ने मां की आज्ञा से निर्मित किए हैं, जिनमें भगवती की कृपा को अमृत वर्षा को साधक निरन्तर अनुभव कर सकता है। ऐसा ही क्षण होता है शारदीय नवरात्रि का, जिसके सम्बन्ध में स्वयं भगवती ने कहा है –

शरत्काल महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः॥
सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

(दृष्टव्य दुर्गा 7)

अर्थात् 'शारदीय नवरात्रि में जो साधक मेरी साधना सम्पन्न करता है, उसे मैं धन, धान्य, पुत्र, यश, सम्मान आदि प्रदान कर उसे समस्त बाधाओं से मुक्ति प्रदान करती हूं।

जब भगवती स्वयं अपने साधक को यह सब कुछ प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं, तो साधक के लिए तो मात्र यही क्रिया शेष रहती है, कि वह उचित विधि से उनकी साधना कर उससे सब कुछ प्राप्त कर ले।

साधक को किसी भी क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती ही है, बिना शक्ति के उसकी देह में इतनी सामर्थ्य नहीं रहती है, कि वह साधना में जप रहे मंत्रों की आवृत्तियों से उत्पन्न ऊर्जा को धारण कर सके। कई बार साधक की दैहिक क्षमता न्यून होने के कारण वह स्वयं को संभाल नहीं पाता और तेज बुखार या किसी अन्य असन्तुलन का शिकार हो जाता है।

यह तो प्रकृति का एक साधारण नियम है, कि शक्ति तत्त्व के बिना इस सृष्टि में कोई भी क्रिया-प्रतिक्रिया सम्भव नहीं है। इसीलिए साधकों को शक्ति साधना करने की आवश्यकता बताई गई है। यहां तक कि जितने भी देवता हैं – विष्णु, शिव या ब्रह्मा, उन सबने ही शक्ति तत्त्व को धारण कर रखा है, जिसके आधार पर वे अपने कार्यों को गतिशील करते हैं।

शक्ति सम्पन्न होने पर ही देवों में भी दानवों पर विजय प्राप्त करने की क्षमता आ सकी अन्यथा शक्ति विहीन होने पर तो वे सदैव ही दानवों द्वारा पराजित हुए हैं। ऐसी ही अवस्था साधक की होती है। जब वह शक्ति साधना को सम्पन्न करता है, तो न सिर्फ आध्यात्मिक क्षेत्र में, अपितु भौतिक क्षेत्र में भी विजय तथा सम्पन्नता प्राप्त करता है। शक्ति तत्त्व से पूर्ण होने के उपरान्त ही वह अपने अन्दर देवत्व की भावभूमि बना सकता है, फिर वह अपने अन्दर के दानवों पर विजय प्राप्त कर सकता है और भौतिक रूप से वह देवों के समान सभी सुखों का उपभोग स्थायी रूप से कर पाने में सक्षम होता है।

उच्चकोटि के योगियों-संन्यासियों ने भी शक्ति तत्त्व की साधना सम्पन्न की और फिर उस परब्रह्म को प्राप्त कर सकने में समर्थ हुए। स्वयं राम ने भी रावण से युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए '**शक्ति तत्त्व**' की ही साधना सम्पन्न की थी।

अतः जो साधक शक्ति तत्त्व की साधना सम्पन्न करता है, वह निरन्तर उच्चता की ओर अग्रसर होता चला जाता है।

भगवती दुर्गा के स्वरूप का वर्णन करना तो सहज

नहीं है, क्योंकि जिनकी आभा कोटि सूर्य के समान प्रभावान हो, जिनमें समस्त ब्रह्माण्ड की गति, चेतना, समाहित हो, वे प्रकट हो भी जायें, तो साधक में यह सामर्थ्य नहीं होती, कि वह उनके उस परब्रह्म स्वरूप का विवेचन कर सके, उनकी स्तुति कर सके। यदि मां ही कृपा कर अपने किसी लीलामय स्वरूप को साधक के समक्ष प्रस्तुत करें, तो सम्भव है, कि वह उनकी स्तुति करने में समर्थ हो सके।

शुम्भ-निशुम्भ का वध करना, दुष्टों-दानवों का संहार करना — यह सब मां का लीलामय स्वरूप ही तो है, जिनकी आराधना भी साधक पूर्ण रूप से कर पाने में समर्थ नहीं होता, तो फिर उसके उस पूर्ण स्वरूप का साक्षात्कार वह किस प्रकार से कर सकेगा ?

उनके वात्सल्य के कारण ही उनके भक्तों, साधकों को कोई चुनौती नहीं दे सकता। **भगवती के इसी करुणामय स्वरूप को प्राप्त करने के लिए नवरात्रि के अवसर पर वह श्रेष्ठ प्रयोग प्रस्तुत किया जा रहा है।** यह मात्र प्रयोग ही नहीं है, अपितु आपके लिए सौभाग्य के दरवाजे खोलने वाली है। इस बार नवरात्रि में कुछ ऐसे काल खण्ड भी निर्मित हो रहे हैं, जो विशेष हैं, जिनके विषय में संशय जैसा शब्द प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। यह प्रयोग न सिर्फ आपकी बाधाओं से, आपकी समस्याओं से छुटकारा दिलाने वाला होगा, अपितु आपकी मनोवाञ्छित को भी पूर्ण करने में समर्थ होगा।

इस प्रयोग में प्रयुक्त होने वाली प्रत्येक सामग्री मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए। इस प्रयोग में आवश्यक सामग्री '**दुर्गा यंत्र**', '**चिरमी के नौ दानें**', '**वैदूर्य**' और दुर्गा मंत्र से सिद्ध '**हकीक माला**' है। यदि आप चाहें, तो इस प्रयोग की सामग्री जोधपुर से मंगवा सकते हैं।

न्यौछावर (प्रयोग पैकेट) — 240/-

इनमें से प्रत्येक सामग्री का अपना महत्त्व है तथा प्रत्येक सामग्री आपको किसी न किसी भौतिक तथा आध्यात्मिक उच्चता को दिलाने में समर्थ है। इस दुर्गा पूजन का प्रयोग विधि अक्टूबर के अंक में प्रकाशित होगी।

कालचक्र

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग विशिष्ट महत्त्व है। इस काल चक्र की गति के फलस्वरूप ऐसे विशिष्ट क्षण भी व्यक्ति के जीवन में आते हैं, जिनमें साधना विशेष को सम्पन्न करने पर सफलता का प्रतिशत अधिकतम होता है और श्रेष्ठ साधक इन विशेष क्षणों को अपने जीवन में उतार लेते हैं।

इस स्तम्भ के अन्तर्गत ऐसे ही चार विशिष्ट साधना मुहूर्त को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनमें सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होगी ही . . .

20-8-97 — भाद्रपद कृष्ण पक्ष की द्वितीया, बुधवार को पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में सुकर्मा योग व सिद्ध योग घटित हो रहा है। इस दिन लाल वस्त्र पर हल्दी से त्रिभुज बना कर उसके मध्य बिन्दी अंकित करें, उस पर '**गोमती चक्र**' (न्यौछावर—21/-) रख दें। इसके समक्ष रात्रि 9:12 से 10:48 तक निम्न मंत्र का जप करें, तो आपके जीवन में व्याप्त विघ्न समाप्त होंगे —

मंत्र

// ॐ क्लीं विघ्न विघातय क्रीं ॐ फट्//

OM KLEEM VICHNA VIDHATAY KREEM OM PHAT

जप पूर्ण होने पर '**गोमती चक्र**' नदी में प्रवहित कर दें।

22-8-97 — भाद्रपद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, शुक्रवार को रेवती नक्षत्र में अमृत सिद्धि योग तथा सर्वार्थ सिद्धि योग निर्मित हो रहे हैं। इस दिन रात्रि 8:24 से 9:36 मिनट तक '**सुतीक्ष्णा**' (न्यौछावर —60/-)के समक्ष निम्न मंत्र का जप करें, तो शत्रु पराजित होंगे और मुकदमों में सफलता मिलेगी —

मंत्र

// ॐ क्रीं शत्रून् विद्रावय सर्वत्र विजयाय ॐ फट्//

OM KREEM SHATRUN VIDRAVAY SARVATRA VIJYAY OM PHAT

अगले दिन सुतीक्ष्णा को निर्जन स्थान पर फेंक दें।

3-9-97 — भाद्रपद शुक्ल पक्ष की द्वितीया, बुधवार को उत्तरा फाल्गुणी नक्षत्र में साध्य योग एवं सिद्ध योग घटित हो रहा है। यह आन्तरिक उन्नति के लिए एक श्रेष्ठ मुहूर्त है। इस दिन प्रातःकाल 5:00 से 6:00 के मध्य '**सिद्धि माला**' (न्यौछावर—150/-) से निम्न मंत्र का जप कर आप अपनी आध्यात्मिक उन्नति को एक नया आयाम दे सकते हैं —

मंत्र

// ॐ ह्रीं सर्वोन्नतिं सिद्धये ॐ//

OM HREEM SARVONNATIM SIDDHAYE OM

माला को एक माह तक धारण कर विसर्जित कर दें।

6-9-97 — भाद्रपद शुक्ल पक्षीय पंचमी, शनिवार को ऋषि पंचमी दिवस पर सिद्ध योग घटित हो रहा है। इस श्रेष्ठ मुहूर्त में आर्थिक उन्नति हेतु '**लघु नारियल**' (न्यौछावर—21/-) को लाल वस्त्र में बांध कर उसके समक्ष सायंकाल 8:24 से 10:48 मिनट तक निम्न मंत्र का जप कर अपनी तिजोरी में रखें —

मंत्र

// ॐ श्रीं श्रीं आगच्छ सिद्धये ॐ नमः//

OM SHREEM SHREEM AAGACHCHHA SIDDHYE OM NAMAH

तीन माह बाद नारियल को नदी में प्रवहित कर दें।

पाठकों के पत्र

आपके पत्र हमारे लिए एक दिशा सूचक यंत्र का कार्य तो करते ही हैं, साथ ही साथ वे हमारे लिए एक प्रेरणा स्तम्भ का भी कार्य करते हैं। आपके ही पत्रों से हमें इस बात की जानकारी होती है, कि हमारा प्रयास कितना सार्थक हुआ है और भविष्य में किस प्रकार की साधना सामग्री आपके लिए प्रस्तुत करनी चाहिए। पत्रिका परिवार इस बात का बेहद ध्यान रखता है, कि पाठकों को ज्यादा से ज्यादा संतुष्टि प्राप्त हो सके। हमारा यही प्रयास होता है, कि पत्रिका का प्रत्येक अंक आपके लिए कुछ नवीन विषय वस्तु ले कर प्रस्तुत हो और आप सभी उसमें आशानुकूल लाभ प्राप्त कर जीवन को ऊर्ध्वगामी बना सकें।

पहला पत्र हमें धरचांवी, गिरिडीह से प्राप्त हुआ है, जिसे **श्री श्यामेन्द्र जी** ने लिखा है। वे लिखते हैं — मैं पत्रिका के माध्यम से पूज्य गुरुदेव से जुड़ा हूं और अब तक दो दीक्षाएं भी प्राप्त कर चुका हूं। जब से मैंने साधनाएं प्रारम्भ की हैं, मेरी इच्छाएं स्वतः ही पूर्ण होने लगी हैं। साधना काल में देवी-देवताओं के दर्शन भी प्राप्त होते रहते हैं और पूज्य गुरुदेव भी बिम्ब रूप में प्रस्तुत हो मार्गदर्शन कर जाते हैं। मेरी यह प्रबल इच्छा है, कि मैं महाविद्या, अप्सरा, यक्षिणी आदि साधनाएं सम्पन्न कर उनसे साक्षात्कार कर सकूं।

प्रिय श्यामेन्द्र जी, आपके विचार अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं शुभ हैं, आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हों, पूज्य गुरुदेव ने आपको ऐसा ही आशीर्वाद प्रदान किया है।

बारेडीह, रांची, बिहार से **श्री ब्रजेन्द्र नाथ सिंह** ने लिखा है — मैंने **दिसम्बर-96 के अंक** में राशिफल को देखा, तो स्थानान्तरण योग पढ़ने को मिला। पहले तो सहज ही विश्वास नहीं हुआ, लेकिन वास्तविकता यही है, कि मेरा स्थानान्तरण मनोवांछित स्थान पर हो गया है।

श्री बी.सी.प्रसाद, बाकरगंज, बिहार से लिखते हैं — पूज्य गुरुदेव द्वारा संरक्षित इस पत्रिका का प्रत्येक अंक किसी भी व्यक्ति को भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के चरम बिन्दु पर आसीन करने में पूर्ण समर्थ है। पत्रिका परिवार के सभी सदस्य परम सौभाग्यशाली हैं, कि उन्हें ऐसे अद्वितीय दिव्य विभूति का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। जनहितार्थ प्रकाशित यह पत्रिका दिनों-दिन उन्नति करे, यही मेरी शुभकामना है।

श्री रविन्द्र जी ने धरमदासपुर से लिखा है — मैं अपने आपको विशेष गौरवान्वित अनुभव करता हूं, क्योंकि मैंने पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त की है। दीक्षा प्राप्त करने के बाद से ही मेरी पत्नी की बीमारी ठीक हो गई है, मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार हो गया है, ऋण से भी मुक्ति प्राप्त हो रही है और जीवन निरन्तर उन्नति के मार्ग पर गतिशील है। यह पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा का ही फल है।

श्री अजय सक्सेना ने मुरैना, म.प्र. से लिखा है — **अक्टूबर-96 की पत्रिका** में प्रकाशित 'तुलसी गुटिका' का प्रयोग सौ प्रतिशत सफल रहा। पहले मेरे दोनों हाथों के पास से खाल उतरती थी, खुजली होती थी एवं चारों तरफ कालापन आ गया था, जिसे मैं करीब छः साल से भुगत रहा था। इसके लिए मैंने कई प्रकार के इलाज कराये थे, परन्तु कोई लाभ नहीं मिल पाया था। आज पत्रिका में प्रकाशित उस प्रयोग की बदौलत मैं इससे पूर्ण रूप से निजात पा चुका हूं। **मार्च-97 के अंक** में 'वराहमिहिर ने कहा' और 'निखिल प्रश्नोत्तरी' प्रकाशित कर आपने हमें कृतार्थ किया, इसके लिए मैं आपका सहृदय आभारी हूं।

यह पत्र उज्जैन से है, जिसमें लिखने वाले ने अपना नाम नहीं लिखा है — मैंने आपकी पत्रिका का बड़ी सूक्ष्मता से अध्ययन किया है और यह अनुभव किया है, कि इसमें दी हुई साधनाएं व मंत्र पूर्ण प्रामाणिक हैं और प्रत्येक साधना सम्पूर्ण जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने में समर्थ है। **मार्च-97 के अंक** में 'नारायण मंत्र' और 'षोडश योगिनी' आदि लेखों ने विशेष प्रभावित किया।

जानकारी

आपकी यह प्रिय पत्रिका **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** दो महीने अग्रिम गतिशील होती है, अर्थात् यह अंक अगस्त का है, तो इसमें अक्टूबर मास की साधनाएं व प्रयोग दिये जाते हैं।

ऐसा क्यों? इसलिए, कि साधनाओं के लिए यंत्र, उपकरण आदि की आवश्यकता होती है, जो मंत्र सिद्ध हों, प्राणश्चेतना युक्त हों। आपकी सुविधा के लिए पोस्टकार्ड पत्रिका में संलग्न होता है, जिस पर कोई डाक व्यय नहीं देना होता।

पर आप सोचते रहते हैं और विलम्ब होता रहता है, फिर हड़बड़ी में आप ऐन टाइम पर पोस्टकार्ड भेजते हैं, जो समय पर नहीं पहुंच पाता और आप उस साधना से वञ्चित रह जाते हैं।

क्योंकि आपका पोस्टकार्ड हम तक पहुंचने में 15-30 दिन का समय लग जाता है, फिर सुरक्षित पैकिंग व भेजने में 7-8 दिन का समय लगता है तथा आप तक वी.पी.पी. पहुंचने में 20-25 दिन लग जाते हैं, इस सारी प्रक्रिया में लगभग 50-55 दिन, अर्थात् दो महीने लग जाते हैं, फलस्वरूप विलम्ब से पोस्टकार्ड भेजने से वह साधना मुहूर्त निकल जाता है और उस साधना से आप वञ्चित रह जाते हैं।

इसलिए यदि आपको केन्द्र से ही मंत्र सिद्ध सामग्री मंगानी है, तो बिना हीला-हवाला किये तुरन्त पोस्टकार्ड भर कर भेज देना चाहिए, जिससे कि समय पर सामग्री प्राप्त हो सके।

सुविधा — आप जोधपुर टेलीफोन नं. — 0291-32209 अथवा फैक्स नं. 0291-32010 से भी सामग्री का आदेश दे सकते हैं।

('मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नवीनतम अंक में प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत)

ध्यान दें — आप सामग्री या दीक्षा से सम्बन्धित ड्राफ्ट 'मंत्र शक्ति केन्द्र' के नाम से ही भेजें।

दीपावली के 108 अचूक प्रयोग

बहुत दिनों के उपरान्त जब स्वामी ब्रह्माण्डेश्वरानन्द जी आश्रम में आये और गुरुदेव के समक्ष उपस्थित हुए, तो उनके नेत्रों से अश्रुधार प्रवहित होने लगी, उन्होंने ही पूज्य गुरुदेव के संग व्यतीत हुए संन्यास जीवन की अपनी स्मृतियों से कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण तंत्र की सिद्ध सामग्रियों का वर्णन दिया, जिसे पूज्य गुरुदेव ने समय-समय पर अपने संन्यास जीवन में उन्हें बताया था तथा उसका प्रयोग भी सम्पन्न करवाया था। उन्होंने स्पष्टता से कहा, कि यदि ये प्रयोग दीपावली के अवसर पर, जो तंत्र की दृष्टि से श्रेष्ठ समय होता है, यदि उस समय पर इन से सम्बन्धित प्रयोग सम्पन्न किये जायें, तो निश्चित सफलता सम्भव है, असम्भव जैसा शब्द जीवन के शब्दकोश में रहेगा ही नहीं।

14.10.97 से 14.11.97 के बीच में किसी भी दिन यहां पर दिये गये प्रयोग आप सम्पन्न कर सकते हैं। आप अपनी आवश्यकतानुसार एक दिन में चार प्रयोग भी सम्पन्न कर सकते हैं।

विद्युत प्रभा

मंत्र

// ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ //

OM HREEM HREEM OM

1. **विद्युत प्रभा** को लेकर इसके आगे धूप-दीप जला कर उपरोक्त मंत्र का 98 बार उच्चारण कर दीपावली को स्थिर लग्न (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में यदि साधक धारण करे, तो उसका स्वरूप कामदेव/रति के समान आकर्षक हो जाता है और वह किसी को भी सम्मोहित कर सकता है।
2. **विद्युत प्रभा** को उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण कर और अपने शत्रु का नाम लेकर अग्नि में समर्पित कर दिया जाय, तो 11 दिन के भीतर-भीतर शत्रु क्षमा मांग लेता है और साधक की हर बात मानने लगता है।
3. यदि साधक **विद्युत प्रभा** को अपने दाहिने हाथ में लेकर सात दिन तक नित्य 21 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें, तो शीघ्रातिशीघ्र इच्छित जगह विवाह होता है।
4. यदि दीपावली की रात्रि को **विद्युत प्रभा** के आगे 61 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण कर इसे बालक के गले में धारण करा दें, तो वह पढ़ाई में मन लगाता है और श्रेष्ठ अंक प्राप्त करता है।
5. कोई परेशानी या चिन्ता हो, तो रात्रि में **विद्युत प्रभा** को तकिए के नीचे रख कर उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण कर कोई भी प्रश्न सोच कर सोवें, तो सपने में सटीक उत्तर एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है। प्रातः काल गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।
6. हरदम बेचैनी तथा घबराहट होती हो, तो उपरोक्त मंत्र का 31 बार जप, **विद्युत प्रभा** को अपने हृदय पर रख कर करें। सात दिन तक यह प्रयोग नित्य करें, राहत अनुभव होगी।

चौखावर —120/-

वज्रांगी

मंत्र

// ॐ क्रीं क्लीं फट्//

OM KREEM KLEEM PHAT

वज्रांगी एक दिव्य गुटिका है, जिसे श्रेष्ठ योगी अपने पास रखते हैं। इसका साधनाओं में भी बहुत अधिक महत्त्व है।

7. **वज्रांगी** धारण करने से शरीर पुष्ट, रोग रहित एवं वज्र के समान दृढ़ हो जाता है।

8. यदि व्यक्ति पतला एवं कमजोर हो और वह श्रेष्ठ समय देखकर उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण कर वज्रांगी को लाल रंग के धागे में सवा महीने तक धारण करता है, तो उसकी देह आकर्षक, सुन्दर एवं स्वस्थ बनती है।

9. यदि दीपावली की रात को **वज्रांगी** के समक्ष 108 बार उपरोक्त मंत्र उच्चारण कर लाल कपड़े में लपेट कर उसे तिजोरी में रख दिया जाय, तो तिजोरी कभी खाली नहीं होती है और धन का लगातार आगमन होता ही रहता है।

10. दीपावली की रात्रि को ही **वज्रांगी** को दक्षिण दिशा की ओर उपरोक्त मंत्र का 45 बार उच्चारण कर फेंक दिया जाय, तो एक महीने के अन्दर-अन्दर मुकदमे में विजय प्राप्त होती है।

11. यदि पुत्र की कामना हो, तो वह स्त्री **वज्रांगी** का पूजन कर उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करे। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करे। ग्यारह दिन के उपरान्त **वज्रांगी** को निर्जन स्थान पर फेंक दे।

12. यदि **वज्रांगी** पर सात दिन तक उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण कर व्यक्ति अपनी जेब में रखकर काम पर जाता है, तो बड़े से बड़ा अधिकारी भी उसके आगे हकलाने लगता है और उसकी बात मान लेता है।

न्यौछावर –240/-

आन ल्युंग

मंत्र

// ॐ गीं श्रीं ह्लीं फट्//

OM GEEM SHREEM HLEEM PHAT

13. धन त्रयोदशी को **आन ल्युंग** को पीपल के पत्ते के ऊपर रख कर, उसका पूजन अक्षत, पुष्प तथा धूप से कर घी से उपरोक्त मंत्र की 21 आहुतियां दें, अन्तिम आहुति में आन ल्युंग को भी डाल दें, तो निश्चित ही घर में लक्ष्मी का वास होता है।

14. **आन ल्युंग** को यदि दीपावली के दिन उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करते हुए अपने पास रख लें, तो राजा-महाराजा भी उसका सम्मान करते हैं। 21 दिन बाद आन ल्युग को नदी में प्रवाहित कर दें।

15. **आन ल्युंग** को धारण करने मात्र से मस्तिष्क में चेतना प्रवाहित होने लगती है। यदि व्यक्ति कुछ समय तक नित्य ध्यान प्रक्रिया को अपनाये, तो निश्चय ही उसका मस्तिष्क जाग्रत होता है और वह इच्छा मात्र से ही सामने वाले व्यक्ति से कार्य करवाने में सक्षम होता है। इसे एक महीने बाद नदी में प्रवाहित कर दें।

16. **आन ल्युंग** सामने रख कर यदि अप्सरा या यक्षिणी साधना सम्पन्न की जाय, तो शत-प्रतिशत सफलता मिलती है।

17. **आन ल्युंग** जेब में रख कर जुआ खेलने जाये, तो व्यक्ति जीतता ही रहता है।

18. **आन ल्युंग** को लाल रंग के वस्त्र में एक इलायची बांध कर उपरोक्त मंत्र का 101 बार जप करके इच्छित व्यक्ति का नाम ले कर दबा दें, तो वह व्यक्ति वशीभूत होता है।

न्यौछावर –210/-

हिरव्यदा

मंत्र

// ॐ प्रं प्रौं ॐ//

OM PRAM PRAOUM OM

19. **हिरव्यदा** को ताम्रपात्र में रख कर उस पर उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण करते हुए जल चढ़ायें, फिर हिरव्यदा को जल में से निकाल कर पूजन स्थान में रख दें और वह जल पूरे घर में छिड़क दें। ऐसा करने से यदि घर में क्लेश हो रहा हो, तो वह समाप्त होता है। यह प्रयोग सात दिन का है, सात दिन बाद **हिरव्यदा** को नदी में प्रवाहित कर दें।

20. यदि साधक दीपावली के दिन तीन **हिरव्यदा** लेकर तीन अलग-अलग कुंओं, नदियों या तालाबों में विसर्जित कर दे, तो उसे आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होता है।

21. **हिरव्यदा** पर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करते हुए एक-एक कर चावल के दानें चढ़ायें तथा उन दानों को चिड़ियों को खिला दें, तो घर में व्याप्त कलह व झगड़े दूर होते हैं तथा निश्चय ही प्रेमपूर्ण वातावरण उपस्थित होता है। यह प्रयोग तीन दिन का है। तीन दिन बाद हिरव्यदा को किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।

22. यदि घर में चोरी हो गई हो, तो रात्रि को सोने से पहले **हिरव्यदा** के समक्ष उपरोक्त मंत्र का 95 बार उच्चारण कर, तकिए के नीचे उसे रख कर सो जायें। स्वप्न में चोरी के सामान की पूरी जानकारी मिल जाती है।

23. यदि **हिरव्यदा** को उपरोक्त मंत्र 51 बार बोलते हुए रोगी के शरीर के ऊपर पांच बार घुमा कर रख दें और दीपावली की रात्रि को दक्षिण दिशा की ओर निर्जन स्थान पर फेंक दिया जाय, तो रोगी उसी क्षण से स्वास्थ्य लाभ करने लगता है और रोगमुक्त हो जाता है। यह प्रयोग 14.10.97 से आरम्भ करना चाहिए।

24. 14.10.97 को **हिरव्यदा** को बालक के गले में धारण करा दें, तो बुरी नजर, बाल रोगों एवं अनिष्ट से छुटकारा मिलता है। सवा माह पश्चात इसे उतार कर तोड़ कर फेंक दें।

न्यौछावर –200/-

इन्द्रेश

मंत्र

// ॐ श्रीं इन्द्राक्षीं क्लीं ॐ //

OM SHREEM INDRAKSHI KLEEM OM

25. दीपावली की रात्रि में यदि मन की इच्छा बोल कर **इन्द्रेश** अग्नि में समर्पित कर दें, तो शीघ्र कामना पूर्ण होती है।

26. यदि किसी पर अभिचार या तांत्रिक प्रयोग हुआ हो, तो **इन्द्रेश** को उपरोक्त मंत्र 11 बार पढ़ते हुए शरीर के ऊपर से घुमाना चाहिए, फिर उसे दक्षिण दिशा में गाड़ देना चाहिए। विपरीत प्रभाव समाप्त हो जायेगा।

27. यदि **इन्द्रेश** को मस्तक पर धारण कर उपरोक्त मंत्र का 42 बार उच्चारण नित्य सात दिन तक किया जाय, तो व्यक्ति अद्वितीय, आभायुक्त एवं आकर्षक हो जाता है। सात दिन बाद इन्द्रेश को नदी के जल में विसर्जित कर दें।

28. यदि दुकान की बिक्री कम हो गई हो या गिरती ही जा रही हो, तो **इन्द्रेश** पर मुट्ठी भर उड़द के दानें चढ़ा कर उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का 75 बार उच्चारण करें। फिर उन उड़द के दानों को दक्षिण दिशा में फेंक दें। यह प्रयोग धन त्रयोदशी से आरम्भ कर गोवर्धन पूजा तक करें, फिर **इन्द्रेश** को किसी जलाशय में विसर्जित कर दें। ऐसा करने पर कुछ दिन के भीतर-भीतर दुकान की बिक्री बढ़ने लगती है।

29. यदि व्यापार में निरन्तर घाटा होता ही जा रहा हो, तो अपनी फैक्टरी, कार्यालय या व्यापारिक प्रतिष्ठान के चारों ओर चारों दिशाओं में एक-एक **इन्द्रेश** उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण कर गाड़ दें। फिर उस स्थान पर दो-दो फूल रख दें। ऐसा करने से व्यापार बढ़ता रहता है।

30. पूरे वर्ष भर अजेय और ताकतवान बने रहने के लिए, जिससे शत्रु आप पर हावी न हो सकें, **इन्द्रेश** को किसी मिट्टी के पात्र में चावल भर कर उस पर रख दें, फिर उस पर उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए सिन्दूर की नौ बिन्दियां ग्यारह दिन तक लगाएं, ग्यारह दिन बाद इन्द्रेश को पात्र सहित नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर –210/-

पिंगलाशा

मंत्र

// ॐ ह्लौं ह्स्फ्रौं ह्लीं ॐ //

OM HLOUM HASPHRAY HLEEM OM

31. **पिंगलाशा** को सफेद वस्त्र में लाल चन्दन से 'श्रीं' बीज लिख कर बांध दें, फिर उसका पूजन कर उसे तिजोरी में या पूजा स्थान में रख दें तथा नित्य इसके समक्ष 61 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण कर

धूप दिखा दें, तो घर में धन का आगमन होता है। सवा महीने बाद **पिंगलाशा** को वस्त्र सहित नदी में प्रवाहित कर दें।

32. यदि घर के सदस्यों को दुर्घटना या अकाल मृत्यु जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, तो एक **पिंगलाशा** को घर के पूजा स्थान में स्थापित कर उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का 11 बार जप कर सवा महीने तक नित्य करना चाहिए। सवा महीने के बाद इसे श्मशान में फेंक दें।

33. यदि ग्रह दोष के कारण बाधाएं उपस्थित हो रही हैं, तो चावल की नौ ढेरियां बना कर उन पर एक-एक सुपारी रखें। उनके समक्ष पुष्प बिछा कर **पिंगलाशा** को स्थापित करें। सभी सुपारियों का कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से पूजन करें, **पिंगलाशा** का भी इसी प्रकार पूजन करें और घी का दीपक लगायें। फिर प्रत्येक सुपारी को देखते हुए उपरोक्त मंत्र का ग्यारह-ग्यारह बार उच्चारण करें, **पिंगलाशा** को देखते हुए 21 बार जप कर समस्त सामग्री को किसी सफेद रंग के वस्त्र में बांध कर नदी में विसर्जित कर दें।

34. यदि दीपावली की रात्रि को किसी भोजपत्र पर इच्छित दो व्यक्तियों के नाम काजल से लिख कर, उसे दो **पिंगलाशा** और श्मशान की राख के साथ काले कपड़े में बांध कर दक्षिण दिशा की ओर जमीन में गाड़ दिया जाय, तो उन दोनों में भयंकर मतभेद हो जाता है।

35. यदि दीपावली की रात को घर के सारे सदस्यों के सिर पर **पिंगलाशा** घुमा कर दक्षिण दिशा में गाड़ दिया जाय, तो साल भर तक परिवार के सभी सदस्यों की सुरक्षा रहती है और उनके साथ कोई अप्रिय घटना नहीं घटती।

36. यदि मन में निरन्तर असुरक्षा का भय समाया रहता है, तो 14.10.97 को '**पिंगलाशा**' को अपने पास काले वस्त्र में बांधकर उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण कर रख लें, कहीं भी जायें **पिंगलाशा** अपने साथ रखें 14.11.97 को **पिंगलाशा** नदी में प्रवाहित कर दें। मन से भय समाप्त होगा और साहस तथा हिम्मत आयेगी।

न्यौछावर —210/-

तारकेश्वर

मंत्र

// ॐ प्रं श्रीं श्रौं प्रौं ॐ //

OM PRAM SHREEM SHROM PRAOUM OM

37. यदि **तारकेश्वर** के समक्ष दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र का 98 बार उच्चारण करने के बाद उसे अग्नि में समर्पित कर दें, तो व्यक्ति की निश्चय ही पदोन्नति होती है।

38. यदि **तारकेश्वर** को प्राप्त कर उसे दीपावली की रात्रि में उपरोक्त मंत्र का 96 बार उच्चारण कर अभिमंत्रित कर दें और साथ में इसे लेकर साक्षात्कार हेतु जायें, तो सफलता मिलती है और नौकरी प्राप्त होती है।

39. यदि राज्य बाधा या कोई भय व्याप्त हो, तो तीन **तारकेश्वर** लें और उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए एक को अग्नि में, दूसरे को जल में और तीसरी को धरती में दबा दें, सभी परेशानियां समाप्त हो जायें।

40. यदि प्रेमी-प्रेमिका या पति-पत्नी में आपसी मतभेद हों, तो एक सफेद वस्त्र पर दोनों व्यक्तियों के नाम लिख कर उसके साथ **तारकेश्वर** को बांध कर जलाशय में विसर्जित कर देने से उनके मतभेद समाप्त होते हैं और दोनों एक-दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होते हैं।

41. पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखने वाला व्यक्ति यदि **तारकेश्वर** को उपरोक्त मंत्र का 65 बार उच्चारण कर शिव मन्दिर में चढ़ा दे, तो उसकी कामना पूर्ण होती है।

42. यदि दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र का 21 उच्चारण कर **तारकेश्वर** को शत्रु के घर में डाल दें, तो उसके घर में निरन्तर कलह बनी ही रहती है और शत्रु कमजोर होता है।

न्यौछावर —210/-

अरुणज

मंत्र

// ॐ क्रीं क्रीं श्रौं श्रौं फट् //

OM KREEM KREEM SHROUM SHROUM PHAT

43. यदि **अरुणज** को अशोक वृक्ष के पत्ते पर रख कर उसका पूजन कर उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण किया जाय, तो छाती से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाते हैं। यह प्रयोग 14.10.97 से आरम्भ कर 14.11.97 तक करें। फिर अरुणज को नदी में प्रवाहित कर दें।

44. **अरुणज** को दाहिने हाथ में लेकर अपने मस्तक पर, जहां शिखा बांधी जाती है, वहां रखकर उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें, इसी प्रकार दोनों नेत्र, मुंह, गला, हृदय तथा पूरे देह पर घुमाते हुए करें, फिर अरुणज को किसी नदी, तालाब या जलाशय में प्रवाहित कर दें। इससे व्यक्ति का भाग्योदय होता है और वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

45. यदि घर में हमेशा कलह का वातावरण बना रहता हो, तो **अरुणज** के सामने 101 बार उपरोक्त मंत्र बोल कर, फिर उसे परिवार के हर सदस्य के सिर पर से घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। ऐसा करने से पारिवारिक शांति और प्रेम बना रहता है।

46. यदि व्यक्ति को बहुत अधिक क्रोध आता हो, तो सात दिन तक **अरुणज** पर त्राटक करते हुए प्रतिदिन उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण करें, सात दिन के बाद उसे नदी में प्रवाहित कर दें, क्रोध संयत होगा।

47. सम्पूर्ण कार्तिक मास में **अरुणज** को अपने पूजा स्थान में स्थापित रखने से गृह दोष का निवारण होता है।

48. महालक्ष्मी पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् '**अरुणज**' पर लाल पुष्प चढ़ाते हुए यदि कोई स्त्री सौन्दर्य प्राप्ति की कामना कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करती है, तो उसकी कामना पूर्ण होती है। अगले दिन अरुणज को किसी नारायण मन्दिर में चढ़ा दें।

न्यौछावर —210/-

कालप्रभा

मंत्र

// ॐ क्रौं क्रौं क्लीं क्लीं फट् //

OM KROUM KROUM KLEEM KLEEM PHAT

49. यदि **कालप्रभा** के समक्ष उपरोक्त मंत्र का 54 बार उच्चारण कर दीपावली की रात्रि में किसी निर्जन स्थान पर अपने सिर के ऊपर से तीन बार घुमाकर फेंक दिया जाय, तो व्यक्ति पर काल का दुष्प्रभाव नहीं होता।

50. यदि नौकरी मिलने में समस्या आ रही है, तो **कालप्रभा** को सफेद वस्त्र पर रख कर, उसका पूजन कर उपरोक्त मंत्र का नित्य 31 बार उच्चारण करें। यह प्रयोग सात दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति के बाद इन्टरव्यू देने के समय कालप्रभा साथ लेकर जायें तथा इन्टरव्यू से वापस आते समय कालप्रभा को किसी निर्जन स्थान में फेंक दें सफलता मिलती है।

51. यदि घर पर कोई तांत्रिक प्रभाव हो, तो दीपावली की रात को **कालप्रभा** के सामने उपरोक्त मंत्र को 45 बार उच्चरित कर सभी परिवार के सदस्यों पर इसे घुमा कर दक्षिण दिशा में गाड़ दें। ऐसा करने से अनिष्ट समाप्त होते हैं।

52. यदि कोई स्त्री अपने सौन्दर्य को बनाये रखना चाहती है, तो वह **कालप्रभा** के समक्ष नित्य 18 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करे। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक नित्य करे, ग्यारह दिन बाद इसे नदी में प्रवाहित कर दे।

53. यदि आप भगवती लक्ष्मी के बिम्बात्मक दर्शन प्राप्त करना चाहते हैं, तो मिट्टी के तीन दीपक लगा कर उनके मध्य में **कालप्रभा** को रख कर उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण करें। लक्ष्मी का बिम्बात्मक दर्शन होगा।

54. यदि दीपावली के दिन कालप्रभा को तिजोरी, फैक्टरी आदि में रखा जाय, तो धन, मान, यश एवं सम्पदा बढ़ती रहती है।

न्यौछावर —240/-

मदयन्तिका

मंत्र

// ॐ मृं मन्मथाय मृं ॐ //

OM MRIM MANMATHAY MRIMOM

55. जो कोई भी व्यक्ति दीपावली की रात्रि को **मदयन्तिका** धारण करता है, उसके घर में लक्ष्मी

का स्थायी आगमन होता है और उसकी उत्तरोतर उन्नति होती है।

56. धन त्रयोदशी से कार्तिक पूर्णिमा तक व्यक्ति यदि **मदयन्तिका** को लाल वस्त्र के ऊपर स्थापित कर उसका पूजन करता है तथा उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करता है, तो स्वतः ही जन सामान्य और जन विशेष (राजा, मंत्री, अधिकारी आदि) उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी बात मानने को तत्पर होते हैं।

57. यदि किसी भी इच्छा को मन ही मन बोल कर किसी भी दिन **मदयन्तिका** को जलाशय में विसर्जित कर दिया जाय, तो महीने भर के भीतर-भीतर इच्छा पूर्ण होती है।

58. यदि किसी व्यक्ति को अपना व्यक्तित्व आकर्षक बनाना हो, तो शुक्रवार के दिन नमाज पढ़ने की मुद्रा में बैठ कर **मदयन्तिका** को अपने दोनों हाथों में लेकर उसको अपलक देखते हुए उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करे, ऐसा ग्यारह दिन तक करे। ग्यारह दिन बाद **मदयन्तिका** को नदी में प्रवाहित कर दे।

59. **मदयन्तिका** के समक्ष यदि दीपावली की रात्रि से प्रारम्भ कर उपरोक्त मंत्र का सवा माह तक नित्य 21 बार जप करता है, तो भविष्य में वह जो कहता है, सत्य हो जाता है।

60. पीपल के पांच पत्तों पर सिन्दूर लगा कर उन्हें एक के ऊपर एक करके रख दें, फिर उन पर **मदयन्तिका** को स्थापित करें, उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का नित्य 65 बार जप करें। यह प्रयोग तीन दिन तक करें, तीन दिन बाद **मदयन्तिका** को नदी में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से निश्चय ही मुकदमे में विजय प्राप्त होती है।

न्यौछावर —210/-

वनप्रदा

मंत्र

// ॐ ध्रां ध्रीं ॐ //

OM DHRAM DHREIM OM

61. पुत्र निरन्तर रोग ग्रस्त बना रहे, तो उसकी रोगमुक्ति हेतु मिट्टी के दीपक में सरसों का तेल भर कर प्रज्वलित करें, तेल में **वनप्रदा** को डाल दें, दीपक को देखते हुए उपरोक्त मंत्र का जप 51 बार उच्चारण करें, फिर **वनप्रदा** को दीपक में से निकाल कर पूजा स्थान में रख दें। यह प्रयोग 13 दिन तक करें तथा प्रत्येक दिन मंत्र जप सम्पन्न होने के पश्चात् **वनप्रदा** निकाल कर दीपक को किसी चौराहे पर रख दें। आखिरी दिन **वनप्रदा** को भी दीपक के साथ ही रख दें।

62. यदि **वनप्रदा** पर उपरोक्त मंत्र को 100 बार उच्चरित करते हुए जल चढ़ाया जाय और फिर उस जल को समस्त घर में छिड़का जाय, तो घर में व्याप्त पारिवारिक कलह, तांत्रिक प्रयोग एवं क्लेश समाप्त होते हैं तथा परिवार सुव्यवस्थित होता है।

63. पति यदि किसी अन्य स्त्री की ओर आकर्षित हो रहा है, तो सिन्दूर की डिब्बी में **वनप्रदा** रख दें, फिर उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का 31 बार जप कर वह सिन्दूर लगा लें। यह प्रयोग सात दिन तक करें, सात दिन पश्चात् वनप्रदा को गौरी मन्दिर में चढ़ा दें।

64. यदि सफेद वस्त्र पर उपरोक्त मंत्र को ग्यारह बार कुंकुम से लिख कर उसमें **वनप्रदा** को बांध कर किसी पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। पदोन्नति के लिए आपका किया गया प्रयास सार्थक होगा।

65. **वनप्रदा** के आगे उपरोक्त मंत्र को 71 बार उच्चरित कर किसी भी मन्दिर में चढ़ा दें, तो निश्चित रूप से इच्छित वर अथवा कन्या की प्राप्ति होती है।

66. यदि सभी स्थितियां अनुकूल हों, फिर भी भाग्य साथ नहीं दे, तो उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण करते हुए घी की आहुति प्रदान करें तथा अन्त में **वनप्रदा** की भी एक आहुति दें। ऐसा करने से सोया हुआ भाग्य जाग्रत होता है।

न्यौछावर —240/-

त्रिलोचन

मंत्र

// ॐ श्रं श्रां श्रौं ॐ //

OM SHAM SHAAM SHAOUM OM

67. यदि राज्य बाधा आ रही हो, तो पीत वस्त्र पर कुंकुम से त्रिभुज बनाएं, त्रिभुज के मध्य में अपना नाम लिखें, अपने नाम के ऊपर **त्रिलोचन** को स्थापित

कर उस पर 51 चावल के दानें चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें। मंत्र जप के बाद चावल के दानों को पक्षियों को खिला दें। यह प्रयोग नौ दिन का है, नौ दिन पश्चात् **त्रिलोचन** को नदी में प्रवाहित करें।

68. व्यापारिक शत्रु यदि आप पर हावी हो रहे हों तथा आपकी प्रत्येक कोशिश असफल होती जा रही हो, तो दीपावली की रात्रि को **त्रिलोचन** के समक्ष उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण कर उसे अग्नि में समर्पित कर दें।

69. **त्रिलोचन** के समक्ष एक माह तक नित्य 31 बार उपरोक्त मंत्र का जप करने से शत्रु बाधा से मुक्ति मिलती है। इसे 14.10.97 से आरम्भ कर 14.11.97 तक सम्पन्न करें। 14.11.97 को त्रिलोचन को निर्जन स्थान पर फेंक दें।

70. **त्रिलोचन** के समक्ष उपरोक्त मंत्र का 65 बार उच्चारण कर यदि इस पर 65 केसर की बिन्दियां लगाई जायें, तो प्रयोग करने वाले का शरीर कामदेव/रति के समान आकर्षक हो जाता है। यह प्रयोग तीन दिन का है, तीन दिन बाद **त्रिलोचन** को नदी में प्रवहित कर दें।

71. उपरोक्त मंत्र का 19 बार जप कर **त्रिलोचन** को रोगी के सिर पर सात बार घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देने से रोग से मुक्ति प्राप्त होती है।

न्यौछावर — 180/-

लोपमुद्रा

मंत्र

// ॐ ल्रं क्षं त्रं ज्ञं ॐ //

OM LRIM KSHAM TRAM GYAM OM

72. आप अपने साथ घटित होने वाली भविष्य की घटनाओं के बारे में जानना चाहते हैं, तो 14.10.97 से प्रातः काल छः से सात बजे के मध्य यह प्रयोग सम्पन्न करें। सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण करें, फिर उसपर **लोपमुद्रा** को स्थापित करें, मिट्टी के चार दीपक स्वस्तिक के चारों ओर लगायें। उसके पश्चात् **लोपमुद्रा** को देखते हुए 21 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें। यह प्रयोग दीपावली के दिन तक करें। प्रयोग समाप्त होने पर **लोपमुद्रा** तथा सभी दीपकों को नदी में प्रवाहित कर दें।

73. यदि उपरोक्त मंत्र को 76 बार **लोपमुद्रा** के समक्ष उच्चारण कर धारण कर लिया जाय, तो व्यक्ति का जीवन सुख, उल्लास तथा आनन्द से युक्त हो जाता है। वृद्धावस्था के लिए यह प्रयोग श्रेष्ठ है।

74. मन की चञ्चलता के कारण साधक एकाग्रचित्त नहीं हो पाता है, अतः एकाग्रता प्राप्त करने के लिए उपरोक्त मंत्र का साधक पांच बार जप कर **लोपमुद्रा** धारण करे, तो उसका अपने ऊपर अद्भुत नियंत्रण हो जाता है। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करें। ग्यारह दिन बाद लोपमुद्रा को नदी में प्रवाहित कर दें।

75. यदि कोई पशु बीमार रहता हो, तो उपरोक्त मंत्र का 21 बार जप कर **लोपमुद्रा** उसके ऊपर से घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दिया जाय, तो वह ठीक होने लगता है।

76. यात्रा शुरु करते समय व्यक्ति उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार जप कर **लोपमुद्रा** को जेब में लेकर जाय, तो चोरी आदि का खतरा नहीं रहता और यात्रा सुखद होती है।

77. शिशु की दाहिनी बाजू पर **लोपमुद्रा** बांध दें, तो वह शीघ्र चलने और बोलने लगता है।

78. दीपावली के दिन घर में **लोपमुद्रा** का स्थापन स्वर्ण वर्षा कराने मे समर्थ कहा गया है। अतः इसको अपने पूजा स्थान में स्थापित करना ही प्रत्येक प्रकार से धन-धान्य, समृद्धि एवं ऐश्वर्य को देने वाला होता है। सवा महीने पश्चात् इसे नदी में प्रवाहित कर देना चाहिए।

न्यौछावर — 200/-

कमल लोचन

मंत्र

// ॐ रुं मुक्तायं रुं ॐ //

OM RUM MUKTAY RUM OM

79. यदि एक **कमल लोचन** को रोगी के तकिये के नीचे रख दिया जाय, तो वह कितना ही विक्षिप्त क्यों न हो, पन्द्रह दिन के भीतर-भीतर स्वस्थ होने लग जाता है।

80. दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र का 43 बार उच्चारण कर **कमल लोचन** अग्नि में समर्पित करें, तो आपके व्यक्तित्व में अत्यन्त प्रभावशाली परिवर्तन आयेगा।

81. दिनांक 17.10.97 को किसी सफेद रंग के वस्त्र

पर कुंकुम से चतुर्दल कमल बना कर उसके मध्य में अपना नाम लिखें, कमल के प्रत्येक दल पर भी कुंकुम की बिन्दी लगायें। अपने नाम के ऊपर **कमल लोचन** रख कर उपरोक्त मंत्र का 41 बार जप करें। यह प्रयोग दिनांक 24-10-97 तक नित्य करें। दीपावली की रात्रि को जप करने के उपरान्त इसे किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें। इस प्रयोग से व्यक्ति को जिन कारणों से दुर्भाग्य का सामना करना पड़ रहा है, वे समाप्त होंगे।

82. **कमल लोचन** को धन त्रयोदशी से गोवर्धन पूजा के मध्य किसी भी दिन श्रेष्ठ समय देख कर इसे यदि अपनी दुकान के सामने उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए जमीन में दबा दें, तो दुकान की ओर ग्राहक स्वतः ही आकर्षित होने लगेंगे।

83. नेत्रों में तीव्र सम्मोहन क्षमता प्राप्त करने के लिए **कमल लोचन** अशोक के पत्ते पर स्थापित कर उसका पूजन करें। घी से उपरोक्त मंत्र की ग्यारह आहुति देकर **कमल लोचन** की आहुति दें। अगले दिन हवन की राख को नदी में प्रवाहित कर दें तथा त्राटक का अभ्यास निरन्तर करें, शीघ्र सफलता प्राप्त होगी।

84. प्रेमी अथवा प्रेमिका का नाम के लिख कर श्वेत वस्त्र में बांध कर **कमल लोचन** को यदि दीपावली की रात्रि को जलाशय में विसर्जित कर दिया जाय, तो प्रेमी/प्रेमिका वशीभूत होते हैं।

न्यौछावर —240/-

मुक्त गुटिका

मंत्र

// ॐ मृदाय मुक्ताय ह्रीं ॐ //

OM MREEDAY MUKTAY HREEM OM

85. अपने चेहरे को सौन्दर्य युक्त बनाने के लिए **मुक्त गुटिका** को जल में रख कर उपरोक्त मंत्र का दस मिनट तक जप करें। जप के पश्चात उस के जल से अपने चेहरे को धो लें। यह प्रयोग 13 दिन तक करें। तेरहवें दिन गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

86. दीपावली को **मुक्त गुटिका** पर चावल रख कर उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का 91 बार उच्चारण कर किसी भी मंदिर में चढ़ाने से घर में पूर्ण सुख, आनन्द, प्रेम एवं समृद्धि की वर्षा होती रहती है।

87. विवाह योग न हो, तो भी यदि **मुक्त गुटिका** के समक्ष उपरोक्त मंत्र से 95 बार जप कर इसे लाल वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें, तो शीघ्र विवाह सम्पन्न होता है।

88. अपने उच्चाधिकारियों का विश्वास प्राप्त करने के लिए **मुक्त गुटिका** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर नित्य उस पर ग्यारह पीले फूल चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का 20 मिनट तक का जप करें। यह प्रयोग 21 दिन तक करें, 21 दिन बाद **मुक्त गुटिका** को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

89. यदि राज्य बाधा हो, तो दीपावली की रात्रि को तीन **मुक्त गुटिका** लेकर एक अग्नि में, दूसरा पानी में और तीसरा धरती में (गड्ढे में) दबा देना चाहिए, राज्य भय समाप्त होगा।

90. **मुक्त गुटिका** को केले के वृक्ष की जड़ में रख कर उसके समक्ष 35 बार उपरोक्त मंत्र उच्चारण करें, तो निश्चय ही मेधा शक्ति तीव्र होती है। प्रयोग समाप्त होने पर **मुक्त गुटिका** को उसी जड़ में ही दबा दें।

न्यौछावर —60/-

क्रीं चक्र

मंत्र

// ॐ क्रौं क्रीं ॐ //

OM KROUM KREEM OM

91. यदि शत्रुओं ने जीना हराम कर दिया है और खुद की व परिवार वालों की जान पर बन आई है, तो एक कागज पर शत्रुओं के नाम लिख कर, उसके ऊपर **क्रीं चक्र** को पांच काली मिर्च के दानों के साथ रख कर उपरोक्त मंत्र को 21 बार उच्चरित कर अग्नि में समर्पित कर दें, शत्रु स्वतः ही निर्बल हो जायेंगे।

92. यदि किसी प्रकार की ऊपरी बाधा घर में हो, तो उपरोक्त मंत्र को 48 बार **क्रीं चक्र** के आगे उच्चारित कर उसे अग्नि में अर्पित करें। फिर उस राख को किसी नदी में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से ऊपरी बाधा खत्म हो जाती है।

93. यदि **क्रीं चक्र** को व्यक्ति के सिर पर से 21 बार घुमा कर शिवालय में अर्पित कर दिया जाय, तो बुरे योगों का नाश होता है और व्यक्ति उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

94. यदि रोग जाता ही न हो, शरीर दुर्बल होता जा रहा हो, तो **क्रीं चक्र** पर उपरोक्त मंत्र 31 बार पढ़कर उसे रोगी के सिर के ऊपर पांच बार घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए। ऐसा करने से रोगी ठीक होने लग जाता है।

95. यदि शिशु बुरी नजर से पीड़ित हो तो, **क्रीं चक्र** को 24 घंटे तक उसके गले में धारण करा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए।

96. यदि दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र का **क्रीं चक्र** के सामने 100 बार उच्चारण किया जाय और फिर इसी मंत्र से गुटिका को अग्नि में समर्पित कर दिया जाय, तो दरिद्रता, रोग तथा निर्धनता का नाश होता है और व्यक्ति की इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

न्यौछावर — 80/—

साबर गुटिका

मंत्र

// ॐ हिरि पिरि हिरि ॐ //

OM HIRI PIRI HIRI OM

97. दीपावली की रात्रि को **साबर गुटिका** के समक्ष उपरोक्त मंत्र को 21 बार उच्चारित कर उसे तिजोरी में रखने से धन उत्तरोत्तर बढ़ता ही रहता है।

98. पुत्र आज्ञाकारी न हो, तो उसे सन्मार्ग पर लाने के लिए **साबर गुटिका** पर हल्दी-केसर से पुत्र का नाम लिखें, फिर उसे एक कागज में मौली से बांध कर, उसे अपने दाहिने हाथ में रख कर उपरोक्त मंत्र का सात दिन तक 42 बार जप करें। सात दिन बाद गुटिका को कागज सहित नदी में प्रवाहित करें।

99. यदि प्रेमिका किसी और की ओर आकर्षित है, तो उपरोक्त मंत्र 103 बार **साबर गुटिका** के समक्ष उच्चारित करें और फिर उसे दक्षिण दिशा में फेंक दें। ऐसा करने से उन दोनों में विद्वेषण हो जाता है और इस का प्रेम पुन: प्राप्त होता है।

100. मुकदमे में विजय प्राप्त करने के लिए **साबर गुटिका** को लाल वस्त्र में पांच काली मिर्च के दानों के साथ बांध कर उसके समक्ष मुकदमे में विजय प्राप्त करने की कामना करते हुए 51 बार उपरोक्त मंत्र का जप कर नदी पर प्रवाहित कर दें।

101. यदि व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है, तो **साबर गुटिका** पर अपना नाम लिख कर उसे मिट्टी के पात्र में चावल तथा काले तिल के साथ रख कर, उसका मुख लाल वस्त्र से बांध कर नदी में प्रवाहित करे।

102. दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र 95 बार **साबर गुटिका** के समक्ष उच्चारित कर यदि इसे किसी मंदिर में चढ़ा दें, तो शीघ्र ही पदोन्नति, उत्तम नौकरी की प्राप्ति, व्यापार लाभ आदि प्राप्त होता है।

न्यौछावर — 120/-

सूर्याभ

मंत्र

// ॐ श्रं श्रौं श्रं फट् //

OM SHAM SHAOOM SHAM PHAR

103. यदि **सूर्याभ** को गले में धारण किया जाय, तो सहजता से ध्यान की स्थिति प्राप्त होती है।

104. यदि दीपावली को उपरोक्त मंत्र 51 बार बोल कर **सूर्याभ** को शत्रु के घर में फेंक दिया जाय, तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी 15 दिनों के अंदर पैरों में आ गिरता है।

105. यदि **सूर्याभ** को बालक के गले में दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र 63 बार पढ़ते हुए धारण करा दिया जाय, तो बालक कुशाग्र बुद्धि एवं वाक् चातुर्य युक्त होता है।

106. घर की तिजोरी भरी रहे, घर में अन्न, धन आदि बना रहे, इसके लिए दीपावली की रात्रि को **सूर्याभ** लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रखें।

107. **सूर्याभ** के समक्ष दीपावली के दिन उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार जप कर उसे अपने सिर पर से घुमा कर नदी में प्रवाहित करने से व्यक्तित्व निखरता है।

108. गुरु सिद्धि प्राप्त करनी हो, तो दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र **सूर्याभ** के समक्ष 81 बार बोलकर, इसे गले में धारण कर लें, गुरु किसी न किसी रूप में अवश्य ही दर्शन देंगे।

न्यौछावर — 120/-

वस्तुत: ऊपर दिए गए सभी 108 प्रयोग अपने आपमें ही प्रामाणिक हैं। इन सभी 108 प्रयोगों में से किसी भी प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात उस प्रयोग में निर्दिष्ट दिवस को अथवा 15.11.97 को गुटिका, यंत्र अथवा माला को नदी में विसर्जित करना आवश्यक है। श्रद्धायुक्त होकर सम्पन्न किये गये प्रयोग शीघ्र फलप्रद होते हैं।

शास्त्रोक्त श्री कृष्ण पूजन विधान

अपने सामने चौकी रख लें, ऊपर लाल वस्त्र बिछा लें, एक थाली या प्लेट उस पर रख लें, उसमें कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनावें। सामने भगवान श्री कृष्ण का भव्य और सुन्दर चित्र स्थापित करें। धूप और दीप जला लें। दोनों हाथ जोड़कर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें –

ॐ शान्तिरस्तु, ॐ पुष्टिरस्तु, ॐ तुष्टिरस्तु,
ॐ वृद्धिरस्तु, ॐ ऋद्धिरस्तु ॐ अविघ्नमस्तु,
ॐ आयुष्यमस्तु, ॐ आरोग्यमस्तु, ॐ शिवमस्तु,
ॐ शिव कर्मास्तु, ॐ कर्म समृद्धिरस्तु,
ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु, ॐ वेदसमृद्धिरस्तु,
ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु, ॐ धनधान्य समृद्धिस्तु।
ॐ इष्टसंपदस्तु, ॐ अनिष्ट निरसनमस्तु।
यत् पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद् दूरे हतमस्तु।

गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़कर गणपति का स्मरण करें –

नमो देव गणेशाय नमस्ते विघ्न नाशन।
नमः कात्यायनी पुत्र नमः परशुपाणये।।
देहि मे रूप सौभाग्यं देहि मे सर्वसम्पदः।
इच्छासिद्धि प्रदो देव शुभं कुरु शुभेश्वर।।
श्री गणाधिपतये नमः ध्यानं समर्पयामि।।
स्नानार्थं गङ्गाजलं समर्पयामि नमः।।
वस्त्रोपवस्त्रार्थे मंगलसूत्रं समर्पयामि नमः।।
चन्दनं, अक्षतान्, पुष्पं, धूपं दीपं च समर्पयामि नमः।।
नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।

कलश स्थापन

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चावलों से अपनी बायीं ओर भूमि पर 'स्वस्तिक' बना कर उसके ऊपर एक कलश में जल भर कर स्थापित करें, कलश में अक्षत तथा पुष्प डाल दें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर वरुण देवता का आवाहन करें –

ॐ भूर्भुव स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः।
वरुणमावाहयामि स्थापयामि नमः।।

इसके बाद सामने स्थापित कृष्ण चित्र या विग्रह को वस्त्र से अच्छी तरह पोंछ लें और धूप और दीप जला लें।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़ कर भगवान श्री कृष्ण का ध्यान करें –

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः।।
ॐ कृष्णाय नमः ध्यानं समर्पयामि।।

आवाहन

दोनों हाथ जोड़ कर श्री कृष्ण का आवाहन करें –

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संन्निधौ भव।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।
तत्रादौ आसनं, पाद्यं, अर्घ्यं समर्पयामि नमः।।

तीन आचमनीय जल चढ़ावें।

स्नान

भगवान श्री कृष्ण को स्वच्छ जल से स्नान करायें –

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत

निम्न संदर्भ का उच्चारण कर पञ्चामृत से स्नान करायें –

पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।।

शुद्धोदकस्नान

पञ्चामृत से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान करायें –

शुद्धं वत्सलिलं दिव्यं गङ्गाफलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।।

वस्त्र

भगवान श्री कृष्ण को वस्त्र समर्पित करें –

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः वस्त्रं समर्पयामि,

यज्ञोपवीत

भगवान श्री कृष्ण को यज्ञोपवीत अर्पण करें –

ॐ श्री कृष्णाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्ध

भगवान श्री कृष्ण को चन्दन चढ़ायें –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः चन्दनं समर्पयामि।।

पुष्प

पुष्प और पुष्प मालाओं से भगवान श्री कृष्ण को अलंकृत करें –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।।

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ कृष्णाय नमः धूपमाघ्रापयामि।।

दीप

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः दीपं दर्शयामि।।

नैवेद्य

भगवान के सामने नैवेद्य रख कर ग्रास-मुद्रा दिखायें –

1. ॐ प्राणाय स्वाहा – कनिष्ठिका, अनामिका और अंगूठा मिलायें।
2. ॐ अपानाय स्वाहा अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलायें।
3. ॐ व्यानाय स्वाहा – मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलायें।
4. ॐ उदानाय स्वाहा – तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलायें।
5. ॐ समानाय स्वाहा – सब अंगुलियां मिलायें।

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर नैवेद्य भगवान को निवेदित करें –

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि,
मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।।

पानीय जल अर्पित करें, पुनः आचमनीय जल अर्पित करें।

दक्षिणा

द्रव्य दक्षिणा अर्पित करें –

दक्षिणा प्रेम सहिता यथाशक्तिसमर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।।

आरती

पुष्प अक्षतादि से सुसज्जित थाली में घृत की बत्ती को प्रज्वलित कर अपने स्थान पर खड़े होकर भगवान की मङ्गलमय आरती करें –

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजंती माला, बजावै मुरलि मधुर बाला।।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला।
गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली।।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक बनी काली।
कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की।।
श्री गिरधर आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।
कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं।
गगन सों सुमन राशि बरसै, बजे मुरचंग।
मधुर मिरदंग, गवालनी संग, अतुल रति गोप कुमारी की।
श्री गिरधर आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।
जहां ते प्रकट भई गंगा, कुलुष कलि हारिणि श्री गंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा, बसी शिव सीस जटा के बीच।।
हरै अघ कीच, चरन छवि श्री बनवारी की।
श्री गिरधर आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू।
चहूं दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हंसत मृदु चंद चांदनी चंद।
करत भव फन्द, टेर सुन दीन भिखारी की।
श्री गिरधर आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।

स्तुति-प्रार्थना

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः।।

पुष्पाञ्जलि

हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करते हुए पुष्पाञ्जलि समर्पित करें –

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं।।
महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः।
सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति।।
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवाः सभासद इति।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

क्षमा प्रार्थना

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

प्रसाद ग्रहण

अन्त में भगवान को भोग लगाये गये नैवेद्य को प्रसाद रूप में अपने परिवार जनों को बांट कर स्वयं भी ग्रहण करें।

गुरुर्बिना गतिर्नास्ति

गुरु मेरी आस्था, गुरु मेरा विश्वास

लाखों-करोड़ों में से किसी एक के नसीब में होता है प्रेम . . . और जिसने जिन्दगी में प्रेम को समझ लिया, उसने ईश्वर को समझ लिया, उसने पूर्णता को समझ लिया। यह रास्ता है ही इतना उबड़-खाबड़, कि पैर लड़खड़ा जाते हैं, पर इस मार्ग पर चलने वालों को देखा जाय, तो एक ही ध्वनि उनके रोम-रोम से उच्चरित होती है --

गुरु ही मेरी आस्था, गुरु ही मेरा विश्वास!

संसार एक बन्धन से बंधा है, यह बन्धन भी भौतिकता का है। भौतिकता हमें सांसारिक सुखों की ओर खींचती है, जो मृग मरीचिका की तरह होती है। आध्यात्मिकता हमें प्रकृति के नजदीक ले जाती है, प्रकृति के साथ एकात्म होना सिखाती है, जिसके न आनन्द की कोई सीमा है और न ही मानसिक सुख-शान्ति की।

संसार के प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वस्तु का युग्म होता है, नर-मादा, अच्छाई,-बुराई, पाप- पुण्य, धर्म-अधर्म, भगवान-भक्त, गुरु-शिष्य — ये सब युग्म ही हैं, जो एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। भगवान अपने भक्त की रक्षा इस प्रकार करता है, कि कहीं उसके विश्वास को ठेस न लगे। गुरु अपने शिष्य को इस तरह तैयार करता है, कि उसके गुरुत्व का कोई अंश बाकी न रह जाय, जिससे उसका शिष्य वञ्चित रहे। गुरु अपनी सम्पूर्ण साधनात्मक तपस्या को शिष्य के अन्दर उतार देता है, शिष्य के लिए केवल एक कार्य रह जाता है — अपने गुरु में श्रद्धा, विश्वास व आस्था को बनाये रखना।

अब यहां बात आती है आस्था और विश्वास की। दोनों एक जैसे होकर भी अलग कैसे हैं? क्यों हैं? जिस प्रकार दूध को जमाने के लिए खट्टे पदार्थ की आवश्यकता होती है, तब कहीं जाकर दही बनता है। दही में भी मक्खन छुपा होता है लेकिन क्या हम उस मक्खन को सीधे प्राप्त कर सकते हैं? नहीं, इस मक्खन को प्राप्त करने के लिए दही को बिलोना पड़ेगा, उसमें ऊष्मा पैदा करना होगा, तब उसी ऊष्मा के माध्यम से ही उस मक्खन को प्राप्त किया जा सकता है।

ठीक उसी प्रकार हमें गुरु रूपी दुग्ध में अपनी आस्था की खटाई को डालना पड़ेगा, तब जाकर होगा दही रूपी मिलन या गुरु-सामीप्य प्राप्त होगा। अब इसे अपने त्याग एवं समर्पण की मथानी से मथना होगा, तब हमें प्राप्त होगा विश्वास रूपी मक्खन, जो हमारे जीवन को एक नया मोड़ देगा। इस मक्खन को प्राप्त करने के लिए कहीं भटकने की भी जरूरत नहीं हैं। मात्र गुरु में आस्था एवं विश्वास बनाये रखें। त्याग का अर्थ यह नहीं है, कि आप घर-बार छोड़ दें, अपना व्यापार या गृहस्थी छोड़ दें। गुरु तो यह छुड़ाना चाहता भी नहीं है, वह तो चिर सुख देने वाला होता है, वह आपको दुःखी कैसे कर सकता है? त्याग का अर्थ है, कि सब कुछ करते हुए, भोगते हुए, उसमें लिप्त न होना। सेवा का अभिप्राय है दूसरों को सुख पहुंचाना। इस प्रकार यदि देखें, तो **'त्याग और सेवा एक दूसरे के पूरक हैं।'**

त्याग तथा सेवा को समझ लेना जरूरी है। यदि कोई व्यक्ति घायल हो, तो सामान्य परिस्थितियों में यदि हम उसकी कुछ सहायता कर सकते हैं, वह भी निःस्वार्थ भाव से, तो इसे सेवा कहा जा सकता है। यह आर्थिक, शारीरिक अथवा मानसिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। किसी दुःख में स्वयं उसके कार्य को करना ही शारीरिक सेवा है। इसी प्रकार दुःख के समय उसे सान्त्वना देना मानसिक सेवा कहा जा सकता है यथा -आप बिल्कुल न घबरायें, हम आप के साथ

है, यह तो चार दिन का बुरा समय आ गया है। यह समय तो भगवान राम, राजा हरिश्चन्द्र पर भी पड़ा था। कोई भी इससे बचा नहीं है, अतः आप चिन्ता न करें।

त्याग का अर्थ है, कि स्वयं को थोड़ा कष्ट देकर भी दूसरों को सुख देना। किसी के दुःख के समय अपने क्षुद्र स्वार्थ एवं सुख से ऊपर उठ कर कार्य करना ही त्याग है, अन्तर केवल भावभूमि का है। ऐसे त्यागी व्यक्ति ही वास्तव में इन्सान हैं, उन्हें ही 'संत' कहा जा सकता है। ऐसे व्यक्तियों का 'मैं' (अहं) समाप्ति की ओर होता है। 'मैं' एक ऐसा शब्द है, जिसके दो अर्थ हैं - एक तो स्वयं का अहं है, दूसरा 'मैं' समय, स्थान व परिस्थितियों के आधार पर बदलता रहता है, यथा पत्नी के सामने जाकर पति बन जाता है, माता-पिता के सामने पुत्र तथा अपने बच्चों के सामने जाकर पिता बन जाता है। अपने बच्चों के अलावा यदि सभी बच्चों का पिता बन कर देखने की भावना विकसित हो जाये, तो सारी समस्या ही समाप्त हो सकती है।

मनुष्य जन्म प्राप्त कर भी व्यक्ति धन, पत्नी, पुत्र मकान आदि को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है और इसी प्रयास में भागता रहता है। वह सोचता है, कि इसके द्वारा उसे सुख प्राप्त हो जायेगा, परन्तु यह सुख केवल मृग मरीचिका है, छलावा है, धोखा है, फरेब है। असली सुख तो गुरु में सेवा है, जिससे भगवत् प्राप्ति होती है। फिर भी हम दुःखदायी सुख की तरफ भागते हैं।

अब थोड़ा सा विचार करें, कि हमें यहां बहुत दिन तक नहीं रहना है, क्योंकि यहां सब कुछ नाशवान है। क्या लेकर मैं आया था तथा क्या लेकर जाऊंगा? जिसने जन्म लिया है, उसे मृत्यु का ग्रास तो होना ही पड़ेगा। अतः मन में यह भावना लायें, कि मैं तो हूं, किन्तु हूं भगवान का। इस प्रकार धीरे-धीरे आप की मनः स्थिति व्यापक होगी, क्योंकि यहां सब कुछ तो उसी का है।

मानव जन्म तो अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित करके गुरु सेवा द्वारा परमात्मा में विलीन होने के लिए ही हुआ है। अब समय आ गया है, कि हम अपनी आंखों पर से स्वार्थ का परदा हटाकर उस सद्गुरु को, उस परम तत्त्व को पहिचान कर, अपने पापों का, बुरे कर्मों का प्रायश्चित करें तथा अपने को उन्हीं सद्गुरु में विलीन कर दें। मैंने जो समझा है, देखा है, उसे ही आपके सामने उजागर कर रहा हूं। वे ही सर्वव्यापक हैं, शिवस्वरूप हैं, यह कहने में मुझे संकोच भी नहीं है, अतः ये क्षण गंवाने के लिए नहीं हैं। सद्गुरु ही सबको मोक्ष देने वाले हैं।

मनुष्य जन्म प्राप्त कर भी व्यक्ति धन, पत्नी, पुत्र मकान आदि को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है और इसी प्रयास में भागता रहता है। वह सोचता है, कि इसके द्वारा उसे सुख प्राप्त हो जायेगा, परन्तु यह सुख केवल मृग मरीचिका है, छलावा है, धोखा है, फरेब है। असली सुख तो गुरु में सेवा है, जिससे भगवत् प्राप्ति होती है।

तो आइये! खो जायें उनके चरणों में, समर्पित कर दें अपने आपको, क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। हजारों-हजारों वर्षों बाद आता है ऐसा समय। यह हमारा सौभाग्य है, कि हमें यह समय मिल रहा है, अतः अब एक क्षण भी नहीं गंवाना है, वैसे भी हम बहुत देर कर चुके हैं इस मृग तृष्णा में पड़ कर।

इस जीवन का सार निखिल है,
हम भक्तों का प्यार निखिल है।
जीवन का है यह परम सत्य,
ईश्वर का आकार निखिल है।।
सब नदियों की धार निखिल है,
सब तीरथ के द्वार निखिल हैं।
गुरु बिन होते सभी अधूरे,
हम सबके आधार निखिल हैं।।
नव पुष्पों के शृंगार निखिल है,
माधुर्य की बहार निखिल है।
सुध-बुध खोकर पांव पड़ूं,
मेरे अब संसार निखिल हैं।।
आशीष की बौछार निखिल है,
हम सबके उद्धार निखिल हैं।
प्रेम रंग में सबको रंग दें,
ऐसे कलाकार निखिल हैं।।

12.10.97

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्।
सर्वं पापं विनश्यति।।

पापांकुशा एकादशी

साधना में असफलता प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण कारण होता है पूर्वजन्मकृत दोष, जिसके समापन के पश्चात् ही साधक साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकता है।

प्रत्येक जीव विभिन्न योनियों से होता हुआ निरन्तर गतिशील रहता है। हालांकि उसका बाहरी चोला बार-बार बदलता रहता है, परन्तु उसके अन्दर निवास करने वाली आत्मा शाश्वत है, वह मरती नहीं है, अपितु भिन्न-भिन्न शरीरों को धारण कर आगे के जीवन क्रम की ओर गतिशील रहती है।

जो कार्य जीव द्वारा अपनी देह में होता है, उसे कर्म कहते हैं और उसके सामान्यतः दो भेद हैं — शुभ कर्म यानि कि पुण्य तथा अशुभ कर्म अर्थात् पाप। शुभ कर्म या पुण्य वह होता है, जिसमें हम किसी को सुख देते हैं, किसी की भलाई करते हैं और अशुभ कर्म वह होता है, जिसमें हमारे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त होता है, जिसमें हमारे द्वारा किसी को संताप पहुंचता है।

मानव योनि ही एक ऐसी योनि है, जिसमें वह अन्य कर्मों को सञ्चित करता रहता है। पशु आदि तो बस पूर्व कर्मों के अनुसार जन्म ले कर ही चलते रहते हैं, वे यह नहीं सोचते, कि यह कार्य मैं कर रहा हूं या मैं इसको मार रहा हूं। अतः उनके पूर्व कर्म तो क्षय होते रहते हैं, परन्तु नवीन कर्मों का निर्माण नहीं होता; जबकि मनुष्य हर बात में 'मैं' को ही सर्वोच्चता प्रदान करता है . . .

और चूंकि वह प्रत्येक कार्य का श्रेय खुद लेना चाहता है, अतः उसका परिणाम भी उसे ही भुगतना पड़ता है।

*निश्चय ही यह साधना एक श्रेष्ठ साधना है, जिसे सम्पन्न कर कोई भी साधक, जिसे निरन्तर साधना में असफलता प्राप्त होती हो, वह निश्चय ही सफलता प्राप्त करता है। देखने में यह साधना आपको भले ही लघु प्रतीत हो रही हो, परन्तु कभी-कभी एक छोटी सी घटना भी पूरे जीवन को परिवर्तित करने में सक्षम होती है, एक छोटी सी गोली भी व्यक्ति को मृत्यु प्रदान करने में सक्षम होती है . . . फिर तो यह एक ऐसी साधना है, जिसके विषय में मात्र इतना ही कहा जा सकता है — **'देखन में छोटे लगे, घाव करे गम्भीर'***

मनुष्य जीवन और कर्म

मनुष्य जीवन में कर्म को शास्त्रीय पद्धति में तीन भागों में बांटा गया है —

1. सञ्चित
2. प्रारब्ध
3. आगामी (क्रियमाण)

'सञ्चित कर्म' वे होते हैं, जो जीव ने अपने समस्त दैहिक आयु के द्वारा अर्जित किये हैं और जो वह अभी भी करता जा रहा है।

'प्रारब्ध' का अर्थ है, जिन कर्मों का फल अभी गतिशील है, उसे वर्तमान में भोगा जा रहा है।

'आगामी' का अर्थ है, वे कर्म, जिनका फल अभी आना शेष है।

इन तीन कर्मों के अधीन मनुष्य अपना जीवन जीता रहता है। प्रकृति के द्वारा ऐसी व्यवस्था तो रहती है, कि उसके पूर्व कर्म सञ्चित रहें, परन्तु दुर्भाग्य यह है, कि मनुष्य को उसके नवीन कर्म भी भोगने ही पड़ते हैं, फलस्वरूप उसे अनन्त जन्म लेने पड़ते हैं। परन्तु यह तो एक बहुत ही लम्बी प्रक्रिया है और इसमें तो अनेक जन्मों तक भटकते रहना पड़ता है।

परन्तु एक तरीका है जिससे व्यक्ति अपने छल, दोष, पाप को समूल नष्ट कर सकता है, नष्ट ही नहीं कर सकता, अपितु भविष्य के लिए अपने अन्दर अंकुश भी लगा सकता है, जिससे वह आगे के जीवन को पूर्ण पवित्रता युक्त जी सके, पूर्ण दिव्यता युक्त जी सके और जिससे उसे फिर से कर्मों के पाश में बंधने की आवश्यकता नहीं पड़े।

साधना : एकमात्र मार्ग

. . . और यह तरीका, यह मार्ग है साधना का, क्योंकि साधना का अर्थ ही है, कि अनिच्छित स्थितियों पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर अपने जीवन को पूरी तरह साध लेना, इस पर पूरी तरह से अपना नियन्त्रण कायम कर लेना।

यदि यह साधना तंत्र मार्ग के अनुसार हो, तो इससे श्रेष्ठ तो कुछ हो ही नहीं सकता, इससे उपयुक्त स्थिति तो और कोई हो ही नहीं सकती, क्योंकि स्वयं शिव ने '**महानिर्वाण तंत्र**' में पार्वती को तंत्र की विशेषता के बारे में समझाते हुए बताया है —

कल्किल्मष दीनानां द्विजातीनां सुरेश्वरि।
मेध्या मेध्य विचाराणां न शुद्धिः श्रौतकर्मणा।।
न संहिताद्यैः स्मृतिभिरष्टसिद्धिर्नृणां भवेत्।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते।।
विनाह्यागम मार्गेण कलौ नास्ति गतिः प्रिये।
श्रुतिस्मृतिपुराणादि मयैवोक्तं पुरा शिवे।।
आगमोक्त विधानेन कलौ देवान्यजेत्सुधीः।।

— हे देवी! कलि दोष के कारण ब्राह्मण या दूसरे लोग, जो पाप-पुण्य का विचार करते हैं, वे वैदिक पूजन की विधियों से पापहीन नहीं हो सकते। मैं बार बार सत्य कहता हूं, कि संहिता और स्मृतियों से उनकी आकांक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। कलियुग में तंत्र मार्ग ही एकमात्र विकल्प है। यह सही है, कि वेद, पुराण, स्मृति आदि भी विश्व को किसी समय मैंने ही प्रदान किया था, परन्तु कलियुग में बुद्धिमान व्यक्ति तंत्र द्वारा ही साधना कर इच्छित लाभ पाएगा।

इससे स्पष्ट होता है, कि तंत्र साधना द्वारा व्यक्ति अपने पाप पूर्ण कर्मों को नष्ट कर, भविष्य के लिए उनसे बंधन रहित हो सकते हैं।

वैसे भी व्यक्ति यदि जीवन में पूर्ण दरिद्रता युक्त जीवन जी रहा है या यदि वह किसी घातक बीमारी की चपेट में है, जो कि समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही हो, तो यह समझ लेना चाहिए, कि उसके पाप आगे आ रहे हैं . . .

नीचे मैं कुछ स्थितियां स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि व्यक्ति के पूर्व पापों के कारण जीवन में प्रवेश करती हैं —

1. घर में बार-बार कोई दुर्घटना होना, आग लगना, चोरी होना आदि।
2. पुत्र या संतान का न होना या होने पर तुरन्त मर जाना।
3. घर के सदस्यों की अकाल मृत्यु होना।
4. जो भी योजना बनायें, उसमें हमेशा नुकसान होना, व्यापार या कार्य में निरन्तर घाटा ही घाटा होना।
5. हमेशा शत्रुओं का भय होना।
6. विवाह में अत्यन्त विलम्ब या घर में कलह पूर्ण वातावरण, तनाव आदि।
7. हमेशा पैसे की तंगी होना, दरिद्रतापूर्ण जीवन, बीमारी और अदालती मुकदमों में पैसा पानी की तरह बहना।

ये कुछ स्थितियां हैं, जिनमें व्यक्ति जी-जान से कोशिश करने के उपरान्त भी यदि उन पर नियंत्रण नहीं प्राप्त कर पाता, तो समझ लेना चाहिए, कि यह पूर्व कर्मों के दोष के कारण ही घटित हो रहा है। इसके लिए फिर उन्हें साधना का मार्ग अपनाना ही चाहिए, जिसके द्वारा उसके समस्त दोष नष्ट हो सकें और वह जीवन में सभी प्रकार से वैभव, शांति और श्रेष्ठता प्राप्त कर सके।

पापांकुशा साधना

ऐसी ही एक साधना है **पापांकुशा साधना**, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दोषों को — चाहे वह दरिद्रता हो, अकाल मृत्यु हो, बीमारी हो या चाहे और कुछ हो, उसे पूर्णतः समाप्त कर सकता है और अब तक के सञ्चित पाप कर्मों को पूर्णतः नष्ट करता हुआ भविष्य के लिए भी उनके पाश से मुक्त हो जाता है, उन पर अंकुश लगा पाता है।

इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति के जीवन में यदि ऊपर बताई गई स्थितियां होती हैं, तो वे स्वतः ही समाप्त

हो जाती है। वह फिर दिनों-दिन उन्नति की ओर अग्रसर होने लग जाता है, इच्छित क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है और फिर कभी भी, किसी भी प्रकार की बाधा का सामना उसे अपने जीवन में नहीं करना पड़ता।

यह साधना अत्यधिक उच्चकोटि की है और बहुत ही तीक्ष्ण है। चूंकि यह तंत्र साधना है, अतः इसका प्रभाव शीघ्र देखने को मिलता है। यह साधना स्वयं ब्रह्म हत्या के दोष से मुक्त होने के लिए एवं जनमानस में आदर्श स्थापित करने के लिए कालभैरव ने भी सम्पन्न की थी . . . इसी से इस साधना की दिव्यता और तेजस्विता का अनुमान हो जाता है . . .

यह साधना तीन दिवसीय है। इसे **पापांकुशा एकादशी 12.10.97** से या **किसी भी एकादशी** से प्रारम्भ करना चाहिए। इसके लिए '**समस्त पाप-दोष निवारण यंत्र**' तथा '**हकीक माला**' की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम साधक को ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान आदि से निवृत्त हो कर, सफेद धोती धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठना चाहिए और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर '**समस्त पाप दोष निवारण यंत्र**' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन सम्पन्न करना चहिए। 'मैं अपने सभी पाप-दोष समर्पित करता हूं, कृपया मुझे मुक्ति दें और जीवन में सुख, लाभ, सन्तुष्टि प्रसन्नता आदि प्रदान करें' — ऐसा कहने के साथ यदि अन्यकोई इच्छा विशेष हो, तो उसका भी उच्चारण कर देना चाहिए। फिर '**हकीक माला**' से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करना चाहिए —

मंत्र

// ॐ क्लीं ऐं पापानि शमय नाशय ॐ फट्//

OM KLEEM AYEIM PAPATI SHAMAY
NASHAY OM PHAT

यह मंत्र अत्यधिक चैतन्य है और साधना काल में ही साधक को अपने शरीर का ताप बदला मालूम होगा। परन्तु भयभीत न हों, क्योंकि यह तो शरीर में उत्पन्न दिव्याग्नि है, जिसके द्वारा पाप राशि भस्मीभूत हो रही है। साधना समाप्ति के पश्चात साधक को ऐसा प्रतीत होगा, कि उसका सारा शरीर किसी बहुत बड़े बोझ से मुक्त हो गया है, स्वयं को वह पूर्ण प्रसन्न एवं आनन्दित महसूस करेगा और उसका शरीर फूल की भांति हल्का महसूस होगा।

जो साधक अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें तो यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि जब तक पाप कर्मों का क्षय नहीं हो जाता, व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति जागृत हो ही नहीं सकती और न ही वह समाधि अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

साधना के उपरान्त यंत्र तथा माला को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है और व्यक्ति समस्त दोषों से मुक्त होता हुआ पूर्ण सफलता अर्जित कर, भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों मार्गों में श्रेष्ठता प्राप्त करता है।

न्यौछावर — 300/-

प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि

जीवन में बल, बुद्धि, साहस, कर्मठता, तेजस्विता, ओज और तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता, संकटों पर विजय प्राप्त कर लेने का साहस और सब कुछ कर लेने का अदम्य उत्साह का मिला-जुला रूप यदि कहीं है, तो उस शब्द को हनुमान कहते हैं, बजरंग कहते हैं, क्योंकि जीवन पंगु, निर्बल, कमजोर, असहाय लोगों के लिए नहीं है।

यह भी सत्य है, कि जीवन सीधा-सादा जीवन नहीं है, जीवन में तो सैकड़ों परेशानियां हैं, सैकड़ों संकट हैं, सैकड़ों अड़चनें हैं और पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार हैं; वे जो हमें ऊंचा उठता देखकर पीछे से सैकड़ों प्रकार के षड्यंत्र तैयार कर लेते हैं और हमारा सारा जीवन विषाद, तनाव, बाधाओं, अड़चनों और परेशानियों से जूझते हुए व्यतीत होने लगता है . . . और हम जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते और वह यदि नहीं कर पाते, तो जीवन एक साधारण जीवन बन करके रह जाता है।

फिर इसका समाधान क्या है ? फिर किस प्रकार से इस जीवन में तेजस्विता, उत्साह, प्रफुल्लता और जोश आये ? कौन सा ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दिखा सकें, कि एक सामान्य परिवार में उत्पन्न हो कर भी बहुत कुछ कर सकते हैं — यह बहुत कुछ कर देने की क्षमता केवल 'हनुमान साधना' के माध्यम से ही सम्भव है।

न्यौछावर — 40/-

व्यक्ति के भाग्य को हिमालय से भी उच्च... आकाश से भी विस्तृत... करने वाली एक मात्र महाविद्या दीक्षा

मातंगी महाविद्या दीक्षा

मन में पवित्रता का बोध होने लगता है 'दीक्षा-संस्कार' शब्द से ही, और प्राचीन ग्रन्थों का अवलोकन करने पर इस शब्द का उल्लेख प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है, किन्तु इसका क्या अर्थ होता है और इसके क्रियात्मक ज्ञान का क्या पक्ष है – यह आज प्रायः लोग नहीं जानते हैं। ऐसा इसलिए होता है, कि लोग ज्ञान की उस वास्तविकता से अलग-थलग हो गये हैं, जिसके कारण कभी हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था।

दीक्षा-संस्कार का महत्त्व केवल वे ही व्यक्ति समझ सकते हैं, जो जीवन के अन्तिम पड़ाव पर हैं और जब वे एक नजर अपने बीते हुए जीवन पर डालते हैं, तो उनके हाथ केवल कंकड़-पत्थर के अतिरिक्त कुछ नहीं आता है और वे महसूस करते हैं, कि 'काश! उनके जीवन का वह यौवन पुनः लौट आता!' किन्तु ऐसा नहीं होता है, क्योंकि प्रकृति का नियम अत्यन्त कठोर है और उस पर इन सब भावनामयी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ज्ञान के अभाव में व्यक्ति को उचित दीक्षा संस्कार प्राप्त न होने के कारण दुःखी, कष्टमय एवं तनाव पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है और वे अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाते हैं, जिससे उनका जीवन सार्थक नहीं हो पाता है।

व्यक्ति जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सके, उसका जीवन सार्थक हो सके, इसके लिए वह क्या करे?

– इसका एकमात्र उपाय है, कि वह सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त करने का प्रयास करे।

दीक्षा का स्वरूप

दीक्षा द्वारा संस्कारित होना एवं पूर्ण रूप से आध्यात्मिक पथ पर गतिशील होना, यह अलग-अलग भावभूमि है। आध्यात्मिक होना एक नितान्त पृथक एवं उच्च भावना है, जिसकी पूर्ति सामान्य दीक्षा या ज्ञान दीक्षा द्वारा कदाचित् नहीं हो सकती है। शिशु का आध्यात्मिक विकास जितना दीक्षाओं के माध्यम से होता है, उतना साधनाओं के द्वारा नहीं हो सकता। यूं भी शिशु साधना के पथ पर गतिशील हो कैसे सकता है? किन्तु वही शिशु निर्मल चित्त के कारण दीक्षा को जितनी सम्पूर्णता से ग्रहण करता है, उतना सामान्य व्यक्ति नहीं कर पाता। यहां यह बात भी समझने योग्य है, कि शिशु को दीक्षा के माध्यम से आध्यात्मिक पथ पर बढ़ने का तात्पर्य यह नहीं है, कि वह बड़ा होकर संन्यासी बन जाये और घर-बार त्याग दे।अनेक लोगों में इस तरह की मिथ्या धारणायें हैं।

दीक्षा तो एक संस्कार है, जिसके माध्यम से

कुसंस्कारों का क्षय होता है, अज्ञान, पाप और दारिद्र्य का क्षय होता है तथा ज्ञान शक्ति और सिद्धि प्राप्त होती है और इसके द्वारा उमंग, प्रसन्नता एवं भौतिक व आध्यात्मिक लाभ की प्राप्ति होती है। दीक्षा से शरीर की समस्त अशुद्धियां मिट जाती हैं और पशु भावना का प्रशमन हो जाता है।

वर्तमान युग में मानव जीवन के प्रारम्भिक पड़ाव से अन्तिम पड़ाव तक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। व्यक्ति जब तक भौतिक जीवन का पूर्णता से निर्वाह नहीं कर लेता है, तब तक उसके मन में आसक्ति का भाव रहता ही है और जब इन इच्छाओं की पूर्ति होगी, तभी वह आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उन्नति कर सकता है। इन भौतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति दीक्षाओं के माध्यम से सम्भव है।

अतः दीक्षा प्राप्ति के लिए शुभ योग, मुहूर्त का होना परम आवश्यक है। यह अनुभव सिद्ध सत्य है, कि गुरु के निर्णय और आदेश के अनुसार दीक्षा ग्रहण की जाये, क्योंकि समस्त नियम-उपनियम उस समय उपेक्षणीय हो जाते हैं, जब साधक गुरु आज्ञा पालक बन जाता है। किन्तु ऐसी स्थिति में गुरु का मूर्धन्य तपस्वी होना आवश्यक है, जो कालवेत्ता हों, जिन्हें सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान हो, जिन्हें दीक्षा विधि का ज्ञान हो, जिन्होंने ऐसी दीक्षाएं प्राप्त की हों और देने की विधि ज्ञात हो। भगवान शिव स्कन्द से कहते हैं, कि जिस दीक्षा के द्वारा मनुष्य को द्विजत्व की प्राप्ति होती है, उस दीक्षा को ही संस्कार-दीक्षा कहते हैं।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है, कि चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ मनुष्य इस श्रेष्ठ मानव जीवन को प्राप्त करता है। किन्तु ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस जीवन का सही उपयोग नहीं होने के कारण उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है, इसके बावजूद भी व्यक्ति जीवन के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझ पाता है और अपना अमूल्य समय ऐसे कार्यों में नष्ट कर देता है, जिनका उसके जीवन में विशेष प्रयोजन नहीं होता है।

इस जीवन के रहस्य को समझने के लिए, उच्चता प्राप्ति के लिए तथा बार-बार जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति के लिए दीक्षित होना आवश्यक है। अमरत्व कैसे प्राप्त किया जा सकता है — इसका ज्ञान व्यक्ति को सद्गुरु के मार्ग निर्देशन से ही प्राप्त हो सकता है। गुरु अपने शिष्य के अपूर्ण जीवन को पूर्ण बनाने में सहायक बनते हैं।

जितने भी महापुरुष हुए हैं, चाहे वह कृष्ण हों, चाहे वह राम हों अथवा विश्वामित्र हों, सबने अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए, अमरत्व प्राप्त करने के लिए जीवन के इस रहस्य को समझा और सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त कर पूर्णता प्राप्त की।

सांदीपन प्रसादेन कृष्णः सर्वं चिकीर्षति।
विश्वामित्रं गुरुं प्राप्य रामः सर्वत्र राजते।।
अहो भाग्यं अहो दैव्यं धन्यं शिष्यस्य जीवितं।
सद्गुरुः करुणां कृत्वा दीक्षा ज्ञानं विशुद्धयति।।

अर्थात् 'गुरु सांदीपन की कृपा से कृष्ण सब कुछ करने में समर्थ हुए और इस प्रकार विश्वामित्र की शिक्षा द्वारा रामचन्द्र जी सर्वत्र सुशोभित हैं। जब सद्गुरु कृपा करके शिष्य को दीक्षित करते हैं, तब उस शिष्य का जीवन धन्य और दिव्य बन जाता है।'

दीक्षा संस्कार आज के युग में जीवन का अद्वितीय सौभाग्य है। 'दीक्षा' जो आज के मशीनी युग में एक कल्पनातीत सी प्रतीत होने वाली वास्तविकता है, जिसके माध्यम से आज के युग में मुरझाये लोगों के चेहरों पर नई उमंग व चेतना आ सकती है और जिसका अनुभव कर सकते हैं आप अपनी आत्म शक्ति, प्राण शक्ति को जाग्रत कर।

दीक्षा गुरु-शिष्य के मध्य सम्बन्ध सूत्र है। ज्ञान, शक्ति और सिद्धि का दान एवं अज्ञान, पाप और दारिद्र्य का क्षय ही दीक्षा है।

गुरुकृपा प्रसादेन यत्र संदिश्यते परम्।
जीवनस्य रहस्येदं सा दीक्षेत्यभिधीयते।।
(गुरूपनिषद)

अर्थात् 'गुरु के जिस कृपा प्रसाद से जीवन के रहस्य को जाना जाता है, वही दीक्षा है। गुरु शिष्य के अन्दर जिस शक्ति का सञ्चरण करते हैं, वह शक्ति आसानी से प्राप्त नहीं होती, अपितु गुरु कठिन साधना से इस दिव्य शक्ति को अपने

अन्दर समाहित कर शिष्य के अन्दर सञ्चरित करते हैं।

वर्तमान युग में मानव जीवन के प्रारम्भिक पड़ाव से अन्तिम पड़ाव तक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। व्यक्ति जब तक भौतिक जीवन का पूर्णता से निर्वाह नहीं कर लेता है, तब तक उसके मन में आसक्ति का भाव रहता ही है और जब इन इच्छाओं की पूर्ति होगी, तभी वह आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उन्नति कर सकता है। इन भौतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति दीक्षाओं के माध्यम से सम्भव है।

जिस दीक्षा के माध्यम से भोग तथा मोक्ष दोनों की प्राप्ति सम्भव है, वह केवल '**मातंगी दीक्षा**' ही है। मातंगी दीक्षा अत्यन्त गोपनीय रहने के कारण इसका स्वरूप स्पष्ट नहीं था। परम पूज्य गुरुदेव की अथाह करुणा एवं दया दृष्टि से इस गोपनीय दीक्षा का स्वरूप स्पष्ट हो सका है।

'**मातंगी**' शब्द जीवन में प्रत्येक पक्ष को उजागर करने की क्रिया का नाम है। जीवन के दो पक्ष हैं –

भौतिक पक्ष हैं – स्वास्थ्य, आयु, धन, कुटुम्ब सुख, पत्नी, पुत्र, पुत्रियां, गृहस्थ सुख, पूर्ण आयु, भवन सुख, अकाल मृत्यु निवारण, शत्रु निवारण, भाग्योदय, राज्य का सुख, यात्रायें और सैकड़ों प्रकार की अन्य सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति।

आध्यात्मिक पक्ष हैं – कुण्डलिनी जागरण, ध्यान, धारणा, समाधि, अपने इष्ट के दर्शन, आगे के भविष्य को देख सकने की क्षमता, किसी भी व्यक्ति के भूतकाल को परखने की पहचान और अन्त में सिद्धाश्रम की प्राप्ति।

ये सभी क्रियायें, ये सभी स्थितियां मातंगी दीक्षा से सम्भव हो सकती हैं। यदि मातंगी दीक्षा को पूर्णता के साथ प्राप्त कर, गुरु निर्देशानुसार मंत्र जप सम्पन्न कर लिया जाए, तो जीवन में प्रबल भाग्योदय के द्वार खुल जाते हैं, फिर अन्य दीक्षा या साधना को सम्पन्न करने की आवश्यकता नहीं रहती है। इसलिए योगियों ने कहा है, कि –

मातंगी मेवत्वं पूर्ण
मातंगी पूर्णतः उच्यते।।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है, कि मातंगी दीक्षा प्राप्त करना जीवन का सौभाग्य एवं जीवन का श्रेष्ठतम सोपान है।

भगवान शिव का एक नाम '**मतंग**' भी है, ऐसे मतंग स्वरूप शिव की शक्ति '**भगवती मातंगी**' हैं। भगवती मातंगी को वाणी, विलास की देवी माना गया है। भारतीय साधना पद्धति में वाक् को भी शक्ति कहा गया है, वाक् को ही

मातंगी महाविद्या दीक्षा प्राप्त करने से व्यक्ति केवल नगर अथवा क्षेत्र का ही नहीं, अपितु देश का प्रख्यात वक्ता भी बन सकता है, साक्षात् सरस्वती उसकी जिह्वा पर विराजमान हो सकती हैं। ऐसी अद्भुत दीक्षा प्राप्त होने से उसकी वाणी में ओज एवं तेजस्विता आ जाती है और लोग मुग्ध होकर उसकी वाणी को सुनने के लिए बेचैन रहते हैं।

आत्म-विद्या माना गया है और यह भी सत्य है, कि केवल उसी के पास वाक् सिद्धि हो सकती है, जिसके पास वाक् पुष्टि, आत्म विश्वास हो। मातंगी वास्तव में जीवन को ऐसी पूर्णता प्रदान करने वाली आधारभूत देवी हैं, जो एक ओर सुललित और कोमल हैं, श्यामांगी और सुप्रिया हैं, वहीं दूसरी ओर अपने उग्रमय स्वरूप में चाण्डाली भी हैं। **मातंगी का ही एक नाम उच्छिष्ट चाण्डाली भी है, क्योंकि वह अपने संग शिव का चाण्डाल रूप भी समाहित किये हुए हैं और इसी कारण वे सहज रूप से विघ्नहर्त्री भी हैं।** यह एक आनन्ददायक स्थिति है, जहां विघ्न निवारक स्वरूप होगा, वहीं जीवन के सौन्दर्य की स्थितियां निर्मित हो सकेंगी। जीवन की कई स्थितियां ऐसी होती हैं, जहां व्यक्ति लज्जावश अथवा मर्यादावश खुलकर नहीं कह सकता है। **व्यक्ति के यौन जीवन से सम्बन्धित सभी पक्ष इस श्रेणी में आते हैं, इन पक्षों की पूर्ति यह दीक्षा प्राप्त करने से ही सम्भव हो सकती है।**

सद्गुरु कृपा से मातंगी दीक्षा प्राप्त करके, उनके निर्देशन से इस दीक्षा के क्रियात्मक पक्ष को सम्पन्न करके, जीवन में अद्वितीयता एवं श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है। इस दीक्षा को प्राप्त करने से भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों की समृद्धि होती है और इसके लिए यह आवश्यक है, कि वह शिष्य हो, गुरु कृपा का पात्र हो और अपने दैनिक कार्य के साथ गुरु चिन्तन एवं गुरु सेवा का श्रेष्ठ कार्य भी कर रहा हो।

इस भौतिक युग में जहां विज्ञान सत्य है, वहां ज्ञान भी सत्य है; आवश्यकता इस बात की है, कि योग्य शिष्य और योग्य गुरु हों, आवश्यकता इस बात की है, कि गुरु शिष्य का समन्वय हो और दोनों के बीच प्रेम एक सम्बन्ध-सेतु हो। जब ऐसी स्थिति होती है, तो दीक्षाओं एवं साधनाओं के अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते हैं। योग्य शिष्य को चाहिए, कि सद्गुरु की कृपा दृष्टि का पात्र बनते हुए इस दिव्यतम श्रेष्ठ दीक्षा को प्राप्त करने का प्रयास करें।

मातंगी दीक्षा प्राप्त करने से व्यक्ति अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र प्रगति करने लगता है और उसके कार्य बिना किसी विघ्न-बाधाओं के सम्पन्न होने लगते हैं; किन्तु इसमें धैर्य, विश्वास, श्रद्धा एवं समर्पण आवश्यक है, गुरु का अपने हृदय में स्थापन करना आवश्यक है।

जीवन का यदि सही अर्थों में विश्लेषण किया जाये, तो पूरा जीवन भय से ही आक्रान्त है, कहीं कोई घटना न हो जाये, कोई राज्य बाधा या अचानक कोई विपत्ति न आ जाये, परिवार में किसी की अकाल मृत्यु न हो जाये . . . और इन सब समस्याओं से व्यक्ति जितना ही छुटकारा पाने का प्रयास करता है, उतना ही उलझता जाता है। ऐसी स्थिति में मातंगी दीक्षा प्राप्त करना ही एक मात्र सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

दीक्षा का उद्देश्य जीवन में ऊंचाई पर उठना है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए और जीवन में यदि सार्थकता प्राप्त नहीं कर सके, तो जीवन का कोई अर्थ नहीं है, इसलिए व्यक्ति को एक छलांग लगाने के लिए, पूर्णता प्राप्त करने के लिए मातंगी दीक्षा प्राप्त करना ही श्रेष्ठ एवं सौभाग्यदायक माना गया है।

मातंगी महाविद्या दीक्षा प्राप्त कर आप गृहस्थ योगी बन सकते हैं और श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बन सकते हैं, जीवन के किसी भी क्षेत्र में श्रेष्ठतम स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

प्रधान साधार विकल्प सत्ता।
स्वभाव भावाद् भुवनत्रयस्य।।
सा विद्यया व्यक्तमपीह मायया।
ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यं।।

दस महाविद्याओं की दीक्षा में मातंगी दीक्षा प्राप्त करने का अपना अलग ही महत्त्व है। प्राचीन काल में बड़े-बड़े योगी, ऋषि कई वर्षों तक अपने गुरु की सेवा में संलग्न रहते थे और कठिन श्रम के पश्चात् भी गुरु केवल अपने एक या दो योग्य शिष्यों को उस दीक्षा को प्रदान करते थे, ताकि वह स्वयं के कल्याण के साथ-साथ समाज के दुःख, कष्ट दूर करने में सहभागी बन सके।

जीवन का यदि सही अर्थों में विश्लेषण किया जाये, तो पूरा जीवन भय से ही आक्रान्त है, कहीं कोई घटना न हो जाये, कोई राज्य बाधा या अचानक कोई विपत्ति न आ जाये, परिवार में किसी की अकाल मृत्यु न हो जाये . . . और इन सब समस्याओं से व्यक्ति जितना ही छुटकारा पाने का प्रयास करता है, उतना ही उलझता जाता है।

ऐसी स्थिति में मातंगी दीक्षा प्राप्त करना ही एक मात्र

सर्वश्रेष्ठ उपाय है, क्योंकि इस दीक्षा के प्राप्त होने से व्यक्ति जब अपने दैनिक मंत्र जप, साधना में बैठता है, साधक में अदम्य साहस, सब कुछ करने की क्षमता आ जाती है और वह निर्भय होकर कार्य करने लगता है, साथ ही गृहस्थ की सभी समस्याओं का निराकरण होने लगता है। यह दीक्षा प्राप्त होने से उमंग तथा उल्लास का वातावरण बनने लगता है।

आज के युग में जब सर्वत्र भयावह स्थिति बनी हुई है, कब क्या घटना घटित हो जाये; ऐसी स्थिति में इस दीक्षा को प्राप्त करना चाहिए, ताकि वह समाज में सम्माननीय व्यक्तित्व के रूप में उभरता हुआ हजारों व लाखों की भीड़ में अपनी पहचान बना सके।

वे साधक सौभाग्यशाली होते हैं, जो सद्गुरु से ऐसी श्रेष्ठ दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

विश्वामित्र ने तो स्पष्ट कहा है, कि अन्य नौ महाविद्याओं का समावेश भी मातंगी महाविद्या दीक्षा में है।

इसीलिए शास्त्रों में मातंगी महाविद्या को सर्वोच्चता प्रदान की गई है और सद्गुरु से ऐसी दीक्षा प्राप्त होना जीवन के सौभाग्य का सूचक है।

मातंगी साधना

दस महाविद्याओं में भी **'मातंगी साधना'** श्रेष्ठतम साधना कही गई है, अद्वितीय साधना कही गई है, सौभाग्य प्रदान करने वाली साधना कही गई है।

'विश्वामित्र' ने तो यहां तक कहा है — 'बाकी नौ महाविद्याओं का भी समावेश मातंगी साधना में स्वतः ही हो गया है। चाहे हम बाकी नौ साधनायें नहीं भी करें और केवल मातंगी साधना को ही सम्पन्न कर लें, तो भी अपने आप में पूर्णता प्राप्त हो सकती है।' इसीलिए शास्त्रों में मातंगी साधना को सर्वोच्चता और श्रेष्ठता दी गई है।

इस पुस्तक में 'मातंगी पूजन', 'मातंगी ध्यान', 'मातंगी यंत्र' के पूजन को संक्षिप्त रूप से बताया गया है, क्योंकि मातंगी साधना को पूर्णता और विवेचना के साथ दें, तो पांच हजार पृष्ठ भी कम होंगे। हमारे लिए आवश्यक है — उसका मूल सत्व।

हमारे लिए आवश्यक क्या है? कितना आवश्यक है? — और जितना आवश्यक है, वह सब इस पुस्तक में दिया है, जिसको साधक अपने घर में बैठ करके भी सम्पन्न कर सकता है।

✦ न्यौछावर — 40/-

धन वर्षिणी तारा

जिसने तारा महाविद्या प्राप्त कर ली, उसने पूरे संसार का वैभव प्राप्त कर लिया। उसको जीवन में धन की कमी नहीं रहती, वह आगे-आगे बढ़ता ही रहता है और लक्ष्मी वरमाला लिये हुए पीछे-पीछे चलती रहती है। वह चाहे घर में रहे, जंगल में रहे, वह चाहे कहीं भी रहे, धन की हमेशा वर्षा सी होती रहती है, दोनों हाथों से वह जितना व्यय करता है, उससे सौ गुना ज्यादा उसको अनायास ही प्राप्त होता रहता है — और धन के द्वारा उसको वैभव, यश, सम्मान पद, प्रतिष्ठा, पूर्णता और सफलता प्राप्त होती ही रहती है।

इस पुस्तक में सरस्वती से सम्बन्धित और तारा से सम्बन्धित — दोनों साधनाओं का समन्वय स्वरूप पूर्ण पूजन, पाठ, मनन और चिन्तन दिया गया है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अपने आप में अनन्य बन गई है, अद्वितीय बन गई है। लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी इस प्रकार की साधना इससे पूर्व प्राप्त नहीं हो सकती थी, क्योंकि अभी तक यह साधना गोपनीय रही है।

✦ न्यौछावर — 15/-

नक्षत्रों की वाणी

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, लो, आ)

आपके लिए यह माह सामान्य ही रहेगा, लेकिन कारोबारी मामलों को ले कर उत्साह रहेगा तथा यात्रा योग बनेंगे। किसी के बहकावे में आ कर कोई कार्य न करें तथा व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें। अदालती मामलों को ले कर अनुकूलता प्राप्त होगी तथा जमीन-जायदाद के विस्तार के योग बनेंगे। सामाजिक मर्यादा तथा मान-सम्मान को बनाये रखें। मित्रों का समय पर सहयोग प्राप्त होगा। जीवनसाथी से माधुर्य एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। संतान सुख सामान्य रहेगा। आकस्मिक धन प्राप्ति का योग नहीं, अतः व्यर्थ के व्यय से बचें। यात्रा एवं वाहन प्रयोग करते समय सतर्कता आवश्यक है। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें। इस माह आपके लिए '**महाभैरव साधना**' (मई-94 अंक में पृष्ठ संख्या 69 पर प्रकाशित) श्रेष्ठता प्रदान करने वाली होगी। सभी प्रकार से मंगल प्राप्ति के लिए नित्य काले तिल का दान करें।

वृष (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

जो कार्य आप करना चाहते हैं, कर सकते हैं; लेकिन निर्णय लेने में मौलिकता और सूझ-बूझ आवश्यक है, जल्दबाजी में कोई कार्य न करें। बेरोजगारों के लिए भी यह समय अनुकूल एवं आर्थिक लाभ देने वाला सिद्ध होगा। सड़क पर वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतें। विश्वासघात की स्थिति बन सकती है, अतः सावधानी बरतें। मित्र साथ छोड़ जायेंगे तथा समय-असमय आपको पीड़ा पहुंचाने का प्रयत्न भी करेंगे। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा, लेकिन संतान पक्ष के कारण चिन्ता व्याप्त हो सकती है। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु '**भुवनेश्वरी साधना**' (दिसम्बर-92 के अंक में पृष्ठ संख्या 29 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें। प्रत्येक कार्य की सफलता के लिए '**चक्रम**' (न्यौछावर – 30/-) को पूजा स्थान में स्थापित करें।

मिथुन (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)

किसी के बहकावे में आ कर कार्य न करें, अन्यथा आर्थिक हानि की सम्भावना बढ़ेगी। कारोबारी मामलों में सतर्कता आवश्यक है, साझेदारों के प्रति भी सावधानी बरतें। अधिकारियों एवं सहयोगियों से मधुर सम्बन्ध बनाये रखें। कुछ नये सम्पर्क बनेंगे, जो भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। कारोबारी विस्तार के साथ-साथ जमीन-जायदाद में भी विस्तार के योग बनेंगे। भवन निर्माण के योग बनेंगे एवं रुका हुआ धन प्राप्त होगा। धार्मिक व मांगलिक प्रसंगों में धन व्यय होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां बढ़ेंगी। वाहन के क्रय-विक्रय में जल्दबाजी न करें। यात्रा योग सामान्य रहेगा। आप '**गणपति साधना**' (मई-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 13 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें। '**सौभाग्यप्रदा गुटिका**' (न्यौछावर – 42/-) को हमेशा अपने पास रखें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

समय आने पर मित्र साथ छोड़ सकते हैं, अतः किसी से भी सहयोग की आशा करना व्यर्थ के तनाव को ही जन्म देगा। स्वयं के प्रयासों एवं मौलिक सूझ-बूझ के साथ कार्य करें। धार्मिक प्रसंगों को ले कर यात्रा योग बनेंगे तथा आर्थिक व्यय में वृद्धि होगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य से सम्बन्धित चिन्ता रहेगी। संतान की ओर से अनुकूलतादायक समाचार प्राप्त होंगे। अधिकारी वर्ग आपके अनुकूल सिद्ध होगा तथा अधिकारियों के सहयोग से राज्य बाधा का निवारण होगा। वाद-विवाद या मतभेद होने की दशा में संयम से काम लें। साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी। इस माह आप '**कार्य सिद्धि मुद्रिका**' (न्यौछावर – 60/-) धारण करें तथा '**यक्षिणी साधना**' (मार्च-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 65 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी तथा जमीन-जायदाद का विस्तार होने से प्रसन्नता होगी। भवन, दुकान आदि के निर्माण के योग बनेंगे। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूलता दायक रहेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी तथा संतान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। कला जगत के व्यक्ति आर्थिक कारणों से उत्साहित रहेंगे। इस माह का अधिकांश समय व्यर्थ की भाग-दौड़ में ही व्यतीत होगा। यात्रा या वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें। अधिकांश कार्यों में विघ्न आने से मन में खिन्नता रहेगी। इस माह आप '**गणपति साधना**' (अगस्त-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 15 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें और प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व '**ॐ गं गणपतये नमः**' (Om Gam Ganpataye Namah) का ग्यारह बार जप करें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

कारोबारी यात्रा के कारण उत्साह रहेगा तथा कारोबारी विस्तार होने से प्रसन्नता होगी। साझेदारों व उनके कार्यों से प्रसन्नता होगी तथा आर्थिक लाभ की सम्भावनाओं में वृद्धि होगी। आपकी उन्नति से ईर्ष्याग्रस्त हो कर कुछ व्यक्ति आपसे विश्वासघात कर सकते हैं, अतः सावधान रहें, किसी के बहकावे में आ कर कोई भी कार्य न करें। कुछ पुराने सम्बन्ध आपके लिए सहयोगी की भूमिका निभायेंगे। जीवनसाथी से वैचारिकता बनाये रखें तथा संतान की ओर से किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। अदालती मुकदमों के उलझने से चिन्ता होगी। आपके निकट सम्बन्धी आपको हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। यात्रा योग सामान्य रहेंगे। सभी प्रकार से अनुकूलता प्राप्ति के लिए '**धूमावती साधना**' (अप्रैल-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 17 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा नित्य बाहर जाने के पूर्व '**ॐ ॐ ह्रीं ॐ ॐ**' (Om Om Hreem Om Om) का जप सात बार करें।

आकाश दर्शन

सूर्य	–	कर्क राशि में, 17 अगस्त से सिंह राशि में।
मंगल	–	कन्या राशि में, 4 अगस्त से तुला राशि में।
बुध	–	सिंह राशि में।
गुरु	–	मकर राशि में।
शुक्र	–	सिंह राशि में, 12 अगस्त से कन्या राशि में।
शनि	–	मीन राशि में।
राहु	–	सिंह राशि में।
केतु	–	कुम्भ राशि में।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

आपके लिए साक्षात्कार आदि में सफलता के योग बन रहे हैं, लेकिन परिश्रम करना आपके लिए अनिवार्य होगा। बेरोजगार व्यक्ति स्व व्यवसाय में लाभ अर्जित कर सकेंगे। सफलता तो प्राप्त होगी, परन्तु उसके मार्ग में आने वाली बाधाएं भी कष्टकर सिद्ध होंगी। अतः सावधानी पूर्वक कार्य करें। आर्थिक दृष्टि से यह समय आपके लिए सामान्य ही रहेगा। किसी से सहयोग की आशा करना व्यर्थ ही सिद्ध होगा। जीवनसाथी का सहयोग तथा संतान सुख सामान्य ही रहेंगे। आकस्मिक धन प्राप्ति का योग नहीं, अतः व्यर्थ धन व्यय न करें। अपने गले में **'शिवांकी'** (न्यौछावर – 36/-) धारण करें, जिससे आने वाली बाधाओं का पूर्व में ही निराकरण हो। इस माह **'महामृत्युञ्जय साधना'** (जुलाई-97 के अंक में पृष्ठ संख्या 9 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

चला आ रहा अथक प्रयास सफलता देने वाला सिद्ध होगा। जो कार्य आपने अपने हाथ में ले रखा है, पहले उसे पूरा करें तथा नये कारोबारी मामलों में किसी भी प्रकार की जल्दबाजी न करें। स्वास्थ्य को ले कर तनाव रहेगा तथा चिकित्सा व्यय भार में वृद्धि होगी। सामाजिक मर्यादा तथा मान-सम्मान को बनाये रखने का प्रयत्न करें। साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल रहेगा। अधिकारियों से मेल जोल बना कर रखें। अदालती मुकदमों में अनुकूलता प्राप्त होगी। दाम्पत्य सुख में अनुकूलता प्राप्त होगी व भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। **'अप्सरा साधना'** (अप्रैल-96 के अंक में पृष्ठ संख्या 38 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा **'क्रत्वा'** (न्यौछावर – 60/-)को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर अपने पास रखें।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे)

धार्मिक व मांगलिक प्रसंगों के कारण व्यस्तता रहेगी तथा यात्रा योग बनेंगे। कारोबारी यात्रा में लाभ की स्थिति बनेगी तथा रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। पारिवारिक मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी तथा भवन निर्माण के योग बनेंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। जीवनसाथी की ओर से तनाव व चिन्ता रहेगी। **'अष्ट लक्ष्मी साधना'** (अक्टूबर-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 27 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा भोजपत्र पर केसर से **'ॐ श्रीं ऐश्वर्य सिद्धये श्रीं ॐ नमः'** (Om Shreem Aeishwarya Siddhaye Shreem Om Namah) लिख कर नित्य उसका पूजन करें।

मकर (भो, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)

जो कार्य आप करना चाहते हैं, स्वयं की मौलिक सूझ-बूझ से ही निर्णय ले कर करें। निर्णय लेने में किसी भी प्रकार की जल्दबाजी न करें तथा धैर्य पूर्वक मामलों को निपटाने का प्रयास करें। अधिकारियों एवं सहयोगियों से मधुर तालमेल बना कर चलें तथा वाद-विवाद की स्थिति में संयम बनाये रखें। बेरोजगार व्यक्ति नये कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। आपसी सहयोग एवं तालमेल आवश्यक होगा। आकस्मिक धन प्राप्ति का कोई योग नहीं, अतः धन के व्यर्थ व्यय से बचें। सभी कार्यों में पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति हेतु **'सर्व मनोकामना सिद्धि साधना'** (जुलाई-93 के अंक में पृष्ठ संख्या 93 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा अपनी जेब में **'सुदर्शन गुटिका'** (न्यौछावर – 75/-) रख कर ही बाहर कार्य हेतु जायें।

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

अधिकारियों से व्यर्थ का वाद-विवाद होने से खिन्नता होगी तथा राज्य पक्ष से बाधा आयेगी। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त करना अपेक्षित रहेगा। जीवनसाथी की ओर से तनाव रहेगा। संतान आपके लिए अनुकूल एवं आज्ञाकारी सिद्ध होगी। कारोबारी यात्रा के कारण प्रसन्नता होगी तथा कारोबार का विस्तार होने से आर्थिक अनुकूलता प्राप्त होगी। व्यर्थ के भागदौड़ से बचें। अदालती मुकदमों में अनुकूलता प्राप्त होगी, परन्तु नवीन मुकदमों से बचें। किसी से वाद-विवाद की स्थिति में संयम बनाये रखें। स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक होगा। यात्रा योग सामान्य रहेगा। इस माह **'भैरव साधना'** (नवम्बर-96 के अंक में पृष्ठ संख्या 15 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा **'सिद्धि चेटक'** (न्यौछावर – 30/-) धारण करें।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

जल्दबाजी से बनते कार्य भी बिगड़ सकते हैं, अतः संयम व धैर्य का साथ न छोड़ें। जीवनसाथी की उपेक्षा न करें तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने का प्रयास करें। कला जगत के व्यक्ति उत्साहित रहेंगे तथा आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता अनुभव करें। कारोबारी स्थिति सोचनीय ही रहेगी, अनुबंधों के बारे में विचार पूर्वक निर्णय ले कर ही कार्य करें। कुछ ऐसे सम्पर्क बनेंगे, जो भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी लापरवाही न बरतें। वाहन के क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचें तथा **'नवग्रह उपासना'** (अप्रैल-97 के अंक में पृष्ठ संख्या 69 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें। किसी भी व्यक्ति से मिलते समय **'ॐ ह्रीं वश्यं ह्रीं फट्'** (Om Hreem Vashyam Hreem Phat) का जप पांच बार करें।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

3-8-97	श्रावण कृष्ण पक्ष 30	हरियाली अमावस्या
6-8-97	श्रावण शुक्ल पक्ष 03	मधुश्रवा तीज
8-8-97	श्रावण शुक्ल पक्ष 05	नाग पंचमी
13-8-97	श्रावण शुक्ल पक्ष 10	अमृत सिद्धि योग
14-8-97	श्रावण शुक्ल पक्ष 11	पवित्रा एकादशी
18-8-97	श्रावण शुक्ल पक्ष 15	पूर्णिमा, रक्षा बन्धन
21-8-97	भाद्रपद कृष्ण पक्ष 03	कजली तीज
22-8-97	भाद्रपद कृष्ण पक्ष 04	अमृत सिद्धि योग
25-8-97	भाद्रपद कृष्ण पक्ष 08	श्री कृष्ण जन्माष्टमी

तंत्र साधना में प्रयुक्त विशिष्ट ज्यामितीय चित्रों को ही '**यंत्र**' की संज्ञा दी गई है, जिन पर ध्यान केन्द्रित कर मानव शरीर में सुसुप्त अनन्त ज्ञान, शक्ति व आनन्द को न केवल जाग्रत किया जा सकता है, अपितु उनका विकास कर ब्रह्माण्ड की अपरिमित शक्तियों का स्वामी भी बना जा सकता है।

परन्तु यंत्र साधना का यह एकमात्र प्रयोजन नहीं है, यह तो मानव जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श करता है, दैनिक जीवन की किसी भी समस्या के निराकरण के लिए यंत्र का आश्रय लिया जा सकता है।

तंत्र की अवधारणा भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही रही है। वैदिक काल से आधुनिक युग तक इसकी उपयोगिता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। साधना क्षेत्र में जहां अमृतत्त्व प्राप्ति हेतु प्राण विद्या का विधान है, वहीं लौकिक समस्याओं के निराकरण हेतु तंत्र साहित्य में अनेक प्रयोग वर्णित हैं।

तंत्र साधना के प्रयोग कुछ विशिष्ट यंत्रों पर ही सम्पादित किये जाते हैं। यंत्र वस्तुतः विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों से निर्मित साधन हैं, जो निर्दिष्ट देवता का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी भी धातु पर उत्कीर्ण इन यंत्रों पर विशिष्ट अक्षर एवं अंक बने होते हैं। यंत्र में अंकित किया गया अंक उस क्रिया का मूल्य है, जो सम्पादित की जाने वाली है और अक्षर वह शक्ति जिससे यह ज्ञात किया जाता है, कि वह क्रिया कैसे सम्पन्न होगी। सभी यंत्र कुछ सिद्ध अक्षरों की सहायता से, जो जिस शक्ति से आबद्ध होते हैं, मानव के शरीर एवं मन पर निश्चित प्रभाव डालते हैं।

यंत्रों में छिपा है सुखी जीवन का राज

यंत्रों में छिपे हैं गोपनीय रहस्य, सुनहरा भाग्य, सुन्दरियों, अप्सराओं का जमघट और धन का अजस्र प्रवाह, सुखी सफल जीवन का राज . . .

भारतीय साधना ग्रंथों में यंत्रों से सम्बन्धित प्रचुर सामग्री उपलब्ध है, परन्तु यह अधिकांशतः हस्त लिखित अवस्था में है और इनकी क्रिया पद्धति का ज्ञान बहुत ही कम साधुओं अथवा योगियों को है, जो कि कभी-कभी तरंग में आने पर अपने शिष्यों या भक्तों को एकाध रहस्य बता देते हैं।

आगे की पंक्तियों में कुछ ऐसे ही यंत्र एवं सम्बन्धित प्रयोग उजागर किये गये हैं, जो देखने पर सामान्य एवं लघु प्रतीत होते हैं, परन्तु जिनका प्रभाव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा अचूक होता है।

1. तनाव मुक्ति के लिए –

बीसा यंत्र इसके लिए सर्वोत्तम माना गया है। यह यंत्र कभी भी कार्य का क्षय नहीं होने देता। जब आप बेहद तनाव की अवस्था में हों, तब नीचे दिये बीसा यंत्र को भोज पत्र पर कुंकुम से अंकित कर लें और उस पर प्राण प्रतिष्ठित '**बीसा यंत्र मुद्रिका**' (न्यौछावर – 150/-) स्थापित कर मानसिक शक्ति की प्राप्ति तथा तनाव मुक्ति के लिए पूजा गृह में बैठ जायें। पांच से दस मिनट तक नेत्र बंद कर प्रणव अर्थात् 'ॐ'

बीज मंत्र का जप करें। इसके बाद मुद्रिका को धारण कर लें। शीघ्र ही आपको इसका प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देगा। एक माह बाद मुद्रिका को नदी में विसर्जित कर दें।

बीसा यंत्र

९	२
१	८
७	४
३	६

व्यक्ति के जीवन में निरन्तर कोई न कोई बाधा आती ही रहती है, कभी परिवार में व्याधि, कभी राज्य पक्ष में बाधाएं, कभी शत्रु भय तो कभी भूत-प्रेत का प्रकोप . . . और व्यक्ति इनका निश्चित उपाय न जान पाने के अभाव में भटकता ही रहता है। यंत्र इन सभी पीड़ादायक स्थितियों को समाप्त करने में विशेष सहायक हैं।

2. बिक्री यंत्र –

दीपावली के दिन नीचे दिये हुए यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर उसके ऊपर '**व्यापार वृद्धि यंत्र**' (न्यौछावर–210/-) अपनी दुकान में स्थापित कर दें। अगले ही दिन से आपके व्यापार में वृद्धि होनी आरम्भ हो जायेगी। सवा महीने बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

बिक्री यंत्र

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
५	७	७४	५७

3. गर्भ रक्षा यंत्र –

होली, दीपावली, ग्रहण अथवा रविवार को मूल नक्षत्र में भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से नीचे दिये गये यंत्र का अंकन करें। उसके ऊपर '**गर्भ रक्षा यंत्र**' (न्यौछावर–210/-) स्थापित कर विधि पूर्वक उसका पूजन करें तथा गर्भवती स्त्री की कमर में भोजपत्र धारण करा दें। यह हर प्रकार से गर्भ की रक्षा करता रहेगा प्रसव के बाद यंत्र तथा भेजपत्र को जल में विसर्जित कर दें।

गर्भ रक्षा यंत्र

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

4. नेत्र रोग निवारण यंत्र –

रवि पुष्य नक्षत्र के दिन प्रातः नीचे दिये यंत्र को भूमि पर कुंकुम से अंकित करें। उसके ऊपर '**दिव्य सूर्य यंत्र**' स्थापित करें। यंत्र के चारों ओर चार घी के दीपक जला कर रखें। गन्ध, पुष्प आदि से उसका पूजन करें। तत्पश्चात् '**चाक्षुष माला**' से निम्नलिखित मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

// ॐ ह्रीं मम चक्षु रोगान् शमय शमय//

OM HREEM MAM CHAKCHIC ROGAN SHAMAY SHAMAY

ऐसा करने पर यह यंत्र मंत्र सिद्ध हो जाता है, (न्यौछावर-(प्रयोग पैकेट)-210/-) फिर निम्न यंत्र को अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर लिख कर रविवार को धारण करने से नेत्र से सम्बन्धित रोगों का नाश होता है।

नेत्र रोग निवारण यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
१	५	१०	१३

5. सर्व कार्य सिद्धि यंत्र –

दीपावली, होली, ग्रहण अथवा गुरु पुष्य दिवस को अनार की लेखनी से भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से निम्न यंत्र अंकित कर उस पर '**सर्व कार्य सिद्धि यंत्र**' (न्यौछावर–240/-) स्थापित कर उसका षोडशोपचार पूजन करें। पूजनोपरांत साधक छोटे बालकों को भोग लगा कर प्रसाद वितरित करें। ऐसा करने से साधक को सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। इक्कीस दिन बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

सर्व सिद्धि यंत्र

ॐ भूः	ॐ भुवः	ॐ स्वः
ॐ महः	ॐ जनः	ॐ तपः
	ॐ सत्यम्	

6. रोग हरण यंत्र –

नीचे दिये गये यंत्र को होली, दीपावली, ग्रहण अथवा रवि पुष्य नक्षत्र में अनार की कलम से तथा अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर लिख कर उसके ऊपर '**रोग नाशक यंत्र**' (न्यौछावर–200/-) स्थापित करें और उसके ऊपर पांच मिनट तक जलधारा प्रवाहित करें, वह जल रोगी को पिला दें। ऐसा पांच दिन तक करें, छठे दिन यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

रोग हरण यंत्र

ऐं	ह्रीं	क्लीं
श्रीं	रोगी का नाम	श्रीं
ह्रीं	श्रीं	ह्रीं

वर्तमान समय में यह सम्भव नहीं है, कि व्यक्ति लम्बे-लम्बे अनुष्ठान कर सके, जबकि उसे समस्याओं का समाधान मिलना भी आवश्यक होता है। ऐसी परिस्थितियों में यंत्र साधना कम अवधि में निश्चित रूप से फल प्रदान करने में समर्थ होती है।

भागे व्यक्ति को लौटाने का यंत्र

१४२	२५७	२५४	२४९
१५३	२४८	२४३	२५६
२४७	२५०	२५९	२४४
२५५	२४५	२४६	२५१

7. भागे व्यक्ति को वापस लौटाने का यंत्र–

आक के रस से उपरोक्त यंत्र को भागने वाले व्यक्ति के वस्त्र पर अंकित कर उस पर '**लौटाने का यंत्र**' (न्यौछावर–210/–)स्थापित कर उसका नित्य पूजन करें, ऐसा 21 दिन तक करें। बाईसवें दिन यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें, तो भागा हुआ व्यक्ति लौट कर घर आ सकता है अथवा उसका समाचार मिल जाता है।

दुः स्वप्न हरण यंत्र

हं	सं	षं	पुं
षं	दं	घं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	पं	जं	दं

8. दुःस्वप्न हरण यंत्र –

ऊपर दिये गये यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से तथा अनार की कलम से अंकित कर उस पर '**स्वप्नेश्वरी यंत्र**' (न्यौछावर–60/–)स्थापित करें और उसका सामान्य पूजन करें। तत्पश्चात् इस यंत्र को वस्त्र सहित सोते समय सिर के नीचे रखें, तो बुरे स्वप्नों का दिखाई देना समाप्त हो जाता है।अगले दिन यं. को मंदिर में चढ़ा दें।

दैनिक साधना विधि

साधना के महत्व को समझने के इच्छुक, पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आने वाले साधकों की यह कामना रही है, कि उन्हें उस प्रारम्भिक प्रक्रिया का ज्ञान हो, जिसे वे दैनिक पूजन में सम्मिलित कर सकें।

इस पुस्तक में दैनिक साधना विधि का संक्षिप्त एवं प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया गया है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह पहली बार साधना कर रहा हो अथवा कई साधना सम्पन्न कर चुका हो, इस पुस्तक के माध्यम से प्रारम्भिक पूजन सम्पन्न कर अनुकूलता एवं सफलता प्राप्त कर सकता है।

साधना ही जीवन की वह श्रेयस्कर तथा श्रेष्ठ विद्या है, जिससे जीवन में सफलताएं मिलने के साथ-साथ अद्वितीय व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

✦ **न्यौछावर — 30/–**

इस मास दिल्ली में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली '**सिद्धाश्रम**' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन **शाम 6 से 8 बजे** के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हों, तो वहां से प्राप्त कर लें)।

दिनांक 5.8.97

धूमावती महाविद्या साधना

धूमावती महाविद्या की साधना में जीवन की सम्पूर्ण अद्वितीयता, उच्चता और श्रेष्ठता छिपी हुई है . . . जिसने भी सम्पूर्ण धूमावती महाविद्या साधना को सम्पन्न कर लिया, उसने श्रेष्ठता को प्राप्त कर लिया, अपने जीवन से असम्भव शब्द को मिटा दिया, दुर्भाग्य को समाप्त कर दिया . . . और इसी अद्वितीयता को अपने जीवन में समाहित करने की साधना का नाम है — धूमावती महाविद्या साधना . . . जिसे प्राप्त करना जीवन का सौभाग्य है . . .

दिनांक 6.8.97

धूम्र लोचनी महाविद्या साधना

यदि आप पौरुषवान हैं, यदि आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हैं, यदि आप सम्पन्नता युक्त हैं, तो आपके शत्रु भी होंगे, जो आपकी उन्नति से ईर्ष्या करते होंगे, जो आपकी सम्पन्नता को देख कर कुढ़ते होंगे . . . शत्रु होने भी चाहिए, क्योंकि सिर्फ कायर व डरपोक व्यक्तियों के ही शत्रु नहीं होते . . . लेकिन यह भी आवश्यक है, कि हम सदैव उन पर हावी रहें, सदैव उन पर हमारा प्रभुत्व बना रहे, हमारी तेजस्विता के समक्ष शत्रु स्वतः ही परास्त अनुभव करने लगें . . . और यह साधना अपनी आंखों में इसी तेजस्विता को भर लेने का क्रियात्मक पक्ष है . . .

दिनांक 7.8.97

सहस्र लोचनी महाविद्या साधना

विश्वामित्र जैसा महान योगी और विद्वान शायद ही कोई दूसरा उत्पन्न हो . . . सप्त ऋषियों में भी सर्वश्रेष्ठ, 'ब्रह्मर्षि' की उपाधि से अलंकृत और भगवान राम के गुरु विश्वामित्र की तेजस्विता और दिव्यता का वर्णन लेखनी के माध्यम से वर्णन करना सम्भव नहीं है . . . उसी महान व्यक्तित्व ने प्रस्तुत किया था यह अद्भुत और तेजस्वी साधना विधान, जिसे सम्पन्न करने के उपरान्त स्वतः ही सभी साधनाओं में सफलता मिलने लग जाती है, फिर असफलता जैसा शब्द जीवन के शब्दकोष में रह ही नहीं जाता, यहां तक कि पूर्व में की गई साधनाओं में सफलता प्राप्त होने लगती है . . .

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे —

1. आप अपने किसी एक मित्र या स्वजन की पत्रिका की वार्षिक सदस्यता हेतु 195/- वार्षिक शुल्क तथा 24/- डाक व्यय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/-, इस प्रकार कुल शुल्क (219/-+180/- = 399/-) जमा कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको निःशुल्क साधना सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क '**धन्वन्तरी चैतन्या**' प्रदान किया जायेगा, जो कि आपके परिवार के किसी भी व्यक्ति या स्वयं के भौतिक व दैहिक रोगों पर नियन्त्रण दिलाने में समर्थ है एवं उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप '**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**' पत्रिका प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं के लिए एक वर्ष की सदस्यता और 12 दुर्लभ अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको उपहार स्वरूप '**धन्वन्तरी चैतन्या**' प्राप्त नहीं हो पावेगी।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 375/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।
4. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 375/- रुपये या एक पत्रिका सदस्य व 12 पुराने दुर्लभ अंक हैं।

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

पारद शिवलिंग

संसार में बहुत कुछ प्राप्य है और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, पर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त रस सिद्ध शुद्ध पारे से निर्मित '**पारद शिवलिंग**' प्राप्त होना सौभाग्य का ही सूचक है। जिसके पूर्व जन्म के पाप क्षय हो जाते हैं और सौभाग्य का उदय होने लगता है, तभी उसे 'पारद शिवलिंग' प्राप्त हो सकता है।

मैं देश-विदेश में बहुत घूमा हूं, मैंने देखा है, कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह उच्चस्तरीय साधु हो या गृहस्थ, योगी हो या यति, नेता हो या अभिनेता — इस प्रकार का पारद शिवलिंग प्राप्त करने के लिए लालायित है। वे बहुत कुछ व्यय करने को भी तैयार हैं, परन्तु ऐसा पारद शिवलिंग प्राप्त होना सम्भव नहीं होता है।

क्योंकि पारे का शोधन अत्यन्त कठिन कार्य है और उसे ठोस बनाने के लिए पारे को मूर्च्छित, खेचरित, कीलित, शंभुबीजित और शोधित जैसी कठिन प्रक्रियाओं में से गुजारना पड़ता है, तब जा कर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है और फिर उससे शिवलिंग का निर्माण सम्भव हो पाता है।

शिवलिंग निर्माण के बाद भी कई मांत्रिक क्रियाओं से गुजरने पर 'पारद शिवलिंग' रस सिद्ध एवं चैतन्य हो पाता है, जिससे वह पूर्ण सक्षम एवं प्रभाव युक्त बनता है।

इसलिए तो कहा गया है, कि जिसके घर में 'पारद शिवलिंग' है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिए घर में ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है।

'पारद शिवलिंग' के गुणों से, उसके महत्त्व से और उसके अचूक प्रभावों से पूरे के पूरे धर्म ग्रंथ, पुराण, शास्त्र भरे पड़े हैं। इस लेख में संक्षिप्त में पाठकों की जानकारी हेतु 'पारद शिवलिंग' पर सामग्री प्रस्तुत है —

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं, जो सामान्य घर में जन्म लेकर विपरीत परिस्थितियों में बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपने घर में 'पारद शिवलिंग' की स्थापना करनी चाहिए। संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं, कि जो व्यक्ति 'पारद शिवलिंग' की पूजा करता है, उसके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। 'पारद शिवलिंग' के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वहीं उसे जीवन में मोक्ष प्राप्ति भी निश्चित रूप से सुलभ रहती है।

वैज्ञानिक दृष्टि से पारा या पारद द्रव पदार्थ है, इसे अंग्रेजी में '**मरकरी**' कहते हैं। इसमें अन्य किसी भी प्रकार के पदार्थ का सम्मिश्रण सम्भव नहीं, साथ ही इस पारे को ठोस आकार में बनाना अत्यन्त कष्ट साध्य है और जब तक पारद ठोस आकार ग्रहण नहीं कर लेता, तब तक शिवलिंग का निर्माण सम्भव नहीं होता, परन्तु फिर भी रसायन के माध्यम से पारे को ठोस बनाया जा सकता है और जब पारा ठोस स्वरूप ग्रहण करने लगता है तब उसे शिवलिंग का आकार दे दिया जाता है और बाद में वह इतना ठोस हो जाता है, कि उसके सामने शीशे की बनी गोली भी लचीली प्रतीत होती है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी ने कहा है, कि जो साधक 'पारद शिवलिंग' को अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उसके दर्शन ही करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-धान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है। संसार में जितने भी शिवलिंग हैं, उन सबकी पूजा का फल केवल मात्र **पारद शिवलिंग** के पूजन से ही प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार रावण रस सिद्ध योगी था, वह 'पारद शिवलिंग' की पूजा कर, शिव को पूर्ण प्रसन्न कर अपनी नगरी को स्वर्णमयी बनाने में सफल हो सका था। बाणासुर ने पारद शिवलिंग की पूजा कर शिव से मनोवांछित वर प्राप्त किया था। यह विवरण '**रुद्र-संहिता**' में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

अन्य शास्त्रों में भी इस बारे में जो विवरण प्राप्त होते हैं, उनसे यह स्पष्ट है, कि वास्तव में ही पारद शिवलिंग दुर्लभ है और विरले लोगों के घर में ही इस प्रकार के शिवलिंग स्थापित होते हैं।

मैंने पिछले वर्षों में इस प्रकार के रस सिद्ध पारे को ठोस बनाकर कई शिवलिंग बनाये हैं और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये हैं, वे सभी आज अच्छे स्तर पर हैं और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर हैं। साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त हुई है, वह उनके स्वयं के लिए भी चकित कर देने वाली है।

नीचे कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों के विवरण दे रहा हूं, जिनसे स्पष्ट होता है, कि पारद शिवलिंग कितना अधिक महत्वपूर्ण है —

1. योगशिखोपनिषद —

रसलिंगं महालिंगं शिवशक्तिनिकेतनम्।
लिंगं शिवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्व देहिनाम्।।

अर्थात रसलिंग ही महालिंग है और इसे ही शिव-शक्ति का घर या शिवालय कह सकते हैं। इसके प्राप्त होने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

2. सर्वदर्शनसंग्रह —

अभ्रकं तत्र बीजं तु मम बीजं तु पारदः।
बद्धो पारद लिंगोऽयं मृत्यु दारिद्र्य नाशनम्।।

अर्थात् भगवान शंकर स्वयं भगवती से कहते हैं, कि पारद को ठोस कर लिंगाकार बना कर जो पूजन करता है, उसे जीवन में मृत्यु-भय व्याप्त नहीं होता और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नहीं आ पाती।

3. रसरत्नसमुच्चय —

विधाय रसलिंगं यो भक्तियुक्तः समर्चयेत्।
जगत्त्रितयलिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात्।।

अर्थात् जो भक्ति के साथ पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंगों की पूजा का फल प्राप्त होता है तथा उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

4. रसार्णव-तंत्र —

धर्मार्थकाममोक्षाख्या पुरुषार्थश्चतुर्विधा।
सिध्यन्ति नात्र संदेहो रसराजप्रसादतः।।

अर्थात् जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की एक बार भी पूजा कर लेता है, उसे जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चारों प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है।

स्वयम्भू लिंग सहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद भवेत्।।

अर्थात् हजारों प्रसिद्ध लिंगों की पूजा से जो फल मिलता है, उससे करोड़ गुना फल पारद निर्मित शिवलिंग की पूजा से सहज ही में प्राप्त हो जाता है।

5. शिव निर्णय रत्नाकर —

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः।।
रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति।।

अर्थात् मिट्टी या पत्थर से करोड़ गुना अधिक फल स्वर्ण निर्मित शिवलिंग के पूजन से मिलता है। स्वर्ण से करोड़ गुना अधिक फल बाणलिंग (नर्मदेश्वर) के पूजन से प्राप्त होता है। नर्मदेश्वर बाण लिंग से भी करोड़ गुना अधिक फल पारद शिवलिंग के पूजन या दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। पारद निर्मित शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो संसार में हुआ है और न हो सकता है।

6. रस मार्तण्ड —

लिंगं कोटि सहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत्।।
ब्रह्महत्यासहस्राणि गोहत्या शतानिच।
तत्क्षणाद्विलयं यान्ति रसलिंगस्य दर्शनात्।।
स्पर्शनात् प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्।।

अर्थात् हजारों-करोड़ों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है। हजारों ब्रह्म हत्याओं और सैकड़ों गौ हत्याओं का किया हुआ पाप भी **पारद शिवलिंग** के दर्शन करते ही दूर हो जाता है, स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है — यह स्वयं भगवान् शिव का कथन है।

7. ब्रह्म पुराण —

धन्यास्ते पुरुषाः लोके येऽर्थयन्ति रसेश्वरम्।
सर्वपापहरं देवं सर्वकामफलप्रदम्।।
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्यास्त्रियः शूद्रान्त्यजातयः।
सम्पूज्य तं सुरवरं प्राप्नुवन्ति परां गतिम्।।

अर्थात् संसार में वे मनुष्य धन्य हैं, जो समस्त मनोवाञ्छित फलों को देने वाले पारद शिवलिंग का पूजन करते हैं। इसका पूजन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री या अन्त्यज कोई भी करके पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता हुआ परम गति को प्राप्त कर सकता है।

8. ब्रह्मवैवर्त पुराण —

पच्यते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
कृत्वालिंगं सकृत् पूज्य वसेत्कल्पशतं दिवि।।
प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्रवान्धनवांस्तथा।
ज्ञानवान् मुक्तिवान् साधुः रस-लिंगार्चनाद् भवेत्।।

अर्थात् जो एक बार भी पारद शिवलिंग का विधि विधान से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं,

तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है, उसके जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र, विद्या, ज्ञान, आदि में कोई कमी नहीं रहती और अन्त में वह निश्चय ही मुक्ति प्राप्त करता है।

9. शिव पुराण —

गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भ्रूणहापि वा।
शरणागतघाती च मित्र विश्रम्भघातकः।।
दुष्टपापसमाचारो मातृपितृहापि वा।
अर्चनात् रसलिंगेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते।।

अर्थात् गौ-हत्यारा, कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला तथा माता-पिता का घातक भी यदि पारद शिवलिंग की पूजा करता है, तो वह तुरन्त सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

10. वाग्वीय संहिता —

आयुरारोग्यमैश्वर्य यच्चान्यदपि वांछितम्।
रसलिंगस्यार्चनादिष्टं सर्वं लभते नरः।।

अर्थात् आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा और जो भी मनोवाञ्छित वस्तुएं हैं, उन सबको पारद शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा भी सैकड़ों ग्रंथों में पारद शिवलिंग की विशेषता बताई गई है। भगवान शंकर ने स्वयं कहा है, कि मुझे वह व्यक्ति ज्यादा प्रिय है, जो द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने की अपेक्षा मात्र पारद शिवलिंग के दर्शन कर लेता है।

पारद शिवलिंग आर्द्रता रहित, निश्चल, छिद्रपक्ष रहित, श्वेत लिंगाकार होना चाहिए और ऐसा शिवलिंग शास्त्र सम्मत होना आवश्यक है, क्योंकि शिवलिंग और उसके आधार का एक निश्चित परिमाण है। यह कार्य केवल '**विजय-काल**' में ही सम्पन्न करना चाहिए और इस प्रकार श्रेष्ठ समय में पारे को रस सिद्ध करके उसे ठोस बनाने की प्रक्रिया करनी चाहिए, साथ ही साथ शिवलिंग का आकार भी विजय काल में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में पारद शिवलिंग को मुद्रा, बन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मंत्र-सिद्ध, रस सिद्ध करना चाहिए। ऐसा होने के बाद संजीवनी मुद्रा मंत्र से उसे प्रभाव पूर्ण बनाना चाहिए, ऐसा होने पर ही पारद शिवलिंग दुर्लभ शिवलिंग बनता है। भारत में बहुत ही कम सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ऐसा शिवलिंग है।

जब भाग्य होता है, तभी इसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है; जब सौभाग्य का उदय होता है, तभी व्यक्ति इस प्रकार का पारद शिवलिंग प्राप्त करता है। वस्तुतः वे व्यक्ति और उनकी पीढ़ियां धन्य हैं, जिनके घर में ऐसे दुर्लभ पारद शिवलिंग स्थापित हैं।

शास्त्रों के अनुसार पारद शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। मेरे जीवन में ऐसे हजारों अनुभव हैं, यदि उन्हें लेखनी बद्ध किया जाए, तो पूरा एक ग्रंथ बन सकता है, कि पारद शिवलिंग के पूजन से उन लोगों ने उन असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर दिखाया है, जो उनके लिए सम्भव नहीं थे। ऐसे व्यक्ति दरिद्र के घर में जन्म लेकर भी प्रसिद्ध उद्योगपति और लक्ष्मीपति होते देखे गये हैं। संसार में और सभी मंत्र-तंत्र झूठे हो सकते हैं, पर ऐसा एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं है, कि किसी के घर में पारद शिवलिंग स्थापित हो और उसके जीवन में पूर्णता प्राप्त न हुई हो।

जिसके घर में पारद शिवलिंग होता है, वह घर तीर्थ के समान माना जाता है और उसमें रहने वालों के समस्त कार्य सुविधापूर्वक सम्पन्न होते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण भोग भोगते देखे गये हैं, ऐसे घरों से नित्य मंगलदायक समाचार प्राप्त होते रहते हैं। उनके जीवन में अभाव या न्यूनता नहीं रहती, अपितु उनकी सारी इच्छाएं स्वतः ही पूरी होती रहती हैं।

वास्तव में ही जिसके तप, ज्ञान द्वारा पाप क्षीण होते हैं उनको ही पारद शिवलिंग की पूजा का सौभाग्य प्राप्त होता है। हो सकता है, आज के इस अनास्थावान युग में यह बात विश्वसनीय प्रतीत नहीं हो रही हो, पर यह उनका दुर्भाग्य ही है, कि वे सही रूप में सोच ही नहीं पाते।

स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह घोषणा करने में सक्षम हूं, कि पारद शिवलिंग अपने आप में दुर्लभ शिवलिंग है। बिना प्रसिद्ध योगी या गुरु के इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त नहीं हो पाता और भाग्य से ही रस सिद्ध पारद शिवलिंग घर में स्थापित हो पाता है।

इस जीवन में धन तो आता जाता रहता है, परन्तु जीवन का सौभाग्य उदय होने पर ही व्यक्ति सही निर्णय कर पाता है और प्रयत्न करके अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर पाता है, जिससे वह तो पूर्ण भोग और मोक्ष प्राप्त करता ही है, उसकी आगे की पीढ़ियां भी उसके प्रति कृतज्ञ रहती हैं, जिसकी वजह से उनके घर में पारद शिवलिंग स्थापित हो सका।

आज के इस युग में भी पारद शिवलिंग एक चमत्कार है, एक श्रेष्ठ साधना है, एक आश्चर्यजनक सफलतादायक उपाय है।

यह लेख सन् 1981 के मार्च अंक में प्रकाशित किया गया था, जिसमें बहुसंख्यक साधकों को सफलता भी प्राप्त हुई थी। उसी लेख का पुनर्प्रकाशन किया जा रहा है, जिसकी साधना सामग्री आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। आप केवल दो पत्रिका सदस्य बनायें (जो आपके परिवार के सदस्य न हों) और संलग्न पोस्टकार्ड भर कर हमें भेज दें।

हम 423/- (दो पत्रिका सदस्यता शुल्क 195/- + 195/- डाक व्यय 33/- = 423/-) की वी०पी०पी० से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'पारद शिवलिंग' भेज देंगे और आपके दोनों परिचितों को नियमित पूरे वर्ष पर्यन्त पत्रिका भेजते रहेंगे।

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल, आनन्ददायक बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलता दायक बन सकेगा।

15 अगस्त — प्रात: काल एक सुपारी पर सिन्दूर लगा कर गणपति रूप में उसका पूजन करें।

16 अगस्त — 'ॐ शं शनिश्चरायै नम:' (Om Sham Santscharaye Namh) का ग्यारह बार उच्चारण कर घर से बाहर जायें।

17 अगस्त — प्रात:काल 'आदित्य स्तोत्र' का पाठ करें।

18 अगस्त — प्रात:काल पांच बिल्व पत्र शिवलिंग पर चढ़ा कर पूजन करें।

19 अगस्त — प्रात:काल 'हनुमान चालीसा' का पाठ करें।

20 अगस्त — प्रात:काल पांच प्रकार के पुष्प भगवती जगदम्बा के समक्ष चढ़ायें।

21 अगस्त — 'गुरु ध्यान' कर ही बाहर जाय।

22 अगस्त — 'श्री फल' (न्यौछावर — 21/-) को साथ में लेकर बाहर जायें।

23 अगस्त — प्रात:काल तिल के तेल का दीपक लगा कर उसका मुख पश्चिम दिशा की ओर कर दें, इसके उपरान्त ही कोई कार्य करें।

24 अगस्त — एक कागज में कुंकुम से 'ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं नम:' (Om Hreem Shreem Hreem Namah) लिख कर उसे अपने पास रखें।

25 अगस्त — प्रत्येक कार्य से पूर्व 'ॐ ह्रं ह्रीं स: नम:' (Om Hram Hreem Sah Namah) का सात बार उच्चारण करें।

26 अगस्त — 'हेमांगना' (न्यौछावर — 65/-) को पास में रखने से महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे।

27 अगस्त — चुटकी भर हींग को अपने सिर पर से तीन बार घुमा कर उत्तर दिशा की ओर फेंक दें।

28 अगस्त — किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व 'ॐ नारायणाय नम:' (Om Narayanay Namah) मंत्र का जप तीन बार करें।

29 अगस्त — गणपति की आरती कपूर से करें।

30 अगस्त — बाहर जाने से पूर्व चुटकी भर नमक घर के दरवाजे पर रख कर जायें।

31 अगस्त — बाहर जाने से पूर्व दो इलाइची को मौली से बांध कर अपने पास रख कर जायें।

1 सितम्बर — 'प्रखरया' (न्यौछावर — 35/-) को शिवलिंग पर चढ़ा कर ही अपना कार्यारम्भ करें।

2 सितम्बर — शुभ कार्य के लिए जाते समय सरसों को दरवाजे के बाहर बिखेर दें।

3 सितम्बर — बाहर जाने से पूर्व निम्न श्लोक का पांच बार उच्चारण करें —

श्वेताम्बरं श्वेतविले पपुष्पं मुक्ताविभूषं मुदितं द्विनेत्रम्।
वामांकपीठस्थित दिव्य शक्तिं मन्दस्मितं सान्द्रकृपानिधानम्।।

4 सितम्बर — सुगन्धित धूप लगाकर नारायण स्मरण (मार्च-97 की पत्रिका में प्रकाशित) का पाठ करें।

5 सितम्बर — श्वेत वस्त्र धारण करें।

6 सितम्बर — 'क्रत्वा' (न्यौछावर — 60/-) को गुरु चित्र के समक्ष रख कर कार्य हेतु जायें, वापिस आने पर 'क्रत्वा' को किसी को दान दे दें।

7 सितम्बर — किसी भी कार्य को करने से पूर्व 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ' (Om Shreem Hreem Shreem Om) का पांच बार जप करें।

8 सितम्बर — घर से निकलने से पूर्व दही या इससे निर्मित कोई वस्तु ग्रहण करें।

9 सितम्बर — प्रात:काल लाल पुष्प हनुमान चित्र पर चढ़ायें।

10 सितम्बर — पूरे दिन अनुकूलता प्राप्त करने के लिए आप चन्दन का तिलक लगायें।

11 सितम्बर — प्रात:काल 'निखिलेश्वर शतकम्' के श्लोक संख्या 51 से श्लोक संख्या 61 तक पाठ करने के उपरान्त ही कोई अन्य कार्य करें।

12 सितम्बर — 'लौंग' को पूजन स्थान में घी को दीपक में जला देने से आने वाली विपत्ति समाप्त होती है।

13 सितम्बर — घर से निकलते समय आपकी जिस ओर की श्वास चल रही हो, उस ओर का पांव पहले निकाल कर बाहर जाय।

14 सितम्बर — गुरु स्मरण कर प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करें।

इथोपी

— श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

यह पड़ाव है 'विशुद्ध चक्र' का . . . विशुद्ध अर्थात् पूर्णतः शुद्ध . . . यहां तक पहुंचते-पहुंचते अज्ञानता का समस्त अंधकार तिरोहित हो जाता है, आत्मा पर पड़ी अशुद्धियों की धूल समाप्त हो जाती है और पूर्णतः शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होने से आत्मा का निर्मल सत् चित् स्वरूप आभासित होने लगता है . . . और इसकी विलक्षण उपलब्धियां . . . प्राप्त कर लेने के बाद भी सहज ही विश्वास नहीं होता, सब कुछ स्वप्निल लोक सा नजर आता है . . . परन्तु वास्तविकता तो वास्तविकता होती है . . . और इस वास्तविकता का एहसास कर गर्व से सिर ऊंचा हो जाता है . . . गर्व होता है हमारे पूर्वज ऋषियों पर . . . गर्व होता है भारत की प्राचीन विद्याओं पर . . . गर्व होता है इतना अद्वितीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने आप पर . . . और फिर सिर झुक जाता है गुरुत्व की श्रेष्ठता के आगे, जिसकी करुणा, जिसकी कृपा से ऐसा अद्भुत अध्याय इस जीवन में प्रारम्भ हो पाया, जिसके चरणों में समर्पण करते ही श्रेष्ठता और अद्वितीयता की उपलब्धि इतने सहज रूप में सम्भव हो सकी . . .

आकाश तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि तत्त्वों से सूक्ष्म है, यह सर्वव्यापक भी है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इसका विस्तार है, अतः यह अन्य तत्त्वों को अपने अन्दर धारण करने की क्षमता रखता है। इस सूक्ष्मता के कारण ही यह सभी पदार्थों के अन्दर प्रविष्ट है।

यौगिक विज्ञानमय कोश की अवधारणा के अनुसार आकाश तत्त्व अन्य सभी तत्त्वों का सहचर है तथा शरीर में इसकी उपस्थिति के कारण ही शरीर के सभी अवयव गतिशील हो पाते हैं। इस प्रकार शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं की उत्पत्ति का मूल कारण आकाश तत्त्व ही है।

मात्र शारीरिक अवयव ही नहीं, शब्द, वायु, मेघ, विद्युत, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि भी इसी तत्त्व का अवलम्बन प्राप्त कर गतिशील हो पाते हैं। स्थूल शरीर के अलावा सूक्ष्म शरीर को भी सबसे अधिक इसी तत्त्व की आवश्यकता पड़ती है। इस अवस्था में पृथ्वी और जल तत्त्व का सर्वथा लोप हो जाता है और साधक इसी तत्त्व का आश्रय ले कर लोक-लोकान्तरों में गमन कर पाता है।

समस्त शारीरिक क्रियाओं का मुख्य कारण होने के कारण इथोपी में आकाश तत्त्व का अत्यधिक महत्त्व है। इस तत्त्व पर नियन्त्रण प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति अपने शरीर की समस्त स्थूल क्रियाओं पर नियन्त्रण स्थापित करने में सक्षम हो जाता है और इसका लाभ यह होता है, कि वह अपने शरीर को नये रोगों से मुक्त रखने की क्रिया जानने लगता है। इस प्रकार व्यक्ति नये रोगों से अपना बचाव करने में सक्षम होता है।

यह सब आपको 'परी-कथाओं' की तरह अनुभव हो सकता है, क्योंकि व्यक्ति सामान्यतः अपनी अनन्त शक्तियों से अनभिज्ञ रहता है। इसका कारण यह है, कि हम न तो अपनी आत्मिक शक्तियों को अच्छी तरह पहिचान पाये हैं और न ही अपनी मानसिक शक्तियों को तथा दुर्भाग्यवश हम व्यर्थ के तर्क-कुतर्क में समय व शक्ति को व्यय करते रहते हैं। जिस दिन हम अपनी पूर्ण मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों को जान लेंगे, उस दिन हमारे लिये कुछ भी असम्भव नहीं रहेगा।

बिना जाने-बूझे, बिना कसौटियों पर कसे यह मत बनाना, कि कोई तथ्य झूठ है, वह वास्तव में मिथ्या नहीं हो जायेगा। यह तो केवल हमारी मानसिकता का संकुचन है, कि हमारे विचार एक सीमित क्षेत्र के बाहर नहीं जा पाते तथा हम

उन अखण्ड तथ्यों को नहीं समझ पाते, जिन्हें हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि, मुनियों तथा योगियों ने पहिचाना था।

विशुद्ध चक्र की कई और भी अद्भुत उपलब्धियां हैं, जिनमें से एक है — 'लेखन की प्रतिभा'। इस उपलब्धि के प्राप्त होते ही गद्य, पद्य, काव्य, दर्शन आदि अपने आप ही उसकी कलम से निकलने लगते हैं, भाषा तथा उसके सटीक प्रयोग का उसे ज्ञान हो जाता है, अपनी लेखनी के द्वारा वह सुन्दर साहित्य की रचना कर पाता है तथा वह चाहे तो साहित्य जगत में नाम कमा सकता है।

महाकवि कालिदास प्रारम्भ में अत्यन्त ही मूढ़ व्यक्ति थे, जिनमें सामान्य व्यावहारिक ज्ञान का भी अभाव था। उनकी शिक्षा हुई नहीं थी, अतः साहित्य या किसी अन्य विषय में वे एकदम कोरे थे। विद्योत्तमा के द्वारा अपमानित होने के उपरान्त उन्हें गुरु सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और गुरु ने उनकी सेवा और समर्पण से प्रसन्न हो कर उनके चक्रों को पूर्ण चैतन्यता प्रदान की थी, जिसके फलस्वरूप वे अत्यन्त श्रेष्ठ विद्वान बन सके और 'महाकवि' की उपाधि से सम्मानित हो सके। उन्होंने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' तथा 'मेघदूत' जैसी अमर रचनाएं इस समाज को दीं। कहा जाता है, कि उनके जैसा श्रेष्ठ विद्वान इतिहास में कोई दूसरा नहीं हो सका।

इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर अनाहत चक्र से प्रारम्भ हुआ आत्मा का ब्रह्माण्ड से संयोग और अधिक घनिष्ठता को प्राप्त होता है। इस प्रकार अनाहत चक्र से आत्मा और ब्रह्माण्ड में सर्वत्र स्थापित शक्ति का जो सामञ्जस्य प्रारम्भ होता है, विशुद्ध चक्र पर पहुंचने पर उसमें धीरे-धीरे परिपक्वता आने से आध्यात्मिक उत्थान अपनी चरम सीमा की ओर अग्रसर होने लगता है।

विशुद्ध चक्र भारतीय वैदिक सिद्धान्त के पंच तत्त्वों में से 'आकाश तत्त्व' का प्रतिनिधित्व करता है। आकाश तत्त्व चूंकि इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त है, अतः इस चक्र पर नियंत्रण प्राप्त होते ही व्यक्ति का सम्बन्ध सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से हो जाता है और उसे इसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों का भी सहज ही ज्ञान हो जाता है।

लेकिन आकाश तत्त्व अत्यन्त ही विरल है, अतः सहज ही इस पर नियन्त्रण प्राप्त करना सम्भव नहीं है। इसे नियन्त्रित करने के लिए आवश्यक है, कि कोई दिव्य शक्ति शरीर में त्वरित हो . . . और यह क्रिया सम्भव होती है 'गुरु' से प्राप्त 'शक्तिपात' द्वारा, शक्तिपात के उपरान्त ही विशुद्ध चक्र का पूर्ण चैतन्यीकरण सम्भव है।

यह चक्र कण्ठ प्रदेश में स्थित होता है। जब यह पूर्णतः चैतन्य होता है, तो व्यक्ति के कण्ठ में स्वतः ही सरस्वती का स्थापन हो जाता है, स्वतः ही वेदों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है, आधुनिक और प्राचीन सभी विद्यायें उसके मस्तिष्क में अपने आप प्रविष्ट हो जाती हैं, उसकी वाणी अत्यन्त ओज युक्त हो जाती है और वह किसी भी विषय पर घंटों धारा प्रवाह बोल सकता है।

इस चक्र का आकार षोडश दलों वाले कमल के समान होता है। यह चक्र दिव्य ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है। इसका रंग पीला होता है, जो कि इसके चैतन्य होने के पश्चात् निःसृत होने वाली रश्मियों का रंग है। इसके देवता 'पंचवक्त्र' (सदाशिव) तथा उनकी शक्ति 'शाकिनी' है।

विशुद्ध चक्र को पूर्ण स्पन्दन एवं चैतन्यता प्रदान कर निम्न उपलब्धियों की प्राप्ति की जा सकती है —

1. इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर आकाश तत्त्व पर नियंत्रण स्थापित होता है। जो व्यक्ति क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर तथा अनाहत चक्र को चैतन्य करते हुए इस मुकाम पर पहुंचते हैं, उनका अपने शरीर के सभी पंच तत्त्वों पर नियन्त्रण स्थापित हो जाता है।
2. इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य और स्पन्दन युक्त होने पर व्यक्ति अपने **शरीर का नये रोगों से बचाव** करने की क्रिया जान लेता है।
3. इसके माध्यम से **तनाव से पूर्णतः मुक्ति** मिल जाती है।
4. इसके द्वारा **तपेदिक रोग पर नियन्त्रण** प्राप्त किया जा सकता है।
5. **गले का दर्द, टॉन्सिल, गलगण्ड** आदि रोगों को इस चक्र के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है।
6. **थायरॉइड ग्रन्थि की विकृतियों** को इस चक्र की शक्तियों का उपयोग कर दूर किया जा सकता है।
7. यदि **सर्दी, जुकाम, खांसी, साइनस** आदि बीमारियां सदैव बनी ही रहती हों, तो इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें।
8. **अस्थमा** को भी इस चक्र के माध्यम से दूर किया जा सकता है।
9. **निम्न या उच्च रक्तचाप** की बीमारी को इस चक्र की सहायता से दूर किया जा सकता है।
10. विशुद्ध चक्र के चैतन्य होने पर **आंखों से सम्बन्धित न्यूनताएं** दूर होने लगती हैं और मोतियाबिन्द, रतौंधी

आदि समस्यायें यदि प्राथमिक अवस्था में हैं, तो समाप्त हो जाती हैं।

11. इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति के कण्ठ में ज्ञान तथा बुद्धि की देवी सरस्वती का स्थापन हो जाता है, जिसके फलस्वरूप वह किसी भी विषय पर अधिकार पूर्वक घंटों बोल सकता है।

12. इसके द्वारा व्यक्ति '**वाक् सिद्धि**' प्राप्त कर सकता है। वाक् सिद्धि का अर्थ है – व्यक्ति जो भी बोले, वह सत्य हो। इस प्रकार श्राप तथा वरदान देने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है।

13. इस चक्र के माध्यम से व्यक्ति अपने अन्दर लेखन या कवित्व की प्रतिभा को पूर्ण रूप से जाग्रत कर सकता है और साहित्य जगत की ऊंचाइयों को स्पर्श कर सकता है।

14. इस चक्र के माध्यम से व्यक्ति **गायन और संगीत** के क्षेत्र में पारंगत हो सकता है।

15. इस चक्र को पूर्णतः चैतन्यता प्रदान कर व्यक्ति नृत्य की भाव-भंगिमाओं को समझ कर उनमें निष्णात हो सकता है।

16. इस चक्र की सहायता से '**शून्य सिद्धि साधना**' में आने वाली बाधाएं समाप्त होती हैं और सहज ही सफलता मिल जाती है।

17. अनाहत चक्र पर प्राप्त होने वाली समाधि की प्राथमिक अवस्था में विशुद्ध चक्र पर पहुंचने पर परिपक्वता आने लगती है।

18. इसके माध्यम से व्यक्ति '**पूर्ण योग सिद्धि**' प्राप्त कर अपने शरीर एवं आत्मा पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर सकता है।

19. इस चक्र को पूर्णतः चैतन्यता प्रदान कर व्यक्ति **इच्छा मृत्यु** की क्षमता प्राप्त कर स्वेच्छा से प्राणों का त्याग करता है।

20. इस चक्र की एक अन्य उपलब्धि है – '**पूर्ण सांसारिक सफलता**', अर्थात् भौतिक सुख, धन, दौलत, यश, सम्मान आदि सभी सांसारिक उपलब्धियां व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, यदि उसकी ऐसी इच्छा हो।

21. विशुद्ध चक्र की एक अन्य अद्भुत उपलब्धि है – '**सम्मोहन**'। अनाहत चक्र पर प्राप्त होने वाली सम्मोहन की प्रारम्भिक अवस्था इस चक्र पर पूर्णता को प्राप्त करती है।

साधना विधान

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए प्राण प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध '**विशुद्ध यंत्र**' की आवश्यकता होती है।

किसी भी गुरुवार को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त हो कर, पीले रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पीले रंग के आसन पर बैठ जायें, दिशा उत्तर या पूर्व की ओर हो। सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर केसर से स्वस्तिक का निर्माण कर उस पर विशुद्ध यंत्र की स्थापना करें।

सबसे पहले अपने गुरुदेव का ध्यान कर उनका सामान्य पूजन सम्पन्न करें –

ध्यान

त्वं विशुद्धं त्वं ब्रह्म त्वं विष्णु
त्वं रुद्र त्वं तत्त्वमसि त्वं पूर्ण ॐ

गुरु पूजन के उपरान्त विशुद्ध यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ा कर पूजन करने के पश्चात् उसे ध्यान पूर्वक देखते हुए (यदि सम्भव हो, तो त्राटक करते हुए) पूर्ण एकाग्र हो कर निम्न मंत्र का 30 मिनट तक जप करें –

मंत्र

।। ॐ ह्रीं क्रीं विशुद्धाय फट्।।

OM HREEM KREEM VISHUDDHAY PHAT

ऐसा सात दिन तक नित्य करें। ऐसा करने पर यंत्र में संग्रहित शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित विशुद्ध चक्र में हो जाता है, फलस्वरूप विशुद्ध चक्र के स्पन्दन की तीव्रता में वृद्धि होने से वह चक्र चैतन्य हो जाता है। सात दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

अब उपरोक्त 21 बिन्दुओं में से आप जो भी उपलब्धि प्राप्त करना चाहते हैं या जिस रोग को समाप्त करना चाहते हैं, उसके लिए गुरुवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् पीले रंग के वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जायें तथा गुरु पूजन सम्पन्न कर मनोवाञ्छित संकल्प ले कर, पंचवक्त्र और उनकी शक्ति शाकिनी से उस इच्छा की पूर्ति की प्रार्थना करते हुए विशुद्ध चक्र पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक जप करें। ऐसा करने पर विशुद्ध चक्र में निहित ऊर्जा स्पन्दित हो कर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आपकी इच्छा पूर्ण हो सकेगी।

न्यौछावर – 220/-

महालक्ष्मी शृंगार युक्त होकर

इस बार आपका वरण करने के लिए आतुर है

दीपावली की रात्रि जीवन से दुर्भाग्य, दुःख, दैन्य, दरिद्रता, कष्ट, पीड़ा, बाधा, अभाव रूपी अन्धकार को मिटा कर सुख, आनन्द, सौभाग्य, सम्पन्नता आदि का प्रकाश बिखेरने की रात्रि है।

यों तो प्रत्येक के जीवन में बाधाएं, समस्याएं, अड़चनें, परेशानियां तो आती ही रहती हैं और चाहे-अनचाहे व्यक्ति को उनका सामना करना ही पड़ता है। लेकिन यह आवश्यक है, कि वे बाधाएं और समस्याएं हमारे जीवन में हावी न हो सकें, उनका कोई विपरीत प्रभाव हमारे जीवन में व्याप्त न हो सके और हम उन पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करते हुए अपने लक्ष्य की ओर निर्विघ्नता पूर्वक अग्रसर हो सकें।

और इसके लिए फिर एक ही श्रेष्ठ मार्ग शेष रहता है महागणपति-महालक्ष्मी साधना का। प्रत्येक साधक को यह साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए, जिससे कि उसके जीवन के सभी विघ्नों का नाश हो सके और समस्त स्वरूपों के साथ लक्ष्मी उसके घर में स्थापित हो सके। इस साधना का तात्पर्य केवल धन की साधना करना नहीं है, अपितु घर में श्री, ऐश्वर्य, धान्य, सम्पदा, सुख, आरोग्य, यश, सम्मान को भी स्थापित करना है।

लक्ष्मी साधना की बात जब आरम्भ होती है, तो उसके लिए एक ही श्रेष्ठ काल बताया जाता है और वह है कार्तिक मास की अमावस्या, जिसे तंत्र में '**कालरात्रि**' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

'**कालरात्रि**' का अर्थ भी तो यही है, कि इस रात्रि में साधक अपनी क्षमता और तेजस्विता के आधार पर अपनी इच्छानुसार काल को परिवर्तित कर सकता है। इस विषय में एक लोकधारणा यह भी है, कि इस रात्रि को लक्ष्मी अपने पूर्ण वैभव के साथ निकलती हैं और लोग इसलिए ही अपने घरों में दीपक लगाते हैं और रात्रि को जागरण करते हैं, कि लक्ष्मी उनके घर में एक बार आ जाये।

यह एक सिद्ध मुहूर्त है, इसकी प्रतीक्षा तो इन्द्रादि देवता तथा श्रेष्ठ योगी भी करते हैं, जिससे वे इस अवसर पर श्रेष्ठतम साधनाएं सम्पन्न कर श्री सम्पन्न बने रह सकें।

सिद्ध मुहूर्त का महत्त्व बताते हुए '**योग वशिष्ठ**' में कहा गया है, कि सिद्ध मुहूर्त में जो कार्य सहज ही सम्भव होता है, वही कार्य बिना मुहूर्त के सम्पन्न करने में सहस्र गुना अधिक परिश्रम लगता है।

इस बार दीपावली का यह मुहूर्त अत्यधिक तीव्र प्रभाव लेकर उपस्थित हो रहा है। धन त्रयोदशी से आरम्भ हो कर गोवर्धन पूजा के दिन तक अर्थात् पूरे पांच दिनों तक व्याप्त अत्यन्त श्रेष्ठ प्रभावों से युक्त यह वर्ष का सर्वश्रेष्ठ समय अपने आपमें अनेक उपलब्धियों को प्रदान करने में समर्थ है। ऐसे समय में ऐसी अद्वितीय साधना को सम्पन्न

करना सम्पन्नता की ओर अग्रसर होना है, जीवन को सुखी व सुदृढ़ बना देना है और एक ही छलांग में श्रेष्ठता को प्राप्त कर लेना है। इस समय को गंवा देना उसी प्रकार से होगा, जिस प्रकार से सहजता से प्राप्त हीरे को गंवा देना।

यह तंत्र का एक तीक्ष्ण प्रयोग है और वशिष्ठ के द्वारा सम्पन्न यह साधना आपको कलियुग में भी शीघ्र फल देने में सक्षम है, क्योंकि इस साधना का मूल ही इसी पर आधारित है, कि मेरी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हों, मैं जीवन में श्रेष्ठ मार्ग पर अग्रसर होते हुए यश, सम्मान प्राप्त करूं, मेरा घर धन, धान्य, सम्पदा से युक्त हो, मेरा परिवार पूर्ण रूप से निरोगी रहे, मेरे घर में सुख, उमंग उल्लास, आनन्द व्याप्त हों तथा मैं भौतिक व आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होऊं।

इस साधना में **'महागणपति-महालक्ष्मी यंत्र'** की आवश्यकता पड़ती है, जो कि साधक को धन, धान्य, यश, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य आदि प्रदान करने के साथ-साथ जीवन के समस्त विघ्नों को समाप्त कर उसके जीवन को पूर्ण रूप से उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में समर्थ होता है। यह यंत्र ब्रह्मर्षि वशिष्ठ प्रणित सिद्ध मंत्रों द्वारा ही पूर्ण चैतन्य होना आवश्यक है। इस यंत्र के साथ **'ऋद्धि कल्पान्तिका'** तथा **'सिद्धि कल्पान्तिका'** नामक गुटिकाओं की आवश्यकता पड़ती है, जो ऋद्धि तथा सिद्धि की प्रतीक होती हैं। इनके साथ **'शुभ'** तथा **'लाभ'** नामक दो चक्र की भी आवश्यकता पड़ती है। इन सबके अतिरिक्त **'कमलगट्टे की माला'** भी आवश्यक है।

इस अवसर विशेष के लिए अत्यन्त सीमित मात्रा में ही पैकेटों का निर्माण हो पाया है, क्योंकि प्रत्येक सामग्री की प्राण प्रतिष्ठा में अत्यधिक ऊर्जा, धन और समय का व्यय होता है। अतः यदि आप अपने लिए पैकेट चाहते हैं, तो यथा सम्भव शीघ्र ही जोधपुर कार्यालय के पते पर अपना पत्र डाल दें, ताकि आपको किसी भी प्रकार की निराशा का सामना नहीं करना पड़े और आप समय पर निर्विघ्न साधना सम्पन्न कर सकें।

पैकेट न्यौछावर 300/-

दीपावली के इस प्रयोग की साधना विधि पत्रिका के अक्टूबर के अंक में प्रकाशित होगी।

ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना

महालक्ष्मी का पूजन दीपावली पर्व पर यदि इस पुस्तक के माध्यम से किया जाय तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है — ऐसा हजारों साधकों का विश्वास है क्योंकि उन्होंने इस पुस्तक में वर्णित विधि से पूजन सम्पन्न किया है।

महालक्ष्मी प्रत्येक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की आराध्या है, महालक्ष्मी अपने-आप में ही संसार का आधार हैं, क्योंकि महालक्ष्मी धन, यौवन, रूप, प्रभुता, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, स्वास्थ्य सब कुछ देने में समर्थ है; यदि सही तरीके से हम महालक्ष्मी के स्वरूप को समझ सकें, उसका विश्लेषण कर सकें और उनकी साधना को सही तरीके से शास्त्रीय विधान के साथ सम्पन्न कर सकें।

पृष्ठ संख्या की दृष्टि से यह पुस्तक भले ही छोटी हो, किन्तु प्रश्न कम या ज्यादा पृष्ठों का नहीं है, प्रश्न यह है कि इसमें कितनी शास्त्रीयता है, कितनी प्रामाणिकता है, कितनी अनुभवगम्यता है . . . और इसको सर्वजन के लिए उपयोगी बनाने में कितनी समर्थता है।

महालक्ष्मी से सम्बन्धित तो हजारों विधियां हैं, हजारों साधना पद्धतियां हैं, क्या एक व्यक्ति हजारों साधना पद्धतियों का उपयोग कर सकता है?

ऐसा सम्भव नहीं है, तो फिर विद्वान ही इस बात का निर्णय ले सकते हैं, कि आम लोगों के लिए, सामान्य मध्यम वर्ग के लोगों के लिए कौन-सी ऐसी साधना पद्धति है, जिसके माध्यम से वे तुरन्त अचूक और अनुकूल सहायता प्राप्त कर सकें।

ऐसी ही साधनाओं को इस पुस्तक में दिया गया है, जो कि सर्वजन के लिए उपयोगी हैं, जिनको सम्पन्न कर व्यक्ति अपनी गरीबी को दूर भगा सकता है, अपने स्वास्थ्य को पूर्ण यौवनवान बना सकता है, अपने जीवन को ऐश्वर्यमय बना सकता है, भौतिक व आध्यात्मिक चिन्तन की ओर अग्रसर हो सकता है और अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य है, जो उसका हेतु है, जो उसका उद्देश्य है वह चाहे व्यापार का क्षेत्र हो, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे अन्य कोई भी क्षेत्र हो।

✦ न्यौछावर — 40/-

एनीमिया कारण और निवारण

रक्त विच्छेद से एनीमिया का अर्थ होता है — एन अर्थात् नहीं + ईमिया अर्थात् खून या रक्त; तात्पर्य यह है कि खून का नहीं होना या कम मात्रा में होना एनीमिया कहलाता है। वास्तव में यह कमी रक्त की न हो कर लाल रक्त कणों 'हीमोग्लोबिन' (Haemoglobin) की होती है।

लाल रक्त कणों का मुख्य कार्य ऑक्सीजन को शरीर में स्थित विभिन्न कोशिकाओं तक पहुंचाना (Transport of oxygen) है, जिससे प्रत्येक कोशिका को ऑक्सीजन मिल सके।

इसकी कमी के परिणाम स्वरूप शरीर की कोशिकाओं को ऑक्सीजन कम उपलब्ध हो पाता है, जिससे वे कोशिकाएं ठीक ढंग से कार्य नहीं कर पाती और फलस्वरूप सम्बन्धित विकार उत्पन्न होते हैं।

एनीमिया मुख्यत: तीन कारणों से उत्पन्न होता है — 1.रक्त स्राव — (i) थोड़े समय में अधिक मात्रा में रक्त का निकल जाना (Acute) या (ii) अधिक समय तक धीरे-धीरे रक्त का बहते रहना (Chronic)। 2.अस्थि मज्जा (Bone Marrow) में लाल रक्त कणों का उत्पादन न होना। 3.लाल रक्त कणों का विनाश (Haemolysis)

एनीमिया के लक्षण (Symptoms of Anaemia)

1.कमजोरी। 2. शारीरिक या मानसिक कार्य क्षमता का क्षीण होना। 3. बैठे-बैठे ही अथवा श्रम करने पर सांस का फूलना। 4. चक्कर आना या आंखों के आगे अंधेरा छाना। 5. मेहनत करने पर उबकाई या उल्टी आना अथवा सीने में भारीपन या दर्द होना (Angina)। 6. हृदय के धड़कने की आवाज सुनाई पड़ना या महसूस होना (Palpitation)। 7. कानों और सिर में नसों का फड़कना महसूस करना (Throbbing Sensation)। 8. कानों में सीटी बजना। 9. सिर दर्द। 10. नजर का कम होना। 11. नींद का कम होना। 12. पैरों में सूजन होना। 13. हाथ और पैर की उंगलियों में चींटी सी चलना या झनझनाहट होना। 14. बच्चों की शारीरिक वृद्धि या वजन बढ़ना रुक जाना।

—डॉ0 सत्य नारायण दूबे

A 1/ 117 *लारेंस रोड, दिल्ली*, PH-7180966

डॉ0 दूबे दिल्ली के प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं, जो समय-समय पर जन कल्याण हेतु अपने सारगर्भित लेख भेज कर अपना सहयोग लोगों को प्रदान करते हैं। इस बार डॉ0 दूबे ने एनीमिया रोग के बारे में विवरण दिया है, कि वास्तव में यह किस प्रकार का रोग है तथा इसका निदान किस प्रकार सम्भव है ?

सभी प्रकार के एनीमिया में लक्षण एक ही प्रकार के होते हैं, केवल लौह तत्त्व की कमी से उत्पन्न एनीमिया में कुछ विशेष पाये जाते हैं — 1. मुंह आना या जिह्वा में सूजन होना। 2. नाखूनों का आसानी से टूटना या चपटे होना। 3. कोयला, मिट्टी, आदि खाने की इच्छा होना। 4. खाना खाने में तकलीफ या रुकावट होना।

एनीमिया के इन लक्षणों में से कोई एक या सारे भी प्रकट हो सकते हैं। लक्षणों का प्रकट होना इस बात पर निर्भर करते हैं, कि कितने समय में हीमोग्लोबिन कम हुआ। जैसे किसी के रक्त में लाल रक्त कणों की मात्रा एक सप्ताह में 13 ग्राम से 8 ग्राम हुई, तो लक्षण अधिक होंगे। यदि किसी व्यक्ति में लाल रक्त कणों की संख्या एक साल में 13 ग्राम से 7 ग्राम हुई, तो ऐसे व्यक्ति में लक्षण कम होंगे, क्योंकि लाल रक्त कणों के कम होने पर शरीर को आवश्यकतानुसार अपने आपको ढालने के लिए समय मिल जाता है।

एनीमिया किन कारणों से होता है ?

एनीमिया विभिन्न कारणों से उत्पन्न हो सकता है, परन्तु प्राय: लौह तत्त्व की कमी से होने वाला एनीमिया प्रमुख है, दूसरे प्रकार के एनीमिया दुर्लभ होते हैं। यहां लौह तत्त्व की कमी से उत्पन्न होने वाले एनीमिया के बारे में ही बताया जा रहा है।

शरीर में लौह तत्त्व की कमी से लाल रक्त कणों का निर्माण न होने से इनकी कमी हो जाती है। वैसे तो शरीर स्वयं प्रयास करता है, कि इस प्रकार का एनीमिया न हो और वह पुराने लाल रक्त कणों का विनाश होने पर उसमें मौजूद लौह तत्त्व को पुन: इस्तेमाल कर लेता है।

इसी कारण दिन भर के भोजन में लौह तत्त्व की सिर्फ 1 मिलीग्राम मात्रा की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था में व स्तनपान कराने वाली महिलाओं में इसकी आवश्यकता अधिक होती है।

लौह तत्त्व की कमी से उत्पन्न एनीमिया के तीन कारण — 1. रक्त स्राव 2. भोजन में लौह तत्त्व की कमी 3. भोजन से प्राप्त लौह तत्त्व का पाचन न हो पाना (Poor absorption of Iron)

इनमें भी पहला कारण ही मुख्य है। जब भी रक्त स्राव से उत्पन्न लौह तत्त्व की कमी भोजन में उपलब्ध लौह तत्त्व की मात्रा से ज्यादा होती है, तो एनीमिया हो जाता है। एक अचरज भरा सत्य यह भी है, कि लौह तत्त्व की कमी को भी हम कुछ परिस्थितियों में रोग नहीं मानते। बच्चा पैदा होने पर उसके शरीर में कुछ मात्रा लौह तत्त्व की होती है, जो धीरे-धीरे कुछ माह में इस्तेमाल हो कर समाप्त होने लगती है। इसका कारण यह है, कि इस आयु का बच्चा केवल दूध पर निर्भर होता है और दूध में लौह तत्त्व की मात्रा बहुत कम होती है। यदि आयु बढ़ने पर बच्चे को

दूसरा आहार देने में देरी हो जाती है और वह लम्बे समय तक केवल दूध पर ही निर्भर रहता है, तो लौह तत्त्व की कमी अवश्य हो जायेगी। ऐसा आहार, जिसमें लौह तत्त्व की मात्रा अधिक हो, बच्चे को देते ही यह कमी तुरन्त दूर हो जाती है।

दूसरा समय किशोरावस्था (14 से 18 वर्ष की आयु) का होता है, जब शरीर में तेजी से विकास होता है और लौह तत्त्व की आवश्यकता बढ़ जाती है, जो भोजन से उपलब्ध नहीं हो पाती, क्योंकि इस उम्र में युवाओं का रुझान संतुलित आहार की अपेक्षा 'फास्ट फूड' पर ज्यादा होता है।

रजस्वला स्त्री के शरीर को भी लौह तत्त्व की अधिक आवश्यकता होती है, उसे 2 मिलीग्राम लौह प्रतिदिन के भोजन के द्वारा प्राप्त होना चाहिए। यद्यपि गर्भावस्था में रजस्राव से होने वाली लौह तत्त्व की कमी तो रुक जाती है, परन्तु शिशु और मां के शरीर की आवश्यकता बढ़ जाती है। गर्भावस्था बढ़ने के साथ ही साथ लौह तत्त्व की आवश्यकता में भी वृद्धि होती जाती है। गर्भावस्था के दूसरे तिमाहे में मां के शरीर को लौह तत्त्व की आवश्यकता सबसे अधिक होती है और यह आवश्यकता इतनी अधिक बढ़ जाती है, कि वह दैनिक भोजन में भी उसकी पूर्ति नहीं हो पाती। इसीलिए चिकित्सक गर्भावस्था में लौह व कैल्शियम लेने की सलाह देते हैं। ज्यादातर यह पाया गया है, कि महिलायें इस विषय की गम्भीरता पर ध्यान न दे कर दवायें नियमित रूप से नहीं लेतीं, जिसका दुष्प्रभाव बच्चे व मां दोनों पर पड़ता है।

बवासीर, पेट का अल्सर, पेट में कीड़े पड़ना आदि से भी जो रक्त स्राव होता है, उससे भी शरीर में एनीमिया रोग हो जाता है।

उपचार

एनीमिया होने के पश्चात् शरीर में हुई लौह तत्त्व की कमी को दूर करने में भोजन में पाये जाने वाले लौह तत्त्व की मात्रा पर्याप्त नहीं होती, लौह तत्त्व वाला भोजन निरन्तर लेने की सलाह अवश्य दी जाती है। इस कमी को पूरा करने के लिए टेबलेट या कैपसूल के द्वारा शरीर को लौह तत्त्व की आपूर्ति की जाती है। यदि समय की कमी हो, तो इंजेक्शन के द्वारा भी शरीर में लौह प्रविष्ट कराया जाता है, जैसे जब प्रसव काल बहुत पास हो अथवा कोई 'एमरजेंसी ऑपरेशन' करना हो। अधिक रक्त स्राव आदि की स्थिति में हुए नुकसान को पूरा करने के लिए Packed red cells भी शरीर में दिये जाते हैं।

कब, क्या और कितनी अधिक मात्रा में लौह तत्त्व लेना है, यह हमेशा अपने अनुभवी चिकित्सक से परामर्श करने के उपरान्त ही लें और यदि उसके कुछ 'साइड इफेक्ट्स' जैसे कब्ज या दस्त आदि की शिकायत हो, तो पुनः अपने चिकित्सक से परामर्श करें।

जब शरीर में लाल रक्त कणों की संख्या बहुत कम होती है, तो उस समय शरीर को अधिक मात्रा में लौह तत्त्व की आवश्यकता पड़ती है। लौह तत्त्व की पर्याप्त मात्रा से लाल रक्त कणों की संख्या बढ़ने लगती है। जैसे-जैसे शरीर में लाल रक्त कणों की संख्या बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे शरीर को आयरन की आवश्यकता में कमी होती जाती है। एनीमिया ठीक होने के बाद 6 महीने से 1 वर्ष तक अधिक मात्रा में लौह तत्त्व से युक्त भोजन लेते रहना चाहिए, जिससे कि शरीर के लौह भण्डार फिर से भर जायें।

लौह तत्त्व की अधिक मात्रा वाले आहार

शाकाहारी भोजन में अनाज, हरी पत्तियों की सब्जियां जैसे पालक आदि, तेल वाले बीज जैसे तिल, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूखे मेवे व गुड़ आदि में लौह तत्त्व की मात्रा पर्याप्त होती है। यदि सामान्य भोजन को भी लोहे के बर्तन में पकाया जाय, तो उसमें लौह तत्त्व की मात्रा बढ़ जाती है।

मांसाहारियों के लिए अंडा, जिगर, मांस, मुर्गी व मछली में लौह तत्त्व अच्छी मात्रा में उपलब्ध होता है। मांसाहार से प्राप्त होने वाले आयरन को ऐलोपैथिक डॉक्टर शरीर के लिए ज्यादा उपयोगी मानते हैं।

कुछ आहार शरीर द्वारा लौह तत्त्व की पाचन क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। नींबू लौह तत्त्व की पाचन क्षमता में वृद्धि करता है, जबकि चाय में पाया जाने वाला टैनिन, सब्जियों में पाये जाने वाला ऑक्सालेट आदि तत्त्व इस पाचन क्षमता में बाधा डालते हैं।

एनीमिया होने पर चिकित्सकीय दृष्टि से शरीर को लौह तत्त्व की अधिक मात्रा या high dose की आवश्यकता होती है।

एनीमिया का निदान (Diagonosis of Anaemia)

चिकित्सक ऊपर बताये गए लक्षणों को देख कर तथा जिह्वा, हथेली, नाखून, अन्दर से पलकों में पीलापन देख कर एनीमिया को पहचानते हैं तथा लैबोरेटरी जांच की सहायता से एनीमिया की मात्रा तथा इसके प्रकार की जांच करते हैं। हृदय के कुछ रोगों का कारण एनीमिया ही होता है।

आयुर्वेदिक उपाय

अदरक जहां एक खांसी या कफ में लाभदायक औषधि है, वहीं कुछ ग्रंथों में इसे रक्त की कमी को समाप्त करने हेतु भी एक श्रेष्ठ औषधि है। इस औषधि का प्रयोग धैर्यपूर्वक करने पर ही सफलता प्राप्त होती है।

पांच ग्राम अदरक का रस तथा बांसेका रस (आयुर्वेदिक दवा की दुकान पर मिल जाता है।) तथा शहद मिलाकर रोज प्रातः पीयें। महीने भर तक नियमित प्रयोग से खून बनने की प्रक्रिया में तेजी आयेगी तथा चेहरे का सौन्दर्य भी निखर उठेगा।

एक तथ्य यह भी ध्यान रखने योग्य है, कि रक्तदान कभी भी एनीमिया का कारण नहीं होता, क्योंकि रक्तदान करने वाले व्यक्ति का पहले 'हीमोग्लोबिन टेस्ट' किया जाता है और हीमोग्लोबिन के कम होने पर रक्त लिया ही नहीं जाता। रक्तदान के समय एक व्यक्ति से करीब 300 मिलीलिटर खून ही लिया जाता है। लौह तत्त्व युक्त संतुलित भोजन करने पर कुछ ही दिनों में इसकी पूर्ति हो जाती है।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा, कि प्रत्येक व्यक्ति को समय-समय पर अपने शरीर में हीमोग्लोबिन की जांच कराते रहना चाहिए। वर्ष में एक बार या कभी भी संदेहात्मक स्थिति आने पर अपने चिकित्सक से तत्काल परामर्श ले कर शरीर को लौह तत्त्व की एक निश्चित समय तक आपूर्ति करनी चाहिए।

साधक साक्षी हैं . . .

पूज्य गुरुदेव की महिमा अनन्त

मैंने कोटा शिविर में पूज्य गुरुदेव से सपरिवार दीक्षा प्राप्त की और इस प्रकार हमारे जीवन में सौभाग्य का आगमन हुआ।

दीपावली के अवसर पर पूजन करने के लिए मैंने जोधपुर से 'दीपावली पूजन' कैसेट मंगाई थी। दीपावली के दिन परिवार के सभी सदस्यों ने मिल कर द्वार पर फूल बिछाये और गुरुदेव से प्रार्थना की, कि वे आ कर हमारे दीपावली पूजन को पूर्णता दें।

यह प्रार्थना करने के उपरान्त हम सभी लोग अन्दर दीपावली पूजन करने लगे। पूजन सम्पन्न होने के बाद जब हम सभी बाहर आये, तो देखा कि उन फूलों पर पूज्य गुरुदेव के चरण चिह्न अंकित थे। हमने उन चरण चिह्नों को स्पर्श कर अपने आपको धन्य किया।

हमारी पूज्य गुरुदेव से विनती है, कि वे हम पर ऐसी ही कृपा व आशीर्वाद बनाये रखें।

रमेश चन्द्र राय, सिरोंज, विदिशा, (म.प्र.)

जब मेरी पत्नी के प्राण बचे

मैं नवरात्रि शिविर में भाग लेना चाहता था। जिस दिन शिविर के लिए रवाना होना था, उस दिन मैंने सुबह मोटर चला कर अपने कपास के खेत में पानी दिया और फिर दिल्ली रवाना हो गया।

उसी दिन 10 बजे के करीब मेरी पत्नी को खेत में ही एक सर्प ने डंस लिया। सर्प के डंसने के बाद वह गांव की तरफ भागी। संयोग से उसे एक साईकिल वाला मिला, जिसने उसे अस्पताल तक छोड़ दिया। दो घंटे बाद ही वह बिलकुल ठीक हो कर घर आ गई।

यह पूज्य गुरुदेव की ही कृपा है, कि मेरी पत्नी की प्राण रक्षा हुई।

नन्दराम शर्मा, नाहरगढ़, भीलवाड़ा (राज.)

गुरु कृपा से ऑपरेशन टला

मेरी बहन के प्रसव का समय आ गया था, जिसकी वजह से उसके पेट में थोड़ा-थोड़ा दर्द शुरु हो गया था। मगर वह अस्पताल जाने से डरती थी, क्योंकि उसके डॉक्टर ने कहा था, कि बच्चा ऑपरेशन से होगा। हम सभी लोग परेशान थे, कि अब क्या किया जाय?

तब मैंने पूज्य गुरुदेव के ग्रंथ **'मंत्र रहस्य'** में से **सुखी प्रसव मंत्र सिद्ध किया** और सामने घी का दीपक जला कर उस मंत्र का शुभ मुहूर्त में 10 माला मंत्र जप किया। उस मंत्र से अभिमंत्रित जल बहन को पिलाया, जिसके फलस्वरूप बहन को तुरंत ही अस्पताल ले कर जाना पड़ा, जहां आधे घण्टे के अन्दर बिना ऑपरेशन ही प्रसव हो गया और मां व बच्ची दोनों स्वस्थ थे।

मैं गुरुदेव का बहुत ही आभारी हूं, जिनकी वजह से हमारा कार्य आसानी से सम्पन्न हुआ। **गुरुदेव हमें जो ज्ञान सहज ही उपलब्ध करा रहे हैं, वह वास्तव में ही अत्यन्त दुर्लभ और उच्चकोटि का है** तथा प्रत्येक व्यक्ति को इसकी महत्ता समझनी चाहिए।

हितेन्द्र पटेल, शंकरवाड़ी, जोगेश्वरी पूर्व, मुम्बई

छत से गिर कर भी . . .

मैं दिनांक 17.7.96 को छत पर सो रहा था, क्योंकि गर्मी बहुत ज्यादा थी। सुबह लगभग तीन बजे जब मैं सो कर उठा, तो यह बात भूल गया और अंधेरे के कारण छत से नीचे गिर पड़ा। गिरते समय 'जय गुरुदेव' की ध्वनि मेरे मुख से निकली और ऐसा लगा, जैसे स्वयं पूज्य गुरुदेव ने अपनी गोद में ले कर मुझे संभाल लिया हो। इतनी ऊंचाई से गिरने के बाद भी मुझे कोई बड़ी चोट नहीं आयी थी।

यह पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा ही है, कि वे सोते-जागते, हर पल, हर स्थिति में हम सभी शिष्यों का अपने बच्चों की तरह ध्यान रखते हैं।

शम्भूनाथ तिवारी, पलामू, बिहार

गुरु मंत्र से रोग मुक्ति

मैं एक बड़ी ही भयंकर बीमारी से ग्रस्त था, इस रोग को करीब छः साल हो गए थे। इस बीच मैंने अनेक डॉक्टरों से अपना इलाज कराया था, परन्तु रोग ठीक नहीं हो सका था। अंत में डॉक्टरों ने मुझे ऑपरेशन की सलाह दी।

मगर मैं ऑपरेशन नहीं करवा सका और गुरु मंत्र का निरन्तर जप करता रहा। अचानक शारदीय नवरात्रि 96 के समय मेरा रोग अचानक ही समाप्त हो गया और अब मैं एकदम ठीक हूं।

पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद हमें इसी प्रकार प्राप्त होता रहे, अब यही कामना है।

आई.डी.मर्सकोले, आंवरिया, बैतूल (म.प्र.)

पुत्र का जन्म

मेरे घर में दिनांक 20.1.96 को पुत्र का जन्म हुआ है। इससे पहले मेरी दो बेटियां थीं। गुरुदेव की जब से मेरे ऊपर कृपा हुई है, तब से मेरा हर कार्य सहज रूप से होता जा रहा है। एक लड़के की कामना बहुत दिनों से थी, जो पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आने के तुरंत बाद पूरी हो गई।

बच्चे के गर्भ में आने के तुरंत बाद मैंने **'मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं'** नामक कैसेट के दोनों भाग मंगाये और बच्चे की मां ने नौ माह तक प्रतिदिन उसमें उच्चरित मंत्रों का गुरु ध्यान के साथ श्रवण किया।

यह पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त उन दिव्य कैसेटों का ही चमत्कार है, कि वह बालक जन्म से ही अत्यन्त प्रतिभावान है। समस्त शिष्यों व साधकों पर पूज्य गुरुदेव की कृपा दृष्टि ऐसे ही बनी रहे, ऐसी ही मेरी प्रार्थना है।

ओमप्रकाश साहू, नाका हिंडोला, लखनऊ

26.10.97

अरे! आप अप्सरा सिद्ध नहीं कर सकते
जो आपकी प्रतीक्षा में सज-धज कर पलकें बिछाये बैठी है . . .

जो साधक को धन, ऐश्वर्य, सम्पन्नता तो प्रदान करती ही है
साथ ही पूर्ण कामाकल्प कर उसे सम्मोहक सौन्दर्य भी प्रदान करती है।

चन्द्रज्योत्सना अप्सरा साधना विधि

चन्द्रज्योत्सना . . . मेरी प्रिया, मेरी सखी . . . उसका और मेरा सम्बन्ध बहुत अनूठा है . . . अनिवर्चनीय है . . . आज भी जब मैं उसका स्मरण करता हूं, तो स्वतः ही पैंतीस वर्ष पूर्व की घटना मेरे मानस पटल पर कौंध जाती है। तब मेरा परिचय उस कमलनयनी, सौन्दर्य की दीपशिखा, चंद्रज्योत्सना से नहीं हुआ था।

तब मैं मात्र उन्नीस वर्ष का युवक था . . . कितनी ही अभिलाषाएं थीं मेरी, और मैं स्वयं यौवन की चरम सीमा पर खड़ा किसी को तलाश रहा था . . . कोई ऐसा साथी, जो हाथ पकड़ कर मेरा मार्गदर्शन करे, जो मुझे परेशानियों से उबारे, जो मुझे वह सब प्रदान कर सके, जो कि मेरा अभीष्ट था . . .

पर कौन है ऐसा साथी? क्या मैं कभी उससे मिल पाऊंगा? बस इसी ऊहापोह में मेरे जीवन की हर भोर मुझे अमावस्या की काली रात की भांति डंसती थी। जिस अभाव से मैं उन दिनों गुजर रहा था, उसका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं। तभी एक दिन . . .

वह एक विचित्र पुस्तक थी और देखने में काफी प्राचीन प्रतीत हो रही थी। उसके जर्जर पृष्ठ इस बात की घोषणा कर रहे थे, कि निश्चय ही वह कई हाथों से गुजरती हुई आखिरकार मेरे पास आ रुकी थी। पुस्तक साधनात्मक थी . . . यक्षिणी और अप्सरा साधनाओं से परिपूर्ण! कुछ पृष्ठ पढ़ते ही मैं इतना तो समझ ही गया, कि यह कृति किसी अनुभवी की कलम द्वारा रचित है . . . अतः उसकी प्रामाणिकता पर संदेह होना खुद संदेहप्रद प्रतीत हो रहा था।

तब मुझे इस बात का किञ्चित एहसास नहीं था, कि यह पुस्तक ही मेरी मंजिल की प्रथम सीढ़ी है, अतः मैंने पुस्तक को एक सामान्य रूप से ही लिया। उस साहित्य को पढ़ने पर मेरा रुझान यक्षिणी और अप्सरा साधनाओं की ओर हुआ तो सही, परन्तु मन में एक भय भी व्याप्त था, जो मुझे उस पुस्तक के ज्ञान को क्रियान्वित करने से रोक रहा था। मैंने सुना था, कि यक्षिणी और अप्सराएं निश्चय ही व्यक्ति को सब कुछ प्रदान करती हैं, परन्तु वे अत्यधिक ईर्ष्यालु भी होती हैं और यदि साधक किसी अन्य स्त्री से बात भी करता है, तो वे उसका सर्वनाश कर देती हैं . . .

एक अद्भुत घटना मेरे साथ यह हुई, कि जब भी मैं उस पुस्तक को उठाता, तो स्वतः ही एक पृष्ठ खुलता, जिस पर अंकित था '**चन्द्रज्योत्सना**' . . . और यही घटना मेरे साथ दस-बारह बार हुई . . . जब भी वह पृष्ठ खुलता, मैं अपनी सुध-बुध खो बैठता और एक चुम्बकीय शक्ति मुझे अपनी ओर खींचती हुई सी प्रतीत होती . . . पर हर बार पूर्ण मनोवेग

से मैं उस अदृश्य शक्ति के पाश से अपने आप को छुड़ा लेता और पीपल के पत्ते की भांति कांपते हुए कह उठता . . . 'नहीं, नहीं, यह मेरे लिए नहीं . . . मेरे लिए नहीं . . .'

. . . यह पुस्तक क्या आई, मेरे लिए एक क्षण का भी आराम नहीं था। मुझे सांत्वना देने की अपेक्षा उसने तो मेरी तृष्णाग्नि में घृत का काम ही किया था। कहीं मैं अपना मानसिक सन्तुलन ही न खो बैठूं, इसलिए मैंने कुछ दिनों के लिए देहरादून जाकर समय बिताने का निश्चय किया . . . आज जब मैं पलट कर पीछे देखता हूं, तो प्रतीत होता है, कि मानो कोई अदृश्य शक्ति ही मुझे ठेलकर वहां ले गई थी . . . .

वहां दैवयोग से मेरी भेंट एक अवधूत भैरवानन्द से हुई . . . यदि यह कहूं, कि उस अवधूत ने ही मुझे बलात् अपनी ओर खींचा था, तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

'अच्छा तो तू किसी विश्वसनीय साथी की तलाश में भटक रहा है' – वे बालकों की तरह हंस कर बोले – 'पर पगले! विश्वसनीय व्यक्ति तुझे इस जगत में कहां से मिलेगा . . . यहां तो सभी स्वार्थ साधन में लीन हैं।'

वास्तव में ही अब तक मैंने नारी सौन्दर्य का इतना अनूठा विवरण कभी नहीं देखा था . . . अद्भुत . . . अलौकिक . . . अनिवर्चनीय . . . उत्तेजना की तरंगे स्पष्टतः मैंने अपने शरीर के रोम-रोम में अनुभव की, मैं बेसुध सा उसकी ओर देख रहा था, कि तभी मेरी माला जमीन पर गिरते-गिरते बची . . .

मैं उनका आशय सही ढंग से समझ भी न पाया था, कि वे बोले– 'इस जगत में अनन्त प्राणी विचरते हैं और वे बड़ी बेसब्री से पृथ्वीवासियों के सम्पर्क में आने को लालायित रहते हैं . . .' फिर कुछ सोचकर – 'सबसे बड़ी बात यह है, कि वे पूर्ण विश्वसनीय एवं प्रेम से युक्त होते हैं . . . और इन्हीं प्राणियों में प्रमुख हैं अप्सराएं। मेरी राय में तुम्हें अप्सरा साधना करनी चाहिए . . .'

उन्हें मेरा भय दूर करने और मुझे विश्वास दिलाने में शायद घंटा भर लगा था, कि अप्सरा साधना तो वास्तव में अत्यधिक सौम्य साधना है और उससे साधक को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। जो अप्सरा साधक पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देती है, क्या वही साधक को नुकसान भी पहुंचा सकती है?

हालांकि इस बात पर भी उन्होंने विशेष जोर दिया, कि साधक को मर्यादा के प्रतिकूल कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

मेरा आश्चर्य तब द्विगुणित हो गया, जब उन्होंने मुझे **'चन्द्रज्योत्सना अप्सरा साधना'** को सम्पन्न करने का आदेश दिया। क्या यह कोई विचित्र, आश्चर्यजनक संयोग था या अटल नियति . . . मेरी समझ तो इसके निराकरण के लिए बौनी प्रतीत हो रही थी . . . भैरवानन्द ने मुझे सम्पूर्ण साधना विधि समझाई और मुझे सफलता का आशीर्वाद भी दिया।

उस दिन मैं बड़ा प्रसन्न था, मानो मुझे कोई निधि मिल गई हो। देहरादून में मुझे अभी एक सप्ताह और रुकना था, परन्तु मैं शीघ्रातिशीघ्र घर पहुंच कर यह साधना सम्पन्न करना चाहता था . . . चंद्रज्योत्सना का आकर्षण अभी से ही मुझे अपनी ओर खींच रहा था . . .

'ॐ ह्रीं चन्द्रज्योत्सना आगच्छ . . .'

मन्त्र की ध्वनि मेरे मुख से उच्चरित हो, मेरे एकांत कक्ष के वातावरण में फैल रही थी . . . रात्रि के करीब बारह बजे थे। भैरवानंद ने मुझे नित्य तीन दिनों तक मंत्र की ग्यारह मालाएं **'चन्द्रज्योत्सना चैतन्य यंत्र'** के आगे जपने को कहा था। आज द्वितीय दिवस था . . . जप समाप्त होते-होते मुझे एक अत्याधिक तीव्र, मादक गंध अनुभव हुई . . . कुछ क्षण तो मैं सुध-बुध खोए बैठा रहा, पर शीघ्र ही अपने ऊपर नियन्त्रण प्राप्त कर बाकी जप पूर्ण किया। उस रात्रि को मुझे नींद नहीं आई, मैं तो उस गंध में ही मदमस्त हो, अपने-आपको भी भुलाए हुए लेटा हुआ था . . .

तीसरा दिन . . . शुरु में ही कक्ष का वातावरण एक रहस्यमय ढंग का हो गया था, ऐसा प्रतीत हो रहा था, कि यह मेरा कक्ष नहीं, अपितु कोई राजभवन अथवा इंद्र का कक्ष हो . . . एक दिव्य गंध मेरे नथुनों से होती हुई मेरे मस्तिष्क को संज्ञा शून्य कर रही थी और मैं बड़ी ही मुश्किल से आसन पर दृढ़ हो पा रहा था। तभी 'छम-छम' करती घुंघरुओं की ध्वनि

मेरे कर्णद्वारों पर चोट करने लगी . . . मैंने तुरन्त अपनी आंखें खोलीं, तो एक आश्चर्य मिश्रित चीख मेरे मुख से स्वतः ही निकल गई . . .

एक नारी बिम्ब मेरे सामने था, जो कि धीरे-धीरे प्रत्यक्ष हो रहा था . . . मेरी दशा विचित्र थी . . . मंत्र जप तो कभी का ही रुक गया था . . .और मैं बुतवत्, सम्मोहित सा उस तराशी हुई संगमरमर की सौन्दर्य मूर्ति को निहार रहा था . . .

जो स्त्री मेरे सामने उपस्थित थी वह अपने आपमें ही विलक्षणा थी। लम्बी, छरहरी, गौर वर्णीय देह, जिस पर लम्बे, काले रेशमी बाल यूं बिखरे हुए थे, मानो कमल के पुष्प पर भौंरों का समूह गुञ्जरण कर रहा हो . . . उसके चेहरे का सम्मोहन इतना तीव्र था, कि मैं चाह कर भी अपने नेत्र वहां से हटा नहीं पा रहा था। मृग के समान उसकी आखें इतनी गहरी थीं, कि वे मुझे स्पष्ट निमंत्रण दे रही थीं। एक कोमलांगी मृगी के समान ही उसके नासापुट फड़क रहे थे और अधखुले, गुलाबी ओठ किसी ऋषि की तपस्या के भंग होने के व्यंग्य में मुस्कराते हुए प्रतीत हो रहे थे . . . पीत और लाल वर्ण के वस्त्र उसके शरीर पर चार चांद लगा रहे थे एवं स्वर्णिम आभूषणों में वह और भी आकर्षक लग रही थी।

प्रेम ही जीवन का सौन्दर्य है, जीवन में सब कुछ समझा जा सकता है, पर प्रेम नहीं, क्योंकि यह तो उस उमंग उस मस्ती, उस दिव्यत्व की धरा पर स्थापित है, जहां व्यक्ति की क्षुद्रता समाप्त हो जाती है ,जब उसके समक्ष देवता उपस्थित हो, साकार होने लगते हैं और जीवन के इसी माधुर्य को प्रदान करने में सक्षम है 'चन्द्रज्योत्सना अप्सरा'।

उसका वक्षस्थल अत्यधिक उत्तेजक था, जिसमें यौवन का अपार समुद्र उमड़ रहा था . . . कमर इतनी लचीली, इतनी आकर्षक, मानों किसी ने विशेष रूप से उसे तराशा हो . . . और उस पर भंवर की भांति गहरी नाभि, अच्छे से अच्छे साधक को भी विचलित करने में सक्षम थी . . . उसकी मांसल जंघायें, नाजुक पांव बरबस ही ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे . . .

वास्तव में ही अब तक मैंने नारी सौन्दर्य का इतना अनूठा चित्रण कभी नहीं देखा था . . . अद्भुत . . . अलौकिक . . . अनिवर्चनीय . . . उत्तेजना की तरंगें स्पष्टतः मैंने अपने शरीर के रोम-रोम में अनुभव की, मैं बेसुध सा उसकी ओर देख रहा था, कि तभी मेरी माला जमीन पर गिरते-गिरते बची . . .

मैं तुरन्त प्रकृतिस्थ हुआ। भैरवानन्द की बात मुझे याद आई – 'तुम्हें किसी भी हालत में जप अधूरा नहीं छोड़ना है, उसे पूरा करके ही तुम अप्सरा के किसी भी प्रश्न का जवाब देना।' अतः मैंने अपने मस्तिष्क को नियन्त्रण में लिया, उस ओर से नजर हटाई और आखिरी माला जपने लगा। चन्द्रज्योत्सना ने न जाने कितने ही प्रयास किये मुझे बीच में ही उठाने के . . . पर मैं दृढ़ रहा। जब मेरा जप समाप्त हुआ, तो मैंने पहले से ही मंगाई हुई गुलाब के पुष्पों की माला उसे पहना दी . . .

'मैं तुमसे प्रसन्न हूं। तुमने मुझे सिद्ध किया है, अतः मैं तुम्हारा वरण करती हूं और वादा करती हूं, कि सदैव तुम्हारी सहयोगिनी रहूंगी, दिन में एक बार स्वतः शाम को उपस्थित होऊंगी और तुम्हारा हर प्रकार से ख्याल रखूंगी' . . . और ऐसा कहते-कहते उस दिव्य सुन्दरी ने वहां दूसरी रखी माला मुझे पहना दी . . .

मेरी आकांक्षा पूर्ण हो चुकी थी, मुझे एक विश्वसनीय साथी, एक सहगामिनी प्राप्त हो गई थी, जिसकी वजह से मुझे स्वतः ही मान, सम्मान, यश, श्री एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। परेशानियों में वह मुझे एक मंत्री की तरह सलाह मशविरा देती, मेरा आत्मबल बढ़ाती, मित्र की भांति सुख-दुःख में मेरा साथ देती, तो एक प्रेयसी के रूप में मुझे प्रेम प्रदान करती . . .

चन्द्रज्योत्सना ने ही मेरे विवाह के लिए उपयुक्त स्त्री खोजी, वह मेरी हर मुश्किल को आसान कर देती। अधिकारियों के आगे जो कुछ मैंने कहा, उन्होंने माना, क्योंकि साधना के उपरान्त मेरे अन्दर स्वतः ही एक अत्यन्त तीव्र सम्मोहन आ गया था और जो भी मेरी तरफ एक बार देख लेता, वह मेरे करीब आने को लालायित हो जाता . . .

इसी तरह दस साल बीते, मेरे दो पुत्र हुए . . . फिर बीस साल और तीस साल . . . परन्तु वृद्ध होने के बावजूद भी

मैं आज 30-35 साल के युवक से ज्यादा नहीं दिखता . . . लोग आश्चर्य करते हैं, परन्तु यह रहस्य मैंने आज तक किसी के सामने नहीं खोला, अपने पुत्रों एवं पत्नी के आगे भी नहीं।

हर शाम मैं बेसब्री से उसका इंतजार करता हूं एवं उसके सुखद आगोश में कुछ घंटे व्यतीत करता हूं, वह भी अपने वचनानुसार नित्य मेरे पास आती है। एक दिन भी मुझे ऐसा स्मरण नहीं, कि वह न आई हो . . .

और आज जब मैं आयु की उस अवस्था में, जब मेरी पत्नी देह त्याग चुकी है और मेरे पुत्र भी विदेशों में अपनी-अपनी गृहस्थियों में मग्न हैं, वह आज भी नित्य आती है।

यह साधना अप्सरा साधनाओं में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है; इसको सम्पन्न करने हेतु साधक को कुछ बातें विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए, जो कि निम्न हैं —

- यह साधना 26.10.97 को या किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है।
- यह तीन दिवसीय रात्रिकालीन साधना है, अतः साधक को रात्रि दस बजे से साधना प्रारम्भ करनी चाहिए। हर दिन साधना उसी समय शुरू करनी चाहिए।
- इस साधना में पीला आसन उपयोग में लाया जाना चाहिए, साधक स्वयं भी स्वच्छ एवं सुन्दर वस्त्र धारण करें, गुलाब का इत्र लगाए और उत्तर दिशा की ओर मुंह कर जप करें।
- इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'चन्द्रज्योत्सना चैतन्य यंत्र'** एवं **'चन्द्रज्योत्सना अप्सरा माला'** की आवश्यकता होती है, अतः साधक को इनकी व्यवस्था कर लेनी चाहिए।
- साधना काल में साधक को ब्रह्मचर्य का पालन पूर्णता से करना चाहिए।
- बाहर की चीजों को भोजन रूप में ग्रहण न करें।
- तीसरे दिन पहले से ही गुलाब की दो मालाएं मंगा कर साधना के दौरान पास में रख लेनी चाहिए।
- साधक अपने समक्ष बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछाएं तथा उस पर कुंकुम से रंगे चावलों से अष्टदल कमल बनाएं। कमल के मध्य में **'चन्द्रज्योत्सना चैतन्य यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र पर कुंकुम, अक्षत, इत्र तथा पुष्प चढ़ाएं।
- घी का दीपक लगाएं, दीपक में भी इत्र की कुछ बूंदें डाल दें। सुगंधित अगरबत्ती का उपयोग करें।
- **'चन्द्रज्योत्सना अप्सरा माला'** से पांच दिन तक ग्यारह माला निम्न मंत्र जप करें —

मंत्र

// ॐ ह्रीं चन्द्रज्योत्सना आगच्छ ह्रीं फट्//

OM HREEM CHANDRAJYOTSANAY
AAGACHCHH HREEM PHAT

- नित्य मंत्र जप समाप्त होने के बाद माला को यंत्र के ऊपर रखें।
- तीसरे दिन जब अप्सरा प्रत्यक्ष हो, तो उसे गुलाब के पुष्पों की एक माला पहना दें।
- साधना समाप्ति के अगले दिन यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर—350/-

त्वं ब्रह्म त्वं विष्णुस्त्वं कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्!

विजय शर्मा

उपरोक्त सूत्र श्रीमद्भागवत पुराण का है, इस ग्रंथ में अव्यक्त '**ब्रह्म**' एवं अन्तर्यामी '**परमात्मा**'- के प्रत्ययों से 'भगवान' को श्रेष्ठतम इसलिए माना गया है, क्योंकि अपने इस स्वरूप में भगवान विशेष शक्तियों से संयुक्त होते हैं, जिनसे समस्त प्राणी जगत की कल्याण-साधना होती है। हिन्दू धर्मशास्त्रों में श्री कृष्ण को ऐसे ही अवतारी पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

'**भागवत**' के प्रतिपाद्य विषयों में 'ईशानुकथा' के दो प्रभेद किए गए हैं — प्रथम, अवतार चरित्र तथा द्वितीय, भक्तों के चरित्र।

अवतार चरित्र के अन्तर्गत सृष्टि के अनेक अवतारों की चर्चा की गई है। इन्हीं अवतारों में श्री कृष्ण को 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' कहा गया है। अतः श्री कृष्णावतार की व्याख्या विविध रूप से की जाती है। प्रथम, अंशि दृष्टि से तथा द्वितीय, अंश-दृष्टि से। अंश चरित् को भी भागवत में दो तरह से प्रतिष्ठित किया गया है — प्रथम श्री कृष्ण का स्वात्मरमण रूप और द्वितीय मायारमण रूप। कृष्णावतार में भगवान विशेष प्रयोजन की सिद्धि करते हैं और इसी के लिए उनकी सम्पूर्ण लीला होती है। लीलाओं का प्रयोजन है - लोक रक्षण, जिसमें गो, सुर, साधु, धर्म आदि सभी आते हैं। प्रयोजन सिद्धि के लिए श्री कृष्ण की भावात्मक लीला से लोक रक्षण का कार्य होता है तथा अभावात्मक लीला से दुष्ट का दलन। इस तरह समस्त लीलाओं में श्री कृष्ण का भगवत स्वरूप प्रकट होता है।

अपने पुरुषोत्तम-स्वरूप से ही श्री कृष्ण समस्त उपाधियों को धारण करते हैं तथा भगवान कहलाते हैं। उपाधियों के कारण ही विकल्प होते हैं तथा उसके लय हो जाने पर उनका चिन्मय अद्वय तत्त्व भी अवशिष्ट रहता है — '**चिन्मायभवरोषितम्**'। '**भागवत**' में भगवान के सगुण विग्रह को मायामय कहा गया है, जिसके कारण कुछ आचार्य उसे परम साध्य नहीं मानते। दृश्य के रूप में अथवा उपाधियों से संयुक्त जो स्वरूप भासित होता है, वह कभी भी साध्य नहीं हो सकता, क्योंकि भगवान को सर्वत्र द्रष्टा और चिन्मय कहा गया है। दृश्य सदैव जड़ स्वरूप होता है, जबकि भगवान सर्वतोभावेन चिन्मय तथा सर्वक्षेत्रज्ञ हैं, वे अप्रमेय हैं, माया-निषेध हैं, अतः तत्त्वतः भगवान को दृश्य-रूप नहीं माना जा सकता, क्योंकि उनके अतिरिक्त कोई द्रष्टा है ही नहीं। एकमात्र द्रष्टा भगवान ही हैं तथा तात्विक दृष्टि से उनके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं, क्योंकि द्रष्टा-दृश्य का विवेक तभी सम्भव होता है, जब द्वैत हो। अद्वैत-तत्त्व में यह सब असत् माना जाता है। अद्वैतवाद के समर्थन में 'भागवत' की विवेचना करने वाले विद्वान यही मानते हैं, कि साधन की दृष्टि से ही भगवान को दृश्य और द्रष्टा रूप में उपस्थित किया जाता है। इस अद्वैतवादी विचारधारा के बावजूद वैष्णव आचार्य श्री कृष्ण के सगुण विग्रह रूप को परम सत्य मानते हैं, जो जगत् के आश्रय-तत्त्व हैं —'**विश्वोत्पति हेतवे**।' अतः यह माना जाता है, कि श्री कृष्ण चरित् में लोक-रक्षण के भाव, आविर्भाव योग्य माता-पिता, देवताओं की स्तुति तथा श्रौत दृष्टि से एवं तत्त्व-निरूपण आदि की दृष्टि से '**भागवत**' में श्री कृष्ण की भगवत्ता प्रतिष्ठित की गई है और इसीलिए भागवतकार ने

'**कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्**' कहा है।

'**भागवत**' में श्री कृष्ण को बहुशः '**साक्षात् जातः**' प्रतिपादित किया गया है। उन्हें '**अध्यात्म प्रदीप**' कहा गया है। वही प्रकृति से परे पुरुष हैं, वही साक्षात् ब्रह्म-पद हैं। यह ध्यान देने योग्य है, कि भागवतकार ने वेद, वराह, मत्स्य, व्यास, संकर्षण, रामादि भ्राता, कपिल आदि को भी '**साक्षात्वतीर्ण**' ही लिखा है।

ऐसे अवतरणों में भागवतकार का लक्ष्यार्थ वही प्रतीत होता है, कि मत्स्यादि के पाणिपादात्मक विग्रह साक्षात् परम तत्त्व नहीं हैं, क्योंकि इन सबको '**नट-नाट्य**' की तरह कहा गया है। इन विग्रहों से आच्छादित अथवा उनमें अन्तर्निहित जो '**विभु-शक्ति**' है, '**भागवत**' में वस्तुतः उसे ही परम तत्त्व अथवा भगवान माना गया है। किन्तु नंद नंदन श्री कृष्ण या वसुदेव सुत के पाणिपादात्मक विग्रह को ही साक्षात् ब्रह्म की संज्ञा दी गई है।

'**भागवत**' के अनेक अवतरणों में विरोधाभास अवश्य है, तथापि उन प्रसंगों में भी श्री कृष्ण के परब्रह्मत्व की निगूढ़ता की ओर स्पष्ट संकेत दिया गया है —'**गूढ़श्चरति वृष्णिषु**'। अतः यह तर्क देना निरर्थक है, कि जो साक्षात् होगा, वह निगूढ़ नहीं हो सकता। '**गीता**' में श्री कृष्ण स्पष्ट कहते हैं — मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं, इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता, वह मुझे ही प्राप्त होता है —'**जन्म-कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।**' 'भागवत' के भी विभिन्न अवतरणों में निराकार श्री कृष्ण में परब्रह्म को निगूढ़ कहा गया है। गोप कुमार में भी वही ब्रह्म पद प्रच्छन्न माना गया है, वही भगवान समस्त भूतों की आत्मा हैं। श्री कृष्ण की इस दिव्यता के कारण ही सामान्य मनुष्य उन्हें नहीं पहचान पाते।

इसे ही कहीं-कहीं भागवतकार ने '**माया-जवनिका**' भी कह दिया है, माया के आवरण में श्री कृष्ण की दिव्यता प्रच्छन्न हो जाती है।

भागवतकार ने अनेक प्रसंगों में यह भी प्रतिपादित किया है, कि निराकार के आवरण में जो ईश्वर-तत्त्व है, जो शक्ति है, उसी अन्तःस्वरूप को '**कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्**' — की अभिधा दी गई है। नंद नंदन के आवरण में परमेश्वर की समस्त शक्तियों का अवतरण माना गया है। अन्य अवतार-विग्रहों में भगवान की समस्त भगवत्ता की अभिव्यक्ति नहीं होती है। इसमें संदेह नहीं, कि अन्य अवतार विग्रहों में भी पूर्ण ईश्वर है, क्योंकि भागवतकार ने उनके प्रति भी '**साक्षात् हरि**' अथवा '**साक्षात् जनिष्यते**' जैसे पदों का प्रयोग किया है, तथापि परमेश्वर की शक्ति की पूर्ण अभिव्यक्ति अन्य अवतारों में नहीं हो सकी है। कृष्णावतार में ही समस्त ईश्वरीय शक्तियों की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है।

'**भागवत**' में श्री कृष्ण को समस्त विरोधी गतियों का आश्रय निरूपित किया गया है — '**यस्यिम विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतन्ति।**' वे कामी भी हैं और योगी भी, आत्म-विरुद्ध भी हैं और अत्यथितेन्द्रिय भी हैं, कायर भी हैं और वीर भी, कृष्ण भी हैं और अशेष सौन्दर्य के स्वामी भी, प्राकृत पुरुष भी हैं और साक्षात् ज्ञान भी हैं। श्री कृष्ण को '**भागवत**' में समस्त रसों का आश्रय भी माना गया है। मर्यादा और अमर्यादा दोनों उनका अनुसरण करती हैं, किन्तु वे स्वयं उनसे बद्ध नहीं हैं। आदि से अंत तक श्री कृष्ण का सम्पूर्ण चरित्र अतिमानवीय है, प्राकृत प्रतीत होते हुए भी अप्राकृत और दिव्य है। उन्हें लौकिकता और अलौकिकता का संगम भी कह सकते हैं।

'गीता' में श्री कृष्ण स्पष्ट कहते हैं — मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं, इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता, वह मुझे ही प्राप्त होता है — 'जन्म-कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।'

अतः भागवतकार ने श्री कृष्ण को साक्षात् भगवान ही प्रतिपादित किया है, क्योंकि विरुद्ध गुणों का आश्रय भगवान के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं हो सकता। वे भृत्य बनकर सेवा-भाव अपनाते हैं, ब्राह्मण सुदामा के पग प्रक्षालित करने वाले हैं और सर्व पूज्य भी हैं। वे माया की सीमाओं का अतिक्रमण कर गुरु के तथा देवकी के मृत पुत्रों को जीवित कर लाते हैं, वे माया से मोहित भी होते हैं और स्वयं मायावी भी हैं। वे विश्व को विस्मय में डालने वाले हैं एवं अपने नंद नंदत्व या वासुदेव सुतत्त्व द्वारा ईश्वरीय शक्ति को सम्पूर्णता के साथ अभिव्यक्ति भी देने वाले हैं।

'**भागवत**' में श्री कृष्ण के ईश्वरत्व की सम्पूर्णता के बावजूद '**अंशेनजातः**' जैसे प्रयोगों से अनेक विद्वान भ्रम

में पड़ जाते हैं और 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' सूत्र से उसकी संगति स्थापित नहीं कर सकते, जब कि 'भागवत' के अधिकांश टीकाकार यथा श्रीधराचार्य, विश्वनाथ चक्रवर्ती, वल्लभाचार्य, राघवाचार्य तथा जीव गोस्वामी आदि '**अंशेन**', '**कलया**' अथवा '**अंशभागेन**' जैसे पदों में भी कृष्णावतार की पूर्णता सिद्ध करते हैं। भागवत दर्शन में भगवान का लक्षण अद्वय ज्ञान तत्त्व के रूप में मान्य किया गया है, साथ ही श्री कृष्ण के पाणिपादात्मक विग्रह में ब्रह्म की पूर्ण अभिव्यक्ति मानी गई है, इस प्रकार परस्पर विरोधी अद्वय तत्त्व एवं अवतार में समन्वय स्थापित किया गया है। '**नृलोक विडम्बन**' प्रतीत होते हुए भी कृष्णावतार में भगवान को निखिल स्वरूप का अवतार माना जाता है।

भागवतकार ने '**कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्**' कहकर यह प्रतिपादित किया है, कि कृष्ण-चरित् में इतनी अलोक सामन्यता है, षड्ऐश्वर्यों की ऐसी पूर्ण अभिव्यक्ति है, जो अन्य अवतारों में दिखलाई नहीं देती। लोक साधनार्थ ही श्रीकृष्ण ने अपने ऐश्वर्यों का प्रदर्शन किया, अन्यथा भगवान की भगवत्ता सिद्ध कैसे होती? अतः भागवतकार का श्री कृष्ण को साक्षात् भगवान कहना पूर्ण समीचीन है। तत्त्वतः श्री कृष्ण '**अज**' और '**अक्रिय**' ही हैं, तथापि माया-शक्ति से अवतार ग्रहण करते हैं। इस दृष्टि से भी यदि भागवतकार ने लोक हितार्थ ही निराकार श्री कृष्ण को '**परब्रह्म**' कह दिया तो उचित ही है।

'भागवत' में श्री कृष्ण को समस्त विरोधी गतियों का आश्रय निरूपित किया गया है — 'यस्मिन् विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतन्ति।' वे कामी भी हैं और योगी भी, आत्म-विरुद्ध भी हैं और जितेन्द्रिय भी हैं, कायर भी हैं और वीर भी, कृष्ण भी हैं और अशेष सौन्दर्य के स्वामी भी, प्राकृत पुरुष भी हैं और साक्षात् ज्ञानी भी हैं।

'**भागवत**' के अधिकांश टीकाकारों ने श्री कृष्ण को नव-लक्षण लक्ष्य आश्रय तत्त्व ही माना है, जिसका वर्णन 'भागवत' के दशम स्कन्ध में किया गया है। परब्रह्म के आश्रय तत्त्व के '**आभास**' और '**निरोध**' लक्षणों का प्रकाशन दशम स्कन्ध के अतिरिक्त अन्यत्र भी है। जैसे सृष्टि का वर्णन '**भागवत**' के द्वितीय, तृतीय तथा एकादश स्कन्धों तथा '**लय**' का वर्णन द्वादश स्कन्ध में है। श्री कृष्ण को सर्गादि का अन्यत्र हेतु कह कर दशम स्कन्ध में परमेश्वर की वसुदेव सुत के रूप में सर्वश्रेष्ठ लौकिक-अलौकिक लीलाओं का वर्णन दिया गया है।

निश्चित रूप से वसुदेव सुत की ये लीलाएं भगवान को '**सर्वव्यापी**' तथा '**सर्व शक्तिमान्**' सिद्ध करती हैं। श्री कृष्ण की इन लीलाओं में '**आभास**' और '**निरोध**' दोनों होता है। इनसे सम्बन्धित प्रकरणों में भगवान के भिन्न-भिन्न ऐश्वर्यों का प्रदर्शन भी होता है। अतः श्री कृष्ण का नंद नंदत्व अथवा पाणिपादात्मक विग्रह माया का आच्छादन प्रतीत होते हुए भी ब्रह्मत्व की अभिव्यक्ति में सार्थक है, उस आच्छादन में भी परमेश्वर की पूर्ण शक्तियां इच्छा कही जा सकती हैं। वेदांत में जिसे पूर्ण ईश्वर कहा गया है, नराकार श्री कृष्ण में वही अवतीर्ण है और 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' सूत्र का अभिप्राय भी यही है। उसका यह अभिप्राय कदापि नहीं है, कि जो अद्वय ज्ञान तत्त्व है, वह नराकृति में माया से परिमित हो गया है।

'**भागवत**' में सगुण विग्रह का समाधि में निषेध अवश्य किया गया है, किन्तु इसका आशय नंद नंदत्व का खंडन नहीं है। यदि ऐसा होता, तो समाधि को प्राप्त और निर्गुण ब्रह्म-ज्ञान से सम्पन्न शुकदेव मुनि स्वयं निर्गुणवाद से पराङ्मुख होकर श्री कृष्ण की सगुण लीलाओं का गायन क्यों करते? अतः यह स्पष्ट होता है, कि भागवतकार ने श्री कृष्ण के रूप में परम अद्वय ब्रह्म की ही प्रतिष्ठा की है। ईश्वर के इस रूप को '**भगवान**' और '**परमात्मा**' भी सम्बोधित किया गया है। श्री कृष्ण के इसी भगवत रूप को वैष्णव आचार्यों ने परम साध्य कहा है।

'**भागवत**' के विभिन्न प्रकरणों में केवल, अद्वितीय, परिपूर्ण, अद्वय-ज्ञान, परमानंद आदि शब्दों से जिसे सम्बोधित किया गया है, वह वस्तुतः श्री कृष्ण का भगवतरूप है, जो सबके कूटस्थ साक्षी भी हैं और जगत्-रूप में जिनका वैभव बिखरा है।

'**भागवत**' में अनेक पात्रों द्वारा ब्रह्म-पद प्राप्त करने का उल्लेख है, जिसे कृष्ण-स्वरूप ही माना गया है। देहाभास के नाश के बाद गोपियां जिस कृष्ण को प्राप्त हुईं, उसके सम्बन्ध में भगवान स्वतः ब्रह्म-पद का ही प्रयोग करते हैं —

'**ब्रह्म मां परमम्**।' इसी प्रकार उद्धव, वसुदेव-देवकी, मुचुकुंद, ऐल, मागध-बंदी आदि भी जिस कृष्ण-पद को प्राप्त हुए, वह परा-गति निरंजन स्वरूप है, जो कैवल्य, आत्म-स्वरूप अथवा ब्रह्म-स्वरूप का पर्याय है। निष्काम भक्ति के फलस्वरूप प्राप्त श्री कृष्ण का स्वरूप सर्वलोक-महेश्वर कहा गया है, सर्वोत्पत्ति और सर्वनाश की शक्ति के कारण ही उसे ब्रह्म-पद से सम्बोधित किया गया है। भगवान स्वयं उद्धव से कहते हैं, भागवत-धर्म में आस्था रखने वाला मेरे आत्मस्थ परमानंद-स्वरूप को प्राप्त होता है। उद्धव से श्री कृष्ण अपने प्राप्तव्य स्वरूप का लक्षण सत्य, अमृत, परम आदि पदों से ही इंगित करते हैं।

'**भागवत**' के मंगल-श्लोकों में भगवान के इसी स्वरूप का प्रत्याख्यान किया गया है। अपने इसी स्वरूप का उपदेश भगवान ने ब्रह्मा जी को दिया है, जिस की महिमा के आगे माया स्वतः निरस्त हो जाती है। इसीलिए वैष्णव आचार्यों ने कृष्णावतार में गोकुलादि लीलाओं को भक्ति के रसिकों के लिए ब्रह्म-पद प्राप्ति का साधन माना है।

साधन, साध्य-भेद दृष्टि से ज्ञान का परम साध्य यदि सूक्ष्म कैवल्य है, तो भक्ति का भगवद्-विग्रह प्रत्यक्ष है। राजा परीक्षित जिस पद को प्राप्त होते हैं, वह ब्रह्म कैवल्य-स्वरूप है, जिसकी पृष्ठभूमि में श्री कृष्ण की लीलाओं के प्रति अनुराग-भाव है। भागवतकार ने '**अश्रुत**', '**अदृष्ट**' जैसे पदों से जिस सूक्ष्मता का प्रतिपादन किया है, वह भी भगवान के स्वरूप का अंग है। ज्ञान मार्गी जिसे प्राप्त होते हैं, वह भगवान का यही रूप है। अतः भागवत दर्शन में परम साध्य जो अद्वय ब्रह्म तत्त्व है, वह श्री कृष्ण के परमात्म या भगवत स्वरूप का अंश है।

भागवतकार का कथन है, जैसे एक ही गुड़-क्षीरादि पदार्थ पृथक-पृथक इंद्रियों के द्वारा भिन्न-भिन्न गुण वाला प्रतीत होता है — आंखों से शुक्ल, रसना से मधुर तथा स्पर्श से शीत; उसी प्रकार भगवान भी कभी राम, तो कभी कृष्ण रूप में, कभी शिव और कभी शक्ति रूप में प्रतीत होते हैं। समस्त भेद वस्तुतः साधकों की उपाधि के कारण हैं।

भगवान के सभी भक्त एक ही साध्य — श्री कृष्ण को प्राप्त होते हैं, वे चाहे जिस योनि में हों। '**भागवत**' का यह मूल सिद्धान्त है, कि यदि सभी की भगवान में समान आस्था होती है, तो सभी की एक ही समान गति होती है, क्योंकि भगवान में कोई भेद नहीं है।

साध्य की दृष्टि से भगवान का एक ही अद्वय रूप माना गया है। यही श्री कृष्ण का भी स्वरूप है। अतः आज योग से जो प्राप्त होता है, वही भक्ति का भी साध्य है। कपिल ऋषि दोनों का एक ही लक्ष्य प्रतिपादित करते हैं। योगी भी उसी को प्राप्त करते हैं। श्रीधराचार्य अपनी टीका में ज्ञान मार्ग के परतत्त्व तथा उपासना मार्ग का सविशेष परत्व रूप का परम साध्य में समन्वय करते हैं। भगवान का स्वरूप-लक्षण तो अद्वय ज्ञान तत्त्व है और सभी मार्गों का यही लक्ष्य है।

'**कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्**' सूत्र में भागवतकार के दार्शनिक दृष्टिकोण की यह मौलिकता कही जायेगी, कि वे ज्ञान और उपासना मार्ग के साध्य के बीच एकता स्थापित करने में सफल हुए हैं।

दोनों मार्गों की उपास्य कल्पना का आधार ब्रह्म-सत्ता है और भगवान श्री कृष्ण के पाणिपाद विग्रह में भी उसी सत्ता का समायोजन है।

अतः यह निष्कर्ष में दिया जा सकता है, कि जीवन के एकमेव साध्य रूप में जो ब्रह्म संकल्पित किया जाता है, उसकी पूर्णाभिव्यक्ति श्रीकृष्णावतार में मानी जाती है।

अतः **श्री कृष्ण साक्षात् भगवान** हैं।